

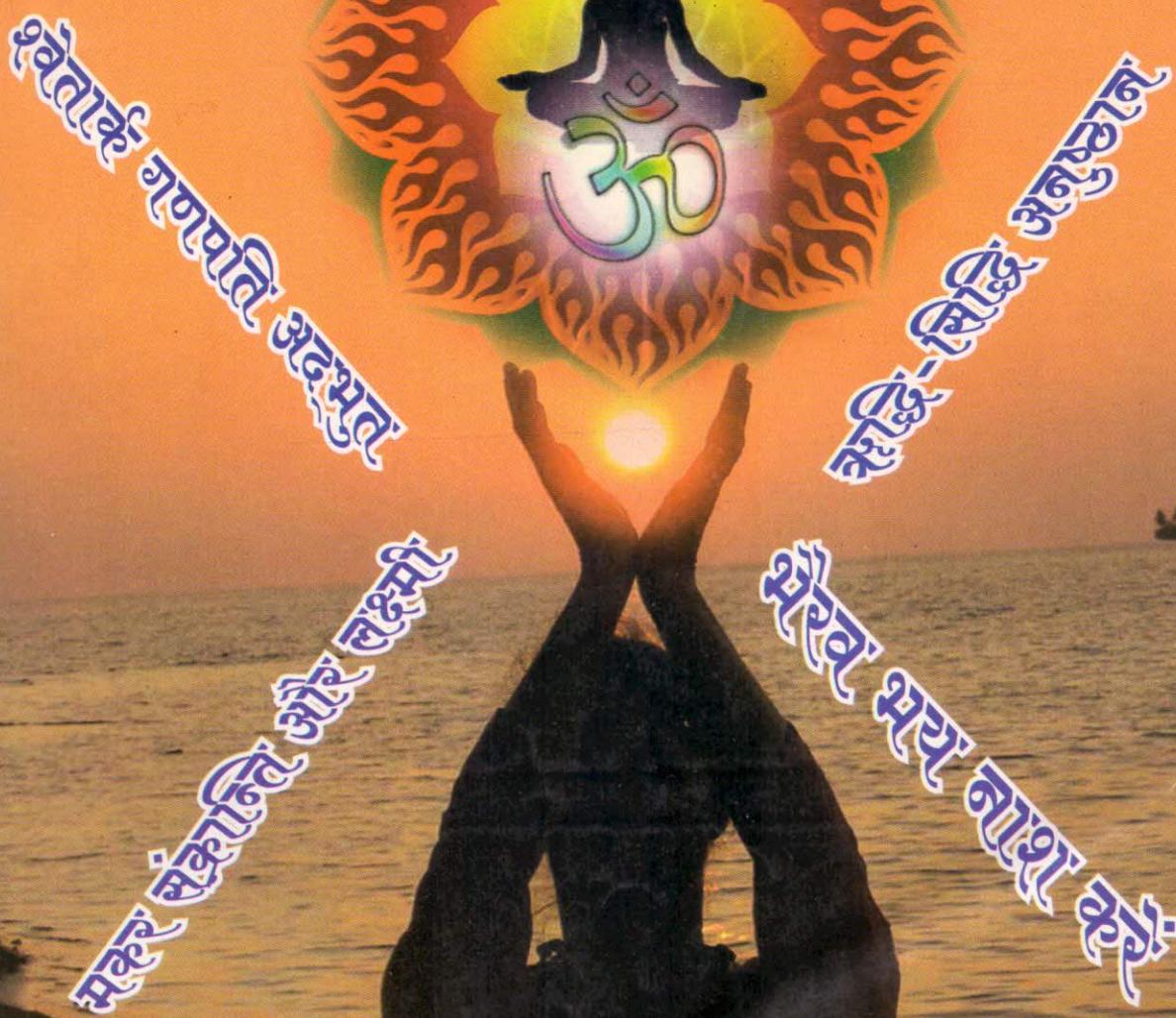
सूर्य विज्ञान साधना विशेषांक

दिसम्बर 2008

मूल्य : 24/-

# सूर्य-तंत्र-संस्कार

विज्ञान



नववर्ष प्रारम्भ - अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा से



## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

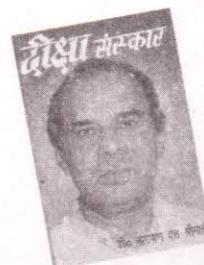
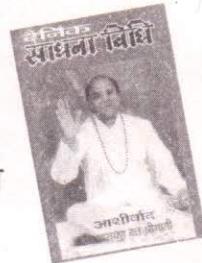
## ज्ञान और वैतना की अनमोल कृतियां

**पूज्य गुरुदेव 'डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी'**

द्वारा रचित ज्ञान की गरिमा से युक्त  
सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली  
अनमोल कृतियां



मूलाधार के भहक्षाक तथा	150/-
फिर दूँख आर्ही पायल खबनाई	150/-
गुक गीता	150/-
ज्योतिष और आल निर्णय	150/-
हक्षतकेब्बा विज्ञान और पंचागुली ज्ञान	120/-
निविलेश्वरवानन्द क्षतवन	120/-
विश्व एकी श्रेष्ठ दीक्षाएं	96/-
द्यान धाकणा और अमाधि	96/-
निविलेश्वरवानन्द भहक्षनाम	96/-
विश्व एकी औकिण क्षाधनाएं	96/-
श्री निविलेश्वर क शताम्	75/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
अमृत षुँद	60/-
निविलेश्वरवानन्द चिन्तन	40/-
निविलेश्वरवानन्द वहक्य	40/-
भिन्नाश्रम आ योगी	40/-
प्रत्यक्ष हनुमान भिन्नि	40/-
मातंगी ज्ञान	40/-
श्रेक्ष ज्ञान	40/-
ख्यार्थि ज्ञान भूत्र	40/-



→ → → → → → → → → → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ← ←

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः  
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और मारतीय गृह विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

# श्री लिखार्थ प्रकाश

॥ श्री बस्त्र लिखार्थ नासायणाय गुरुभ्यो वद्वाः ॥



## साधना

जीवन आनन्द -	
त्वष्ट्रा साधना	23
भैरव साधना	32
भैरव साधना के तीन विशिष्ट प्रयोग	34
श्वेतार्क गणपति साधना	38
ऋद्धि-सिद्धि	
अनुष्ठान साधना	41
मकर संक्रान्ति	
सूर्य साधना	46
मकर संक्रान्ति - लक्ष्मी साधना	52
मकर संक्रान्ति - विष्णु लक्ष्मी साधना	55
सरस्वती साधना	69
बालकों हेतु - सरस्वती साधना	71
रूपोज्जनवला अप्सरा	
साधना	72
Nav Varsh Sadhana	79
Soundarya Sadhana	80
Dhanvarshini Lakshmi Sadhana	81
वर्ष 28 अंक 12 दिसम्बर 2008 पृष्ठ 88	

## सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

5

## स्तम्भ

शिष्य धर्म

43

गुरुवाणी

44

वराहमिहिर

57

नक्षत्रों की वाणी

58

मैं समय हूँ

60

इस मास जोधपुर में

83

एक दृष्टि में

85

## विशेष

जीवन का सर्वोच्च-योग

दीक्षा-योग

26

जीवन प्रारम्भ - दीक्षा

28

जन-जन पूजनीय भैरव

30

मकर संक्रान्ति

50

ज्ञान शक्ति - सरस्वती

67

## स्तोत्र

नायिका स्तोत्र

76



## दीक्षा

शक्तिपात युक्त

अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा

61

:: सम्पर्क ::

प्रकाशक एवं स्वामित्व

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

द्वारा

सुदर्शन प्रिन्टर्स

487/505, पीरागढ़ी,

रोहतक रोड, नई दिल्ली-८८

से मुद्रित तथा

सिद्धाश्रम 306 कोहाट एन्कलेब,  
पीतमपुरा, नई दिल्ली से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 24/-

वार्षिक: 258/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्म, हार्डक्रोट कॉलोनी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtyv@siddhashram.org](mailto:mtyv@siddhashram.org)

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क—कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गत्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धुमककड़ साधु—संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद—विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद—विवाद में जोधपुर—न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर किर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद—विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधन में सफलता—असफलता, हानि—लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## ☆ प्रार्थना ☆

उ॒३ शतं जीव शरदो वर्द्धमानः, शतं हेमन्तान्तर्तमु वसन्तान्।  
शतं भिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः, शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।  
ऋग्वेद १०.१६१-४

हे प्रभु! हम सौ वर्षों तक जीवित रहे, हमारी संतान बलिष्ठ होकर शतायु हो, हम अपने परिवार बन्धु-बाधव सहित दीर्घ आयु प्राप्त करें, हम शतायु होकर ईश्वर की आराधना में दत्तचित्त हों, तथा राष्ट्र निर्माण में पूर्ण सहयोग दें।

## ☆ आसिरी सत्य ☆

एक बार सुकरात अपने शिष्यों को ज्ञान दे रहे थे और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी कर रहे थे। जब वे अपनी बात समाप्त कर चुके थे, तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा—यदि किसी के मन में अब भी कोई संशय या प्रश्न शेष हो, तो वह पूछ सकता है।

यह सुन कर एक शिष्य ने, जो उनके पास काफी समय से रह रहा था और अपने-आपको काफी ज्ञानवान समझने लगा था, उसने कहा—गुरुजी! आप मुझे बताइये, चांद में धब्बा क्यों हैं? मैं यह भी जानना चाहता हूं, कि दीपक के नीचे अंधेरा क्यों होता है?

जब सुकरात ने इन प्रश्नों को सुना, तो वे अत्यन्त व्यथित हो गए और दुःखी मन से कहा—तुम्हें मेरे पास रहते इतना समय हो गया, लेकिन अभी भी तुम ज्ञान की पहली सीढ़ी पर अटके हुए हो।

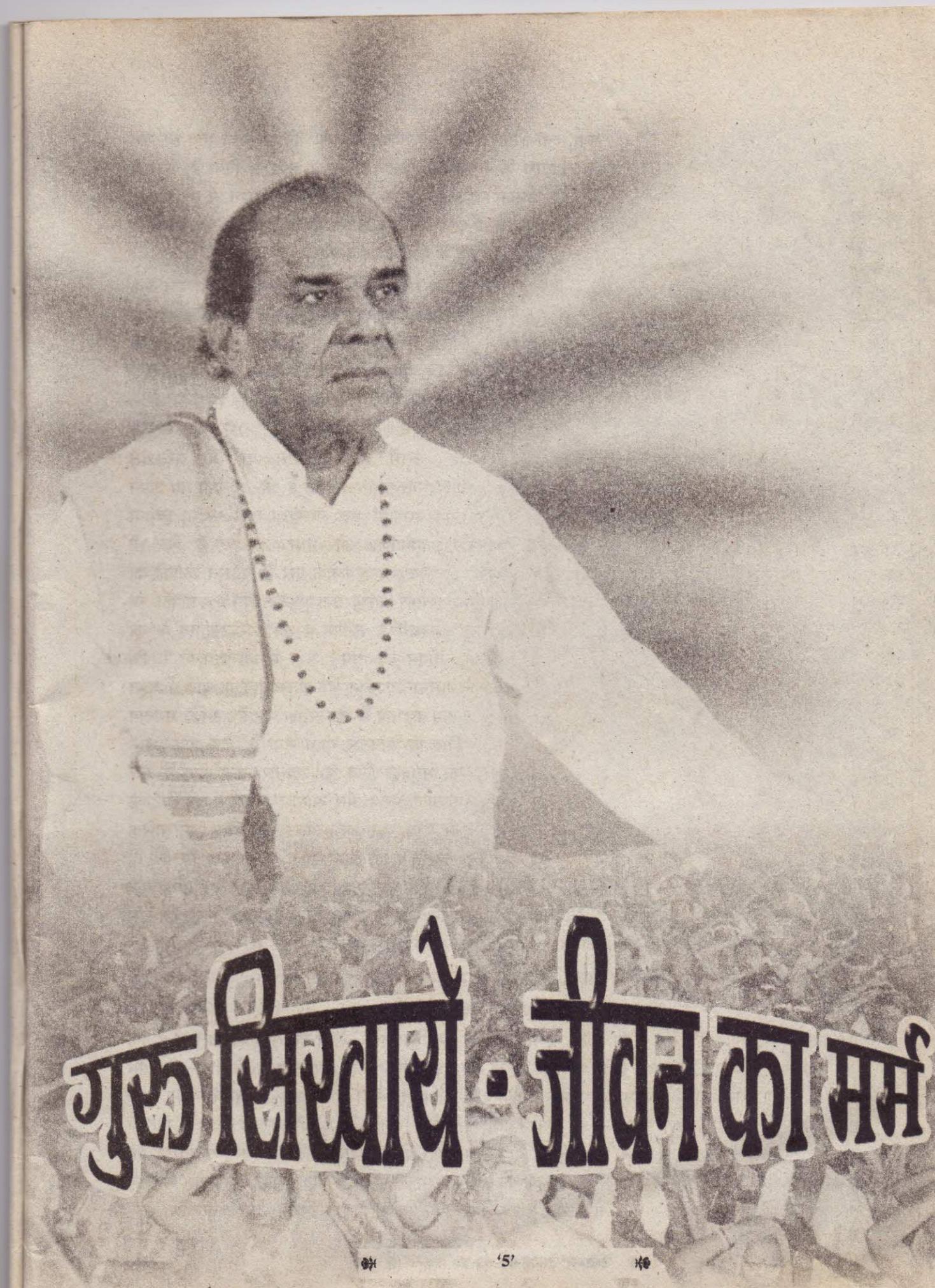
यह सुन कर वह शिष्य अत्यन्त दुःखी हुआ, उसे ऐसी किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं थी। वह अपने आपको काफी ज्ञानवान मानता था, अतः इससे उसके अहं को भी ठेस पहुंची।

उसने सुकरात से कहा—मैं इतने समय से आपसे ज्ञान अर्जित कर रहा हूं, फिर भी आपने यह क्यों कहा, कि मैं अभी ज्ञान की पहली सीढ़ी पर अटका हुआ हूं। आपके इन शब्दों से मुझे अत्यन्त दुःख पहुंचा है।

सुकरात ने जवाब दिया—मुझे भी तुम्हारे सवाल से बहुत दुःख पहुंचा है। काश! कि तुमने पूछा होता, कि चांद में चांदनी क्यों है? दीपक में इनती रोशनी क्यों हैं?

— किर मैं तुम्हें जीवन के अनन्त रहस्यों में से कुछ मोती चुन कर देता, किर मैं तुम्हें बताता, कि जीवन क्या होता है? जीवन का अर्थ क्या है?

— क्योंकि जब तुम किसी की बुराइयों पर ध्यान देते हो, बुराइयों पर चिन्तन करते हो, तो जाने-अनजाने में ही उन बुराइयों के कुछ अंश अपने अन्दर उतार लेते हो और फलस्वरूप तुम्हारे अन्दर बुराइया बढ़ती जाती है... और जब तुम किसी की अच्छाइयों पर ध्यान देते हो, अच्छाइयों का चिन्तन करते हो, तो फिर तुम्हारे अन्दर भी अच्छाइयों में वृद्धि होती है।



# गुरु लिलाच - जीवन का सर्व



सेवा, त्याग और जीवन को उचित रूप से जीने का क्या भाव है? गुरु गोरखनाथ के शब्दों को गुरुदेव ने सहज भाव से दिया है, जिससे समझा जा सके कि समाज में रहकर; समाज से परे होकर, कैसे अद्वितीय बन सकते हैं। सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में एक महान् कथन -

एक महान् युग दृष्टा गोरखनाथ का यह एक संस्कृत श्लोक है। गोरखनाथ संस्कृत बहुत कम पढ़े लिखे थे फिर भी उन्होंने अपनी गोरखवाणी में संस्कृत के बहुत सुंदर श्लोक उच्छृत किए हैं। उन्होंने अधिकतर प्राकृत भाषा में अपने विचार व्यक्त किए हैं। जितने साबर मंत्र हैं उनमें 80 प्रतिशत या 90 प्रतिशत गोरखनाथ-निर्मित हैं और वे सभी मंत्र अपने आप में उन शास्त्रीय मंत्रों से भी ज्यादा प्रामाणिक और प्रभावशाली रहे हैं, फिर भी उनके कुछ श्लोक ऐसे हैं कि उन श्लोकों का चयन करके एक पुस्तक की रचना की जा सकती है क्योंकि वे श्लोक गोरखनाथ के पूरे जीवन को अपने आप में व्यक्त करते हैं कि गोरखनाथ कौन थे? गोरखनाथ के बारे में बहुत कम पढ़ पाए हैं और समझ पाए हैं। उनको भगवान शिव का अवतार माना गया है, जैसे शंकराचार्य को भगवान शिव का अवतार माना गया है और अवतारी पुरुष और सामान्य पुरुष में बाहरी दृष्टि से कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं होता। सांसारिक व्यक्ति के भी आंख, नाक, कान, हाथ, पैर वैसे ही होते हैं, जैसे अवतारी पुरुष के होते हैं। अवतारी

पुरुष भी रोते हैं, हँसते हैं, उदास होते हैं, चिंतित होते हैं, परेशान होते हैं, दुःख भोगते हैं, सुख भोगते हैं। राम भी वनवास के समय जब रावण-सीता को ले गए तो वे पत्तों से, पौधों से, पेड़ों से पूछते थे -

हे खर्ज, हे मृग, हे मधुकर बैनी!  
कहां गई सीता मृग नवनी?

‘हे पक्षी! तुम बताओ कि मेरी सीता, कहां चली गई है? हे मृग! तुम बहुत दौड़ते हो, तुम्हें शायद पता हो कि सीता को कौन ले गया? हे मधुकर बैनी!, हे भवरे शायद तुम मुझे उसका अता पता बता सकते हो... और राम उतने ही व्यथित होते हैं जितने सामान्य सांसारिक व्यक्ति होते हैं। ऐसा नहीं है कि अतवारी पुरुष हमेशा बहुत खुश, बहुत प्रसन्न और बहुत आनंदित ही होते हैं, या सांसारिक व्यक्ति ही दुःखी होते हैं। इस श्लोक में गोरखनाथ ने बहुत सुंदर, एक रास्ता हमें बताया है, मनुष्य जाति को एक रास्ता दिया कि मनुष्य का प्रारम्भ पांचवें साल से हो जाता है, उससे पहले वह ब्लालक कहलाता है, पांचवें साल के बाद उसका यज्ञोपवीत संस्कार हो जाता है, वह द्विज कहलाने लग जाता है और उसके बाद उसमें एक समय एक चिंतन, एक विचारधारा आने

लग जाती है, फिर उसकी जैसी समझ होती है, जैसी संगति होती है, जैसा मां-बाप का प्रभाव होता है। वह उसका निर्माण-समय होता है। उस निर्माण में वह राक्षस या दुष्ट भी बन जाता है और भला भी बन जाता है, जो कुछ भी बनना होता है वह उस अवस्था में बन जाता है क्योंकि उसके कोमल चित्त पर उस समय कुछ लिखा हुआ नहीं होता, स्लेट पूरी कोरी होती है।

घर का वातावरण अगर खराब है और पिता दुष्ट स्वभाव के हैं तो उसके चित्त पर भी दुष्टता अंकित हो जाती है। यदि पिता लालची और स्वार्थी है तो वह भी वैसा ही बन जाता है क्योंकि वह रात-दिन देखता है, पिता लूट कर, बेर्इमानी करके धन इकड़ा कर रहे हैं या विषय-भोगी हैं या अव्याश हैं या त्यागी हैं। वह घर का वातावरण उसके चित्त पर हमेशा के लिए अंकित हो जाता है।

...और उसके जो साथी या मित्र जिस वातावरण से आते हैं उसी वातावरण में वह सात साल व्यतीत करता है और वैसा ही उसके जीवन पर प्रभाव पड़ जाता है वह चाहे पुरुष हो या स्त्री हो, उन संस्कारों से पिंड छुड़ाना अपने आप में बहुत कठिन होता है क्योंकि वह खून में पूरी तरह मिक्स हो जाता है, उसके विचारों में वह वातावरण मिक्स हो जाता है, उसका निर्माण उसी तरीके से होने लग जाता है। इसलिए गोरखनाथ कहते हैं कि वह अपने आप में मनुष्य-जीवन नहीं होता वह निर्माण-अवस्था होती है, जो उसके हाथ में नहीं होती, उसको कुछ ज्ञान नहीं होता।

आज आपको जात है कि मुझे सड़क के बांई ओर चलना चाहिए। उस समय उसका ज्ञान नहीं होता। वह सड़क के बीच में भी चला जाता है। गोरखनाथ ने इस श्लोक में बताया है कि जब मनुष्य का जन्म होता है तो वह दो किनारों के बीच खड़ा होता है। एक ओर विषय वासनाएं होती हैं, एक ओर त्याग होता है। वैराग्य नहीं कह रहा मैं, संन्यास भी नहीं कह रहा हूं। उन्होंने त्याग शब्द का प्रयोग किया है। विषय वासनाओं का अर्थ गृहस्थ नहीं है, गृहस्थ तो एक कर्तव्य है जो जीवन निर्माण करता है, जीवन नष्ट नहीं करता। भोग का अर्थ है मन में यह चिंतन आना कि बहुत अच्छा मकान हो, कार हो, ए.सी. लगा हो, बहुत अच्छे कपड़े हों, मैं धन एकत्र करूं। यह; बस भोग है। इसका गृहस्थ से कोई सम्बन्ध नहीं, और त्याग का वैराग्य से कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिए गोरख ने कहा कि वैराग्य और गृहस्थ, इन दोनों के बीच में मनुष्य नहीं है, मनुष्य है त्याग और विषय भोग के बीच में। वह बारह साल की उम्र से जीवन की अंतिम सांस-



तक, उनके बीच में झूलता रहता है। बहुत कम ऐसे लोग होते हैं जो उन विषय वासनाओं से अपने आप को परे हटा लेते हैं। उस निर्माण- अवस्था के समाप्त होते-होते व्यक्ति के मन में एक भावना, एक चिंतन, एक विचार उदय होने लग जाता है कि मैं क्या करूँ? उसके सामने मुंह बाए विषय-वासना खड़ी होती है। उसके सामने एक पत्नी का चेहरा होता है, एक परिवार का चेहरा होता है, समाज का चेहरा होता है, उसकी इच्छाएं होती हैं और वे सारी की सारी इच्छाएं विषय वासनाओं की ओर ही होती हैं, त्याग की ओर नहीं होतीं।

...और गोरखनाथ के जीवन की सबसे बड़ी घटना, सबसे अच्छी घटना यह थी, जब वे छः साल के थे तो उन्होंने मां को कहा कि मैं विषय-वासनाओं की ओर नहीं जाना चाहता, मैं त्याग करना चाहता हूँ। सब कुछ अपना सुख, अपना दुःख, अपना चिंतन, अपना विचार, अपने बंधु-बांधव का निर्माण हो सकता है। आप जिसे सन्न्यास कहते हैं मैं उसे त्याग कहता हूँ, वही जीवन-निर्माण है।



जीवन का आनन्द उन्मुक्तता और सर्वोच्चता में है, बीच में रहने में नहीं है। मैं आपको कहता हूँ कि आप बनें तो सर्वश्रेष्ठ डाकू बनें, ऐसे बनें कि दुनिया कांपे। ईमानदार बनें तो एक अद्वितीय बनें, योगी बनें तो महायोगी बनें, और त्यागी बनें तो श्रेष्ठतम् बनें। जो कुछ बनें वह आप अद्वितीय बनें। बीच में तो करोड़ों लोग जूझ रहे हैं और संसार के 99.9 प्रतिशत लोग बीच में ही जूझते रहते हैं।

...और गुरु के इतना कहने के बाद भी जो उसके चित्त पर प्रभाव पड़ा हुआ हो, वह प्रभाव मिटता नहीं है, बड़ी मुश्किल से गुरु उसको मिल पाता है या उसे मन की संकल्प-शक्ति मिटा सकती है। मेरी टेबल पर पैसे पढ़े हों और कोई देख रहा हो और कोई उन्हें उठाने का प्रयास करे तो मां-बाप के खून में कोई ऐसी वृत्ति मिली होगी। मैं मां-बाप को दोष नहीं दे रहा हूँ, वह खून भी कहीं से आया होगा और वह पैसे जेब में डाल लेगा, चोरी कर लेगा। इन चोरी के सौ रुपयों या हजार रुपयों से जिंदगी नहीं कट्टी पर वह धीरे-धीरे हेबिचुअल हो जाता है वह सोचता है, मैंने चोरी की, किसी को पता नहीं लगा। चलो, आज दो सौ रुपये चुरा लेते हैं, पांच सौ चुरा लेते हैं, किसी को क्या पता लगेगा और धीरे-धीरे वह उस जंगल में फंस जाता है उस वृत्ति की ओर अग्रसर हो जाता है जिसे मानवी नहीं कहते हैं, राक्षसी कहते हैं, जिसको अमानव कहते हैं और व्यक्ति ऐसे बन जाते हैं क्योंकि इनके चारों ओर का परिवेश ऐसा होता है।

उनसे परे हटना गोरख कहते हैं, बड़ा कठिन है। जब वे छः साल के थे तो उन्होंने अपनी मां को कहा कि मैं त्यागमय जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ, मुझे विषय वासनाओं में कोई रुचि नहीं है क्योंकि भोगे रोग भयं। भोग से केवल रोग पैदा हो सकता है बाकी कुछ नहीं हो सकता। रोग का अर्थ है संसार का रोग, घर का रोग, आसपास का रोग, कुल का रोग और शरीर के रोग। मैं जीवन को इस पूर्णता तक पहुंचा देना चाहता हूँ, जहां शरीर रोग-रहित हो सके, लोग एहसास कर सके कि मैं कुछ हूँ। जब रैदास चमार, जूते गांठने वाला व्यक्ति एक अद्वितीय बन सकता है तो आप क्यों नहीं?, ...और जब सिद्धार्थ बुद्ध जैसा महान् बन सकता

हे तो आप क्यों नहीं बन सकते? एक चमार और एक राजा का बेटा, दोनों दो छोरों पर खड़े महान बन सकते हैं तो कोई भी व्यक्ति महान बन सकता है, और महान का अर्थ है सर्वोच्चता प्राप्त करने के रास्ते पर गुरु के शब्दों पर चल कर ही बढ़ा जा सकता है, नीचे गुरु के शब्द बिछे होते हैं उन पर ही चलकर के वहां तक पहुंचा जा सकता है। गोरखनाथ की मां ने मना कर दिया कि तुम ऐसा नहीं कर सकते, तुम त्यागमय जीवन नहीं व्यतीत कर सकते, घर-बार छोड़कर नहीं जा सकते। उन्होंने बहुत हठ की, नदी के किनारे खड़े-खड़े, माँ मना करती रही। स्वाभाविक है कि माँ मना करेगी, पत्नी मना करेगी, बेटे मना करेंगे। आदमी अपने आप में इकाई है, समाज ने उसे बांध रखा है। मनुष्य, समाज नहीं है, मनुष्य तो अपने आप में अकेला है क्योंकि वह अकेला पैदा हुआ और अकेला ही मृत्यु को प्राप्त होता है इसलिए मनुष्य समाज है ही नहीं। समाज ने उसे घेर रखा है इसलिए वह समाज का हिस्सा बन गया। सब कहते हैं मैं तेरा चाचा हूं, मैं तेरा बाप हूं, मैं तेरी मां हूं, मैं तेरी बहन हूं, पड़ोसी हूं। यह सब मिलकर समाज बन गया। वह व्यक्ति समाज नहीं है। वह अपने आप में एक इकाई है। ...तो जब माँ ने बहुत मना किया और कहा तुम चलो घर, मैं तुम्हारी शादी कर देती हूं, और मेरी यही इच्छा है तो गोरखनाथ ने कहा, शादी करना बहुत बड़ी बात नहीं है, शादी तुमने भी की है और शादी तो सैकड़ों, हजारों लोग करते हैं। मैं सैकड़ों हजारों, करोड़ों लोगों में से नहीं होना चाहता। मैं अपने आप में अलग बनना चाहता हूं और उन वासनाओं को दमित करके उन वासनाओं को परे हटा करें अपने आप में खुद, सद्गुरु, जगद्गुरु बनना चाहता हूं। इसलिए मैंने गोरखनाथ को युग-सृष्टा शब्द से सम्बोधित किया है। जब माँ नहीं मानी तो वहां एक कैंची थीं और उसने कहा कि इस कैंची से अपने लिंग को काटकर के तुम्हरे सामने फेंक देता हूं। उसने कहा, फिर मेरी शादी कर दो। इतनी सी चीज के लिए शादी पर जोर दे रही हो? जब वह चीज ही नहीं रहेगी तब शादी मेरी कहां से करोगी? तो माँ ने कहा, तुम जाओ और त्यागमय जीवन व्यतीत करो।

वह उसका पहला त्याग था और आज वह पंथ भारत वर्ष में सबसे बड़ा पंथ है, बौद्धपंथ से भी बड़ा, जैनपंथ से भी बड़ा हिन्दू पंथ से भी बड़ा। एक व्यक्ति ने बहुत बड़ी घटना घटित करके दिखा दी, बता दिया कि त्याग क्या होता है? इस चीज के लिए तुम मुझे बांधना चाहती हो तो वह चीज मैं समाप्त कर देता हूं और नवीन मंत्रों की रचना की, नवीन चिंतन दिया, नवीन विधारधारा दी।

...और इस श्लोक में उन्होंने बताया कि त्याग कहां से आरंभ कर सकते हैं? परंतु हम त्याग कुछ कर नहीं पाते हैं। हमारे जीवन में त्याग जैसी कोई चीज है ही नहीं। हमारे जीवन में केवल वासना और विषय है। हम बाहरी वातावरण से दो मिनट में ही जुड़ जाते हैं, उससे कट नहीं पाते, ज्योंही बाहर निकलते हैं और वापस आते हैं तो उससे जुड़े हुए ही आते हैं, और हमारे ऊपर इतना विषय वासना

का मैल चढ़ जाता है कि दूसरे दिन गुरु धोए तो धुले, अन्यथा नहीं धुले, और 24 घण्टे गुरु आपके पास नहीं रह सकता।

यदि आपके हृदय में गुरु नहीं है तो गुरु आपके शरीर के पास नहीं रह सकता, यह संभव है भी नहीं। उनको शरीर से जोड़ कर रखने की जरूरत है भी नहीं। उसको अपने हृदय में, धारण करने की जरूरत है। ऐसी स्थिति में गोरखनाथ ने अपने श्लोक में कहा है कि व्यक्ति अकेला पैदा होता है। ...या तो सब पैदा होते उसके साथ, चाचा, दादा, मामा, तो वह सोचता सब मेरे साथ हैं या सब मरते उसके साथ, तब भी समझ सकता है कि समाज उसके साथ है, पत्नी मर रही है साथ में वह चिता पर लेटी है, बेटी लेटी हुई है, लेकिन ऐसा है नहीं। वह अकेला आया था, ...और कैसा अकेला...? जिसके शरीर पर एक छोटा सा कपड़े का टुकड़ा भी नहीं, और मृत्यु पर भी चिता पर जब लेटता है तो बिल्कुल अकेला, तब भी उसके शरीर पर कपड़े का एक टुकड़ा भी नहीं होता ...तो हम सब बीच में इस जाल में क्यों उलझे हुए हैं? गोरख कहता है इसलिए कि हम अपने आप में बहुत बुद्धिमान मूर्ख हैं। हम अपने आपको बुद्धिमान समझ रहे हैं और वास्तव में पूर्ण मूर्ख हैं।

बुद्धिमान इसलिए समझ रहे हैं कि हमने जीवन में क्या कुछ कर लिया, ...पांच बेटे पैदा कर लिए, हमारे पास धन है,

मकान है, धन-दौलत है, और व्यक्ति इस अवस्था में बहुत

प्रसन्न रहता है। गोरखनाथ कहते हैं कि इस सबसे

पिंड छुड़ाना ही जीवन का त्याग है और धीरे-

धीरे इससे पिंड छूट सकता है। आप धीरे-

धीरे मन को शुद्ध करते रहें। परन्तु

मन शुद्ध होगा, यदि आपके अंदर

गुरु होगा। मैंने बताया कि गुरु

के शब्दों पर पांच रखकर,

जाकर ही त्यागमय बन सकते

हैं। गुरु तुम्हें हर मिनट

रास्ता नहीं दिखा सकता,

तुम यहां से थोड़ा दो

मिनट दूर जाओगे, गुरु

तुम्हारे पास सशरीर

थोड़े ही खड़ा होगा! वह

जो अंदर गुरु है, वह

कहेगा कि यह गलत है।

ये जो लोग बाहर हैं, न

जाने कैसे लोग हैं? इनसे

बचना आवश्यक है, शरीर

को शुद्ध रखना ज्यादा जरूरी

है। बाहर कुछ खाने से अच्छा

है कि पानी पीकर गुजारा कर लें,

घर जाकर अच्छा भोजन कर लेंगे।

मीट खाने से या सिंगरेट फूंकने से जीवन

नहीं बन सकता।



उस समय, जो गुरु की शक्ति अंदर से आती है, वे आपको  
आज्ञा, प्रेरणा और चिंतन दे सकते हैं और वही बोल सकते  
हैं कि आप कितने ईमानदार बन सकते हैं, कितने कर्मनिष्ठ  
बन सकते हैं, कितने कर्तव्यनिष्ठ बन सकते हैं, कितने  
त्यागमय बन सकते हैं क्योंकि ईमानदारी और  
कर्मनिष्ठता, यानी निरंतर काम में डूबे रहना...  
और काम भी दो तरह के हैं त्यागमय काम  
और विषयमय काम। दोनों में से कोई एक  
काम कर पाएंगे। दोनों एक साथ नहीं चल  
सकते। दूध और खटाई दोनों एक साथ नहीं  
चल सकते।

या तो आप दूध बनें, या नींबू का रस बन  
जाएं। जो भी आप चाहें वह बन जाएं।

मेरे पढ़ोस में कोई मर जाए तो पता ही  
नहीं लगता कि हरि लाल जी मर गए। न आपको  
मालूम पड़ता न मुझे मालूम पड़ता।  
म्युनिसिपैलिटी की वैन आती है, उसमें डाल कर  
ले जाते हैं और जला देते हैं। क्या यह जीवन दूसरी  
बार मिल सकता है? और कैसा मिलेगा? कहीं झुग्गी  
झोपड़ी में मिलेगा, गरीबी में मिलेगा, कुछ पता ही नहीं  
है। फिर जो जीवन हमारे पास है, अगर उसका प्रयोग हम  
नहीं कर पाएं, जो हीरा रत्न हमारे पास है उसका प्रयोग नहीं

कर पाए तो फिर जीवन का अर्थ क्या रह जाएगा? हमारे हाथ में फिर क्या है? ...तुम्हारे हाथ में एक गुरु है,  
ईमानदारी है, तुम्हारे हाथ में सत्यनिष्ठता है, कर्तव्य निष्ठा है, कर्म निष्ठा है और तुम्हारे हाथ में त्याग है। ये  
पांच चीजें तुम्हारे पास हैं, अगर तुम उनका प्रयोग कर सको तो, और चाहे तो उनका दुरुपयोग भी कर सकते  
हो, दोनों कर सकते हो। त्याग का दुरुपयोग भी कर सकते हो, त्याग का सदुपयोग भी तुम कर सकते हो।  
भोगी तुम बन सकते हो और त्यागी भी तुम बन सकते हो। तुम ईमानदारी का केवल मुखौटा भी पहन सकते हो  
और अंदर बेर्इमान बने रह सकते हो। ऊपर से राम-राम बोल सकते हो और अन्दर से डाकू बने रह सकते हो।  
यह तो 5 साल से लेकर 12 साल की अवस्था में जो तुम्हारे चित्त पर अंकित हो गया, उसको मिटाना बहुत  
कठिन है। जो जितना उसको मिटा पाएगा, वह उतना ही जीवन में अनुकूलता प्राप्त कर सकता है। ...और आप  
पूछ सकते हैं कि इससे क्या हो पाएगा? त्यागमय जीवन से क्या हो पाएगा? यह हो जाएगा कि आप गोरख बन  
जाएंगे, आप कृष्ण बन जाएंगे, आप राम बन जाएंगे, आप बुद्ध बन जाएंगे, आप महावीर बन जाएंगे, आप गुरु  
नानक बन जाएंगे, आप उच्चकोटि के विद्वान बन जाएंगे, आप रॉक फैलर बन जाएंगे। रॉक फैलर की रोज 40  
करोड़ डॉलर की कमाई थी, 40 करोड़ डॉलर नित्य की कमाई क्योंकि इतने तेल के कुओं का मालिक है वह कि  
कुछ भी नहीं करे तो भी शाम को उसका मुनीम उसको खबर देगा कि 40 करोड़ डॉलर उसके खाते में जमा हो  
गए और आपको मालूम है कि उसके बेटे ने क्या किया? 32 साल की उम्र में सब कुछ छोड़-छाइकर के  
संन्यास ले लिया, मंदिर में जाकर एक भक्त बन गया साधु बन गया और वह केवल साधुत्वमय जीवन व्यतीत  
करने लग गया। उसने छोड़ दिया सब कुछ। जिसकी कमाई 40 करोड़ रोज की होती थी वह सब कुछ छोड़ कर  
बैठ गया।

उसने कहा, इस सबसे कोई फायदा नहीं। जब मेरा बाप अपने साथ कुछ ले जा ही नहीं सकता तो मैं क्या ले जाऊंगा? बाप अपने रास्ते पर गया, मैं अपने रास्ते पर चला जाऊंगा। इतना बड़ा त्याग आप और हम भी शायद नहीं कर सकते। जिन्दगी में सब कुछ करके भी 40 करोड़ रु नहीं कमा सकते और वह बगैर कुछ किए ही दिन में 40 करोड़ रु कमा लेता था और उसने सब कुछ दान कर दिया, सारा पैसा दे दिया और यहां तक कि अपने मकान भी चर्च को दान कर दिए। कहीं पुस्तकालय बना दिया, कहीं अफ्रीका में गरीब लोगों के लिए अस्पताल बना दिए और उसने ट्रस्ट बना दिया कि जो गरीब आएं, उनको दान दिया जाता रहे, और मुझे कुछ नहीं चाहिए केवल शाम को दो रोटी चाहिए।

आप वृदावन में जाइए, वहां बांके बिहारी जी का मंदिर है, उसके बाहर जो भिखारी बैठे हैं उनमें से 60 प्रतिशत भिखारी करोड़पति हैं। वे करोड़पति हैं और उन्होंने अपने बेटों के भरोसे घर छोड़ दिया, अपनी पत्नी के भरोसे घर छोड़ दिया, वे केवल वहां बैठे रहते हैं। हालांकि बिहारी जी के दर्शन करते रहते हैं और मधुकरी भिक्षा से जीवन व्यापन करते हैं।

मधुकरी भिक्षा का अर्थ है कि जो अंदर से, मंदिर के अंदर से जो कोई निकलता है तो कोई प्रसाद देता है, कोई लड्डू का टुकड़ा देता है, वह ले लेता है, उसे खा लेता है। कोई पूँडी और सब्जी देता है वह लेकर खा लेता है।

वह मांगता नहीं है, जो कोई स्वयं कुछ देता है वह खा लेता है। पता भी नहीं लगता कि वह करोड़पति है, और उस समय भी वो करोड़पति होता है क्योंकि उसके बेटे बिजनेस करते हैं, उसकी पत्नी बिजनेस करती है।

बैठे आते हैं कार में और हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि आप चलिए हमारे साथ में, हमारी बड़ी बदनामी हो रही है। मधुकरी भिक्षा से इस प्रकार से आप जीवन जीते हैं, यह सब अच्छा नहीं लगता है। वह अपने पुत्रों से कहता है कि तुम जाओ, जो कुछ तुम्हें करना है, करो, मैं यहां बिल्कुल सुखी हूं क्योंकि मुझे पता है कि जीवन का रास्ता क्या है।

क्या वे मूर्ख हैं, हमसे ज्यादा गए बीते हैं? नहीं, वे हमसे ज्यादा बुद्धिमान हैं, इसलिए वे करोड़पति बने हुए हैं और इसके बाद भी उन्होंने यह समझ लिया कि यह जीवन नहीं है, यह जीवन नश्वर है और यह दूसरा जीवन आनन्ददायक है। मधुकरी का अर्थ है कि बिना मांगे जो मिल जाए वह खा लें और चार रोटी अगर मिल जाएं तो चार खा लें। मिठाई मिल जाए तो मिठाई, चने मिल जाए तो चने, और केवल भगवान कृष्ण का नाम लेते हुए वे अपने जीवन का यापन कर लेते हैं। गोरख कहते हैं कि जीवन का सार यह है कि आप किस रास्ते पर चल रहे हैं? यदि जिस रास्ते पर आप चल रहे हैं, वह गलत है तो अभी से आप मुड़ जाइए। अभी तो समय है और मुड़ने में बहुत तकलीफ

होगी क्योंकि विषय भोग घटता नहीं है, बहुत कठिन है विषय भोग को छोड़ना।

...और मैं विषय-वासना का अर्थ गृहस्थ से नहीं ले रहा हूं। उसका अर्थ मैं मृग तृष्णा से ले रहा हूं, इसे सुख से ले रहा हूं या वासना से ले रहा हूं। वे 60 प्रतिशत लोग कहते हैं कि मृगतृष्णा झूठी है यह तो मेरे साथ चलती नहीं, इनका मेरे जीवन में कोई उपयोग ही नहीं, यह तो केवल दिखावा है मेरे जीवन में कि मैं कार में चल रहा हूं, साइकिल में नहीं चल रहा हूं, लोग क्या कहेंगे?

लोग क्या कह सकते हैं? गोरख को क्या कह दिया। ...कबीर को क्या कह दिया, राम को क्या कह दिया या कृष्ण को क्या कह दिया?

वे जीवन में कुछ बड़े बने और अद्वितीय बने ...और जनक भी अद्वितीय बने जो राजा थे, और रहे।

इसलिए इस भोगमय जीवन में, त्यागमय जीवन बनाने के लिए गुरु के शब्दों का सहारा लेना पड़ेगा। रास्ता तो वही बताएगा, जो मैं बता रहा हूं आपको। आप चलें या नहीं चलें, यह मेरी इच्छा नहीं है। मेरी इच्छा तो केवल यह है कि अपने शब्दों पर, आपको गतिशील करूं। आप गतिशील न हों, यह आपकी न्यूनता है, गुरु की न्यूनता नहीं है। साढ़े चार साल की उम्र में इस रास्ते को मैंने पकड़ा है ...और रही बात समाज को बदलने की, तो समाज को तो राम भी नहीं बदल सके, कृष्ण भी नहीं बदल सके, वैसे के वैसे कौरव और पांडव रहे, बुद्ध भी नहीं बदल सके, महावीर भी नहीं बदल सके।

मगर मुझी भर लोगों को जो बदला, उन मुझी भर लोगों ने। केवल 20 भिक्षुक थे बुद्ध के पास में और उन्होंने बौद्ध धर्म को 18 देशों में फैला दिया। शंकराचार्य के पास केवल 12 शिष्य थे, उन्होंने शंकराचार्य को जीवित अमर कर दिया, रामकृष्ण परमहंस का केवल एक शिष्य था विवेकानन्द, और उसने रामकृष्ण परमहंस के को जीवित कर दिया। कोई हजारों लोगों की भीड़ से जीवन यापन नहीं करता गुरु। गुरु तो केवल रास्ता बता सकता है। इसलिए महापुरुष चाहे गुरु भी हो, उसे हर्ष, सुख-दुःख, विषाद इन सबकी अनुभूति होती है मगर वह इन सबसे परे हटकर जीवन-यापन करता रहता है उसमें रहता हुआ भी।

यदि मैं आपके बीच रहूंगा नहीं तो आपको रास्ता दिखा ही नहीं सकूंगा, आपके लिए रास्ता नहीं बिछा सकूंगा। जंगल में जाकर बैठ जाऊंगा तो आपको मैं रास्ता नहीं बता सकता। फिर तो मैं खुद अपनी ही साधना कर सकूंगा। वह अपने आप में एकांतवास है, वह अपने आपमें पलायन है। वह अपने आप से भागना है।

...तो गोरखनाथ कहते हैं कि जहां भी जीवन में आपको रास्ता मिले, वहां से आप बदल जाइए, पलट जाइए और पलटना बहुत कठिन होगा क्योंकि हर व्यक्ति आपको खींचेगा, रोकेगा और कहेगा तुम कहां जा रहे हो, मैं किस के भरोसे हूं फिर मेरा क्या होगा? बेटा चिल्लाएगा, मां चिल्लाएगी, भाई चिल्लाएगा,

बहन चिल्लाएगी, समाज कहेगा कि साला मूर्ख है, सब लोग केवल नेगिटिव थिंकिंग ही देंगे, पॉजिटिव थिंकिंग नहीं देंगे। पॉजीटिव थिंकिंग केवल उसका मन दे पाएगा।

### तस्मै मनः शिव संकलां अस्तु

मन की संकल्प-शक्ति उसे प्रेरणा दे पाएगी कि मुझे यह जीवन व्यतीत करना है, और फिर देखा जाएगा। समुद्र में छलांग लगा दी है। डूबना ही तो है, चलो चालीस साल बाद नहीं डूबे, आज डूब गए। जब डूबना है, तो डूबना है। वहां लकड़ियों की चिता पर लेट कर डूबेंगे, यहां गुरु रूपी समुद्र में डूब रहे हैं, इतना ही तो अंतर है।

देख लेते हैं इस रास्ते पर चल कर भी। या तो मैं सर्वोच्चता प्राप्त कर लूंगा या फिर डूब जाऊंगा। डूबना तो निश्चित है ही। उसको तो आप रोक नहीं सकते। इसलिए गोरख ने कहा कि आप धीरे-धीरे त्यागमय जीवन प्रारंभ करिए और उतना ही छोड़ते रहिए विषय को भी। छोड़ेंगे भी तो इतनी जल्दी छूटेगा नहीं, क्योंकि आपके पास तो पूरा घड़ा भरा हुआ है विषय वासनाओं से। आप बारह दिन खाली करिए, तेरह दिन खाली करिए धीरे-धीरे विषय वासनाओं से हटकर के त्यागमय जीवन में खड़े हो जाइए।

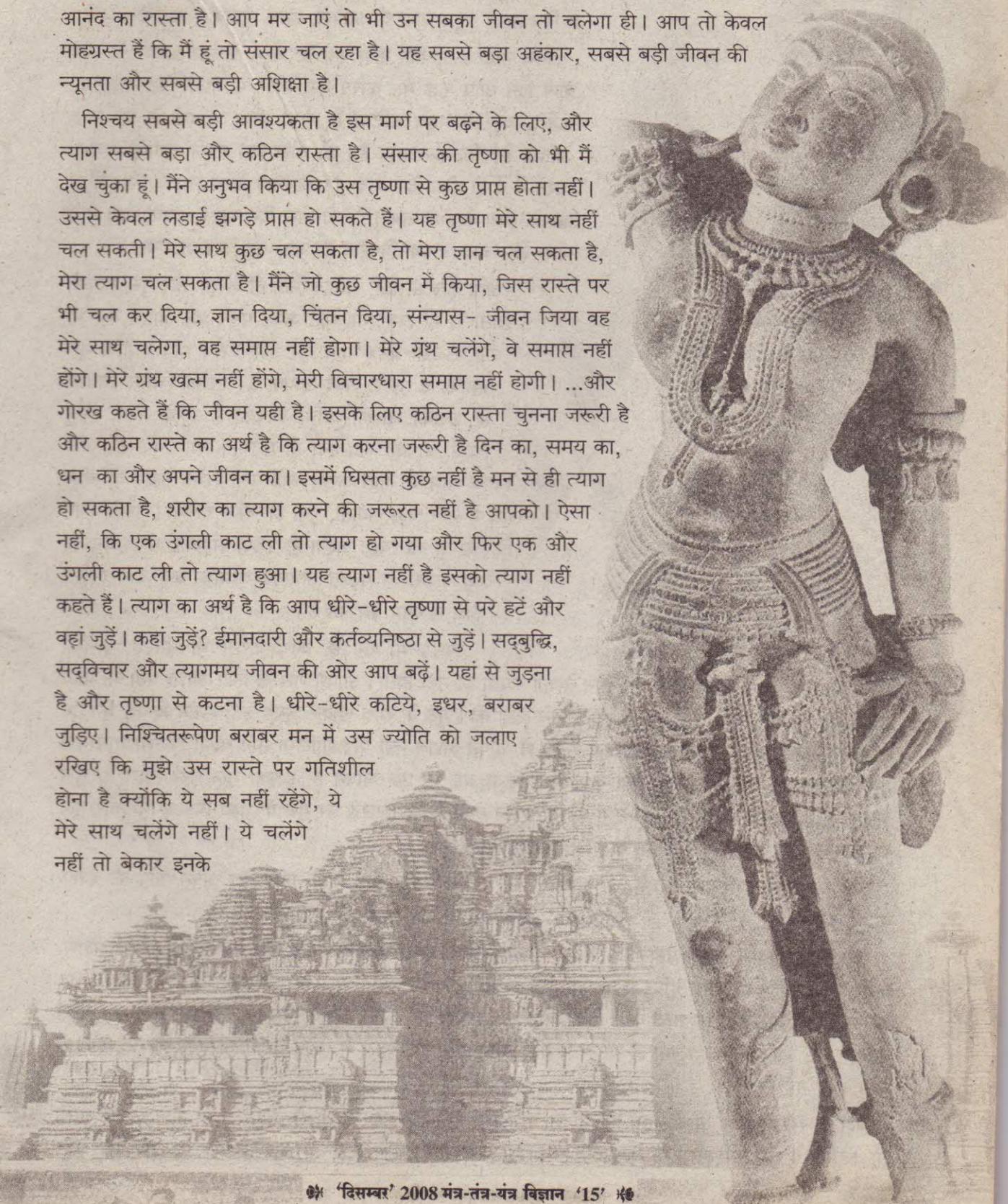
बहुत कठिन है उस रास्ते पर पैर बढ़ाना, ...और मनुष्य ही बढ़ सकता है, हिम्मतवान ही बढ़ सकता है, श्रेष्ठ जन ही बढ़ सकता है, अद्वितीय व्यक्ति ही बढ़ सकता है। कायर और बुजदिल नहीं बढ़ सकते, मरे हुए व्यक्ति नहीं बढ़ सकते, रोते हुए नहीं बढ़ सकते, अकर्मण्य व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता, गया बीता व्यक्ति एकदम राजपाट छोड़ करके बनवास नहीं ले सकता राम की तरह।

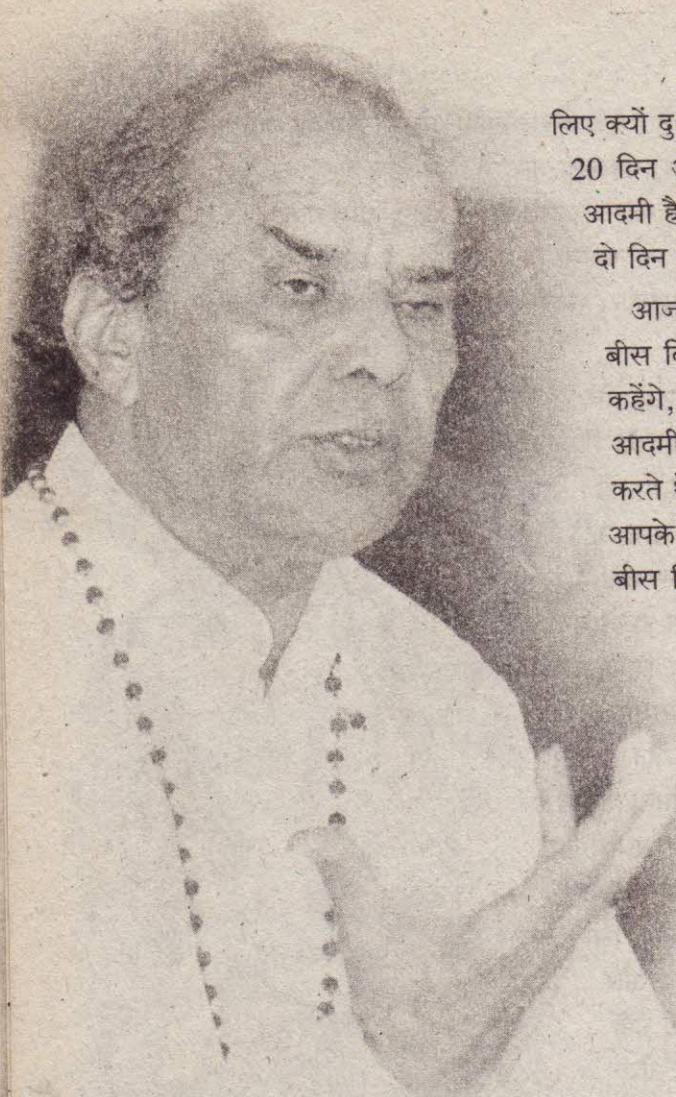
एक कमजोर व्यक्ति राजपाट छोड़ कर संन्यास नहीं ले सकता बुद्ध की तरह। कमजोर और कायरों के लिए संसार नहीं है।

उनके लिए केवल मृत्यु लिखी हुई है, क्योंकि

रोज मरते हैं तो पत्नी गाली देती है, फटकारती है, बेटे गाली देते हैं, पड़ोसी गाली देते हैं, व्यापार नहीं चलता तो दुःख और विषाद होता है नींद नहीं आती तो दुःख होता है, यह सब मृत्यु है। हर क्षण मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं और मृत्यु के रास्ते पर चल करके आपके प्राण अंतिम सांस ले लेते हैं। ...और त्याग एक आनंद का रास्ता है। आप मर जाएं तो भी उन सबका जीवन तो चलेगा ही। आप तो केवल मोहग्रस्त हैं कि मैं हूं तो संसार चल रहा है। यह सबसे बड़ा अहंकार, सबसे बड़ी जीवन की न्यूनता और सबसे बड़ी अशिक्षा है।

निश्चय सबसे बड़ी आवश्यकता है इस मार्ग पर बढ़ने के लिए, और त्याग सबसे बड़ा और कठिन रास्ता है। संसार की तृष्णा को भी मैं देख चुका हूं। मैंने अनुभव किया कि उस तृष्णा से कुछ प्राप्त होता नहीं। उससे केवल लडाई झगड़े प्राप्त हो सकते हैं। यह तृष्णा मेरे साथ नहीं चल सकती। मेरे साथ कुछ चल सकता है, तो मेरा ज्ञान चल सकता है, मेरा त्याग चल सकता है। मैंने जो कुछ जीवन में किया, जिस रास्ते पर भी चल कर दिया, ज्ञान दिया, चिंतन दिया, सन्ध्यास- जीवन जिया वह मेरे साथ चलेगा, वह समाप्त नहीं होगा। मेरे ग्रंथ चलेंगे, वे समाप्त नहीं होंगे। मेरे ग्रंथ खत्म नहीं होंगे, मेरी विचारधारा समाप्त नहीं होगी। ...और गोरख कहते हैं कि जीवन यही है। इसके लिए कठिन रास्ता चुनना जरूरी है और कठिन रास्ते का अर्थ है कि त्याग करना जरूरी है दिन का, समय का, धन का और अपने जीवन का। इसमें धिस्ता कुछ नहीं है मन से ही त्याग हो सकता है, शरीर का त्याग करने की जरूरत नहीं है आपको। ऐसा नहीं, कि एक उंगली काट ली तो त्याग हो गया और फिर एक और उंगली काट ली तो त्याग हुआ। यह त्याग नहीं है इसको त्याग नहीं कहते हैं। त्याग का अर्थ है कि आप धीरे-धीरे तृष्णा से परे हटें और वहां जुँड़ें। कहां जुँड़ें? ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से जुँड़ें। सद्बुद्धि, सद्विचार और त्यागमय जीवन की ओर आप बढ़ें। यहां से जुड़ना है और तृष्णा से कटना है। धीरे-धीरे कटिये, इधर, बराबर जुँड़िए। निश्चितरूपेण बराबर मन में उस ज्योति को जलाए रखिए कि मुझे उस रास्ते पर गतिशील होना है क्योंकि ये सब नहीं रहेंगे, ये मेरे साथ चलेंगे नहीं। ये चलेंगे नहीं तो बेकार इनके





लिए क्यों दुःखी होना है? आप देख लीजिए, पत्नी को खाना नहीं दीजिए 20 दिन और कपड़े मत दीजिए। वह आपको गाली देगी कि कैसा आदमी है तू, बिल्कुल गया बीता आदमी है रोटी नहीं दे सकता मुझे। दो दिन पहले बहुत खुश थी आपसे, आज आपको गाली देने लगी।

आज समाज आपको कहा रहा है, बहुत अच्छा आदमी है और बीस दिन आप कुछ मत करिए बस मंदिर मैं जाकर बैठ जाइए तो कहेंगे, यह तो बहुत घटिया है, गया बीता आदमी है यह कोई आदमी है? बिल्कुल गधा है। जो बीस दिन पहले आपकी प्रशंसा करते थे वे ही बीस दिन बाद आपकी निंदा करने लग जाएंगे। तो वे आपके साथ कहां हो सकते हैं, जो बीस दिन पहले आपके साथ थे वे बीस दिन बाद आपके विपरीत हो गए, यह कैसे हो गया?

आप कुछ भी करें, समाज निंदा ही करेगा और गुरु आपको छाती से ही लगाएगा, फटे कपड़े पहन कर आएंगे तब भी और राजसी वस्त्र पहन कर आएंगे तब भी। क्योंकि गुरु आपका है उसके शब्द आपके हैं। उसका चिंतन आपका है, उसकी धारणा-शक्ति आपकी है उसके लिए, परंतु त्याग आपको अपनाना ही पड़ेगा। त्याग भी करें और विषय भोग भी प्राप्त करना चाहें ऐसा संभव नहीं। दो चीज साथ में नहीं चल सकतीं, एक ही चीज चलेगी। उसके लिए फिर समय का त्याग करना ही पड़ेगा आपको, थोड़ा धन का त्याग करना ही पड़ेगा आपको क्योंकि धन आप सुकृत कार्य में व्यय कर रहे हैं।

समय भी धन है, कार्य करना भी धन है, कर्तव्य निष्ठा भी धन है, परिश्रम भी धन है, धन केवल सूपया ही नहीं होता। आपने गुरु के लिए आधा घंटा भी कार्य किया, यह भी धन ही है, एक पूँजी है जो आपने व्यय की। गुरु के साथ रहकर सुबह उठे, स्नान किया, भगवान का पूजन किया, यह एक उच्चता है। इस समय में आपने शराब नहीं पी। गालियां नहीं बोलीं फिल्मी गाने नहीं सुने। इस समय आपने कोई घटिया काम नहीं किया यह भी एक जीवन है, इसका मूल बेस त्याग है, मूल ईमानदारी है, मूल बेस तुम्हारा इस मार्ग पर गतिशील होना है जिस रास्ते पर गुरु के शब्द बिछे हुए हैं और मूल बेस उसके लिए प्रयत्नशील बनना है जो त्यागमय जीवन है।

यदि आप ऐसा नहीं कर पाते हैं, तो आपके जैसा घटिया व्यक्ति कोई है ही नहीं, आप अपने आप को बेशक महान कहिए।

सेठ धीसे लाल जी बहुत महान हैं, चांदनी चौक में उनकी बहुत बड़ी दुकान है और आज लोग उनकी प्रशंसा करते थकते नहीं। पर मेरी, दृष्टि में वह त्याग है ही नहीं क्योंकि ज्योंही मृत्यु को प्राप्त हुए, उनको जलाकर जब वापस लौटेंगे तो लोगों के शब्द क्या होंगे? बड़ा साला चोर था, चोरी कर के चार-चार दुकान बना ली, बहुत बेईमान था, आखिर मरा, मरना ही था साले को, कुछ नहीं किया साले ने, कोई धर्मशाला नहीं बनवाई, हाथ से पैसा छूटा नहीं उसके।

बस दो सैकेण्ड बाद आप लोगों की धारणा सुन लीजिए। यह सब आंखों से देख लीजिए आप। जाते समय तो कह रहे थे राम नाम सत्य है, अब आते समय गाली क्यों दे रहे हो, राम नाम सत्य है सब भूल गए बस! और

वे आलोचना करने वाले जाकर वही काम करने लग जाएंगे चोरी झूठ, बेर्मानी। आप भी वही कर रहे हैं।

और अगर आप उस रास्ते पर चल रहे हैं, जहां चार शब्द हैं, त्याग, त्याग समय का और धन का, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा यानि जो आपका काम है और जीवन में पूर्णता की ओर अग्रसर होने की क्रिया, अगर आप इस रास्ते पर चल रहे हैं तो गोरख कहते हैं कि जीवन का मूल धर्म, मूल चिंतन, मूल विचारधारा, मूल सत्य यही है। ... और बिना गुरु की सेवा के यह चीज प्राप्त हो ही नहीं सकती। गुरु प्राप्त हो ही नहीं सकता। बाजार से हम पैसे खर्च करके एक सुंदर कार खरीद सकते हैं या कपड़े खरीद सकते हैं, गुरु नहीं खरीद सकते आप। पैसे से आप और चीज खरीद सकते हैं, गुरु नहीं खरीद सकते आप। और गुरु ही आपको उस रास्ते पर गतिशील कर सकता है कार उस रास्ते पर गतिशील नहीं कर सकती। फिर गुरु आप से बंधा हुआ नहीं है, कार आपसे बंधी हुई है। कार को आप मोड़ेंगे तो चौपाटी पर जाएंगे, या कनॉट प्लेट जाएंगी।

... पर गुरु आपसे बंधा हुआ नहीं है, गुरु तो कहेगा तुम गलत कर रहे हो, सही रास्ता तो यह है। करो तुम गलत, यह तुम्हारी मर्जी है परन्तु सत्य रास्ता तो यह है, इस रास्ते पर चलोगे तो तुम अद्वितीय बनोगे, यह मेरी जिम्मेवारी है। मैं तुम्हारा हाथ पकड़ता हूँ, यह जिम्मेवारी मेरी है। मैं उस जगह तुम्हें पहुंचाऊंगा, यह मेरा धर्म है और वहां पर जाकर ही तुम पूर्णता प्राप्त कर पाओगे, वहां पर जाकर तुम अद्वितीय बन सकोगे। पर उसमें तुम्हारा दिखावा नहीं होना चाहिए, प्रदर्शन तुम्हारा नहीं होना चाहिए। केवल चरण स्पर्श करके फूलों का हार पहनाने से तुम्हारा काम नहीं चलेगा। तुम्हारा त्याग होगा तो अपने आप दिख जाएगा, तुम्हारी आँखों में झलक जाएगा। कर्तव्य-निष्ठता तुम्हारी आँखों से झलक जाएगी कि तुमने कितना कर्तव्य पूरा किया है। यह पता लग जाएगा तुम्हें देखकर कि तुम कितना इस रास्ते पर चले हो?

यह महत्वपूर्ण है कि कितना तुम इस रास्ते पर चले हो, कितना तुमने गुरु कार्य किया, कितने तुमने इस धुप अंधेरे में दीये जलाए?

गोरखनाथ कहते हैं कि यह जीवन का सत्य है और यह जीवन का असत्य है, इन दोनों के बीच में तुम खड़े हो। सब कुछ तुम्हारे हाथ में है कि तुम किस रास्ते पर चलो? तुम्हारा मन, तुम्हारा चिंतन, तुम्हारा समाज बार-बार तुम्हें विषय की ओर धकेलेगा, सत्य मार्ग पर नहीं धकेलेगा। इस रास्ते पर जाओगे, भी तो लोग खींचेंगे वापस कपड़ा पकड़कर, पांव पकड़कर, हाथ पकड़ कर वापस खींचेंगे। तुम्हारे हाथ में, पांव में कितनी ताकत है, यह तुम पर निर्भर है।

गोरखनाथ को भी मां ने खींचा कि चल तू शादी कर ले और उसने कहा मैं लिंग काट कर फैंक देता हूँ फिर क्या कर लेगी? उसने कहा, मुझे रास्ता वही पकड़ना है। उन्होंने वह रास्ता पकड़ा तो वे गोरखनाथ बन गए और उन्होंने गोरखपंथ चला दिया और आज भी गोरखनाथ जिंदा हैं। हमारे दादाजी जिंदा हैं या नहीं, हमें मालूम नहीं, अपने परदादा का नाम मुझे याद है ही नहीं परदादा के पिताजी का नाम क्या था वह तो मुझे बिल्कुल याद नहीं और किसी को याद नहीं। वे तो आए, और चले गए बिल्कुल एक पानी के बुलबुले की तरह। बुलबुला बना फट गया और खत्म हो गया।

बुलबुला बनना चाहते हो, तो भी तुम्हारी मर्जी है और विषय-वासना की ओर बढ़ना चाहते हो तो भी तुम्हारी मर्जी है और त्यागमय जीवन व्यतीत करना चाहो तो भी तुम्हारी मर्जी है। इसलिए पांच साल से बारह साल की उम्र में जो रक्त तुम्हें मिल गया, जो स्लेट पर अंकित हो गया, गंदे विचार, घटिया विचार, उनसे तुम्हें अपने आप को बार-बार खींचना है। यह सोचना है कि मुझे इस क्षण का उपयोग करना है कर्तव्य निष्ठा से। यह सब जो

धन का मेरे सामने ढेर लगा है यह सब तो मिट्ठी है, इससे मेरा जीवन नहीं चल सकता। इससे तो जीवन में बेईमानी और चोरी हो जाएगी और चोरी मेरे मन को फिर मलिन कर देगी। बड़ी मुश्किल से मैं इस मन को साफ कर रहा हूँ, फिर एक लाइन बेईमानी की इसमें लिखी जाएगी।

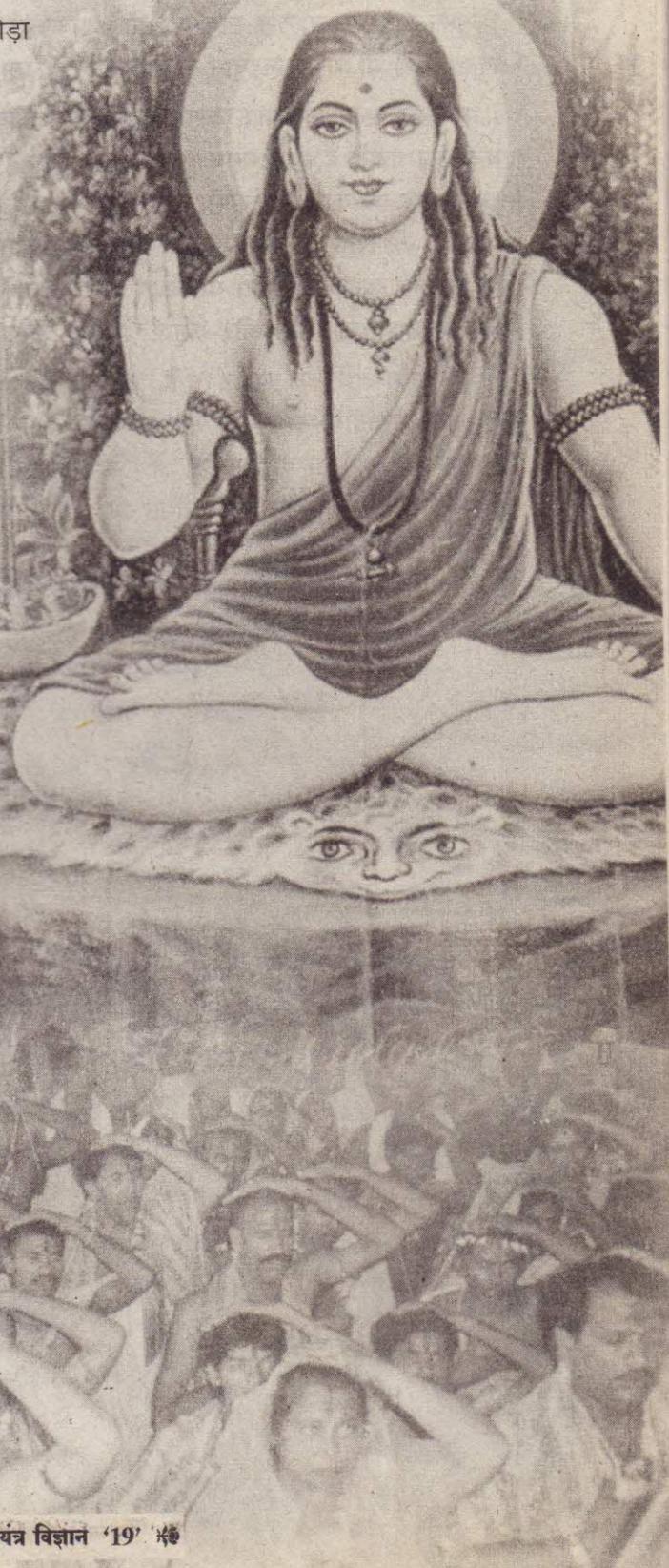
आपको हर क्षण कर्तव्यनिष्ठ रहना पड़ेगा, हर क्षण एहसास करना पड़ेगा कि आज मैंने चोरी की, बदमाशी की, बेकार समय बरबाद किया आज मैंने कोई त्याग किया नहीं, आज मैं गुरु के शब्दों की ओर बढ़ा नहीं, आज मैं उस रास्ते पर बढ़ा नहीं, जिस पर पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

...और जब आप ऐसा करेंगे तो एक क्षण ऐसा आएगा, जब आपका मन शुद्धता की ओर अग्रसर हो जाएगा। इसी को जीवन कहते हैं। ...और गोरखनाथ ने एक बहुत अच्छी बात कही है कि जीवन को तुम किस ओर गतिशील करना चाहते हो, उसके लिए तुम्हें बराबर सतर्क, सचेष्ट और प्रयत्नशील रहना पड़ेगा तुम्हें, और रहना ही चाहिए।

गुरु के साथ जुड़कर, उसके शब्दों पर चलकर आज अवश्य उस रास्ते पर बढ़े हैं। हाँ बढ़े आप केवल चार कदम ही हैं और अभी चार मील चलना है और चार कदम से चार मील तक करने में बहुत अड़चनें आएंगी, बहुत कठिनाई आएंगी आपके जीवन में, क्योंकि सब खींचेंगे तुम्हें। खींचेंगे तो भी मेरे मन में कोई मलिनता नहीं है। यह तो तुम्हारी इच्छा है, तुम चाहे तो इस रास्ते पर भी बढ़ सकते हो और इस, मेरे बताए हुए रास्ते पर भी बढ़ सकते हो। यह रास्ता पूर्णता का है और वह रास्ता मृगतृष्णा का रास्ता है,

जहां पर तुम मिट जाओगे। वहां पर वे तुम्हें लकड़ियों में जला करके रोते हुए तुम्हें भूल जाएंगे। दो मिनट भी नहीं रोते वो, घर तक भी रोते हुए नहीं आते वो देख लेना कभी श्मशान में जाकर। पांच मिनट हूं हूं करते हैं और फिर बातें करते रहते हैं सब, कि चलो पिताजी थे, चले गए, अब सब हमें संभालना है। उन्होंने व्यापार में बेर्इमानी का रास्ता सिखाया है कि ऐसे डंडी मारनी है, ऐसे ही हम डंडी मारेंगे, कपड़े को थोड़ा आधा इंच कम फाड़ना है, फाड़ लेंगे, और शाम तक पांच मीटर कपड़ा तो बचा ही लेंगे हम। पांच मीटर कपड़े के छः सौ रुपये बच जाएंगे। पिताजी ने आपको बिल्कुल सही सिखा दिया और आप भी उस रास्ते पर बढ़ जाएंगे और वे पिताजी बच्चों को भी कर्तव्य के रास्ते से हटा देंगे। गोरख कहते हैं कि यह हमारे जीवन का कैसा घटियापन है कि हम घटिया जीवन जी रहे हैं? और इससे अच्छा जीवन जी सकते हैं। हम अच्छे जीवन को जिएं और आज से ही उस शपथ को लें कि मैं अच्छा जीवन जीने के लिए, मैं त्यागमय जीवन को अपनाऊंगा, चाहे महीने में चार दिन का छः दिन या पूरे 30 दिन।

यह जीवन है, यह आनंद है, आप देखें कि उस आनन्द में कितना एक प्रकार का रस मिलता है, तुष्टि मिलती है, कितनी पूर्णता मिलती है, कितनी सफलता मिलती है। और तुम खुद ही आगे बढ़ कर के अपनी इच्छा व्यक्त करोगे, अपना चिंतन व्यक्त करोगे अपनी धारणा व्यक्त करोगे, तब हो पाएगा, कहने से कुछ नहीं हो सकता। गोरख कहते हैं कि जीवन में सत्य वह है, जो प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है अगर रॉक फैलर ऐसा कर सकता है, अगर बुद्ध और



महावीर ऐसा कर सकते हैं तो आप भी ऐसा कर सकते हैं। आवश्यकता है एक दृढ़ निश्चय की, संकल्प-शक्ति की। रॉक फैलर तो अभी दस पन्द्रह साल पहले ही थे और बुद्ध की कई हजार साल पहले की बात है। मैंने त्रेता युग से लगाकर आज तक की बात बताई आपको और गोरखनाथ आज से 300 साल पहले पैदा हुए। पांच हजार साल पहले से आज तक के उन लोगों के नामों को मैंने गिनाया है, उनके नाम मुझे और आपको याद है धीसूलाल, कृष्ण लाल के नाम मुझे या आपको याद भी नहीं और हमारा नाम याद रहे उसके लिए पत्थर पर नाम खुदवाने से या पत्थर जड़वाने से काम नहीं चलेगा। दिखावा करने से काम नहीं चल पाएगा।

मन की स्लेट को साफ करना पड़ेगा और जीवन को बिना दिखावे के, त्यागमय करते रहने की क्रिया को मनुष्यता कहते हैं, वह मनुष्टा तुम्हें प्राप्त हो, उस रास्ते पर तुम चल सको, ऐसे अद्वितीय बन सको ऐसे श्रेष्ठतम बन सको कि मैं सीना फुला कर कह सकूँ कि तुम मेरे शिष्य थे, और हो। तो शायद मेरी आंखों में एक प्रसन्नता की लहर व्याप्त होगी। परन्तु आप सोचते हैं कि विषय-वासना या पैसा कमाना चाहिए वह आवश्यक है। आनन्द आपको पैसे से या विषय भोग से नहीं मिल सकता, क्योंकि उस पैसे की हमेशा चिंता रहती है कि कैसे बदमाशी करें कैसे और कमाएं? उसका सुख आप ले नहीं सकते।

एक दीया अंधेरे को खा जाता है। अगर अंधेरे में दीए को जलाएं तो वह अंधेरे को खा जाता है। अंधेरा काला होता है और दीया अंधेरे को खा तो जाता है पर जब उगलता है तो वापस कालिख उगलता है। जो अंधेरा खाएगा वह कालिख ही उगलेगा और अगर आप छल से पैसा कमाएंगे तो केवल आपके पुत्र कुपुत्र हो जाएंगे, आपको रोग हो जाएगा, पत्नी बीमार हो जाएगी, घर में लड़ाई झगड़े हो सकते हैं और उस दो लाख रुपये को छाती से लगाकर आप जिन्दगी पार कर सकते हैं पर आप आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते।

पैसे से आप पांच हजार का पलंग ला सकते हैं परन्तु पैसे से आप नींद नहीं खरीद सकते।

पैसे से आप भोजन खरीद सकते हैं परन्तु भूख नहीं खरीद सकते। पैसे से आप सुख तो प्राप्त कर सकते हैं पर आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। एयर कंडीशन से सुख है, आनन्द नहीं है। पैसे के माध्यम से आपके जीवन की टैंशन मिट नहीं सकती। अगर मिट सकती तो हजारों अमरीकन आज भारत में हिमालय पर नहीं घूम रहे होते। क्यों आते हैं, क्योंकि वहां बहुत टैंशन है। पैसा तो बहुत है पर टैंशन भी बहुत है। वे मथुरा जाते हैं, फिर हिमालय जाते हैं, समुद्र के किनारे खड़े रहते हैं। ऐसे बाहर से टैंशन मिट नहीं सकती, कहीं जाने से आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

टैंशन मिट सकती है आपके अंदर की भावना और विचार से, यदि एक बार आप निश्चय कर लेंगे कि मैं तो ठीक उसी प्रकार हूँ, जिस प्रकार सिनेमा में जाकर बैठने वाला एक व्यक्ति। मुझे मालूम



हैं कि पांच रुपये की टिकट ली है और एक दिन बाहर निकलना ही है। आप इसका पार्ट मत बनिये पत्ती अपने ढंग से करेगी, बेटे अपने ढंग से करेंगे संसार में कोई खलनायक बन रहा है, कोई हीरो बन रहा है, कोई मारपीट कर रहा है। आप बस बैठे-बैठे देखते रहिए। आनन्द प्राप्त करने का तरीका अलग है। आनन्द तब प्राप्त होगा जब आप जीवन में त्यागमय बनेंगे। इसलिए गोरखनाथ कहते हैं कि जीवन में तृष्णाओं का तो कोई अंत है ही नहीं। जीवन में प्रकृति ने मनुष्य को शरीर तो बहुत अच्छा दिया लेकिन उस शरीर में दो तीन चीजें और डाल दीं। एक तो तृष्णा डाल दी, अब उन तृष्णाओं का तो कोई अंत है ही नहीं। लाख रुपया आना चाहिए, फिर डेढ़ लाख आना चाहिए, डेढ़ नहीं दो होना चाहिए, नहीं ढाई होना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति के पास पांच लाख रुपये हैं और वे दो नम्बर के या तीन नम्बर के, चार नम्बर के पैसे हैं, अगर पांच लाख भी हैं तो शाम को केवल गेहूं की रोटी ही खा सकते हैं, सोने के टुकड़े नहीं। आप रोटी खाइए, मेरे पास चांदी के टुकड़े हैं मैं वह खाऊंगा। आप नहीं खा सकते, आप भी गेहूं की ही रोटी खाएंगे। आप एक बार में चार कपड़े पहन लें, एक कोट और पहन लेंगे। पच्चीस कपड़े तो पहन नहीं सकते, एक लाख के मालिक होकर आप पच्चीस कपड़े पहनें कि हम छोटे आदमी नहीं हैं, तो लोग कहेंगे पागल है, अगर मेरे पास पचास हजार हैं तो मैं भी चार कपड़े पहन कर शमशान चला जाता हूं और आप भी पच्चीस लाख कमाकर, छल से, झूठ से वही करते हैं। तो उसमें अंतर कुछ नहीं, आता। अगर आपके पास पांच लाख हैं और आपने छल, झूठ कपट करके साढ़े पांच कमा लिए तो आपको केवल भ्रम है, झूठा संतोष है कि मैंने साढ़े पांच कमा लिए। इससे आपके रहन सहन या जीवन पर कोई फर्क नहीं पड़ता, मगर उन छः महीनों में आपने छल, झूठ द्वारा अपनी आत्मा को इतना दबोच लिया, उस मन पर इतनी रेत डाल दी है कि आपका चेहरा भी दिखाई नहीं देता कि आप भले हैं, दुष्ट हैं, ईमानदार हैं या कैसे हैं, यह कुछ दिखाई नहीं देता। आप बस तृष्णा में घूम रहे हैं और तृष्णाओं के कारण आप भटक रहे हैं और भगवान आपकी तृष्णा को देख रहा है और गोरख कहते हैं कि हम तृष्णाओं से, विषय से दूर होंगे तभी जीवन में उच्चता पर पहुंच पाएंगे। ...और त्याग हमारी प्राचीन परम्पराओं का एक बोध है। जिसके माध्यम से अगर गोरख सफल हो सकता है तो मैं सफल हो सकता हूं तो आप भी हो सकते हैं, पचास और लोग भी हो सकते हैं।

आवश्यकता केवल अपनी विषय वासनाओं को छोड़ने की है कि आप अपने छल, झूठ, बेर्मानी को त्याग दें। त्याग दें, तो जीवन में एक परिवर्तन आ पाएंगा और गोरख कह रहे हैं कि आप ऐसा परिवर्तन नहीं कर पाते, अपनी बेर्मानी को नहीं छोड़ पाते तो जीवन आपका वैसा ही है, जैसा एक घटिया व्यक्ति का। वास्तव में आप मनुष्य तभी बन सकते हो, जब आप जीवन में त्यागमय बन सकें, तभी आप गुरु से जुड़ पाएंगे, तभी तुम साधनाओं की उच्चता पर पहुंच पाओगे, तभी आप जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर पाओगे जो कि मानव- जीवन का ध्येय है। आप ऐसा कर पाएं, आप जीवन में अद्वितीय बन पाएं, श्रेष्ठतम बन पाएं, गोरख के समान बन पाएं, ऐसी ही मैं कामना करता हूं, हृदय से आशीर्वाद देता हूं।

- सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी  
निखिलेश्वरानन्द जी

## वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, वयोंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समर्थ्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर, आप पार्वेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

# सिंहिं प्रद्वायकं तारा यंत्रं

‘साथकालां सुखं कश्ची सर्वं लोकं भयंकरीम्’ अर्थात् भगवती तारा तीनों लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं, साधकों को सुख देने वाली और सर्व लोक भयंकरी हैं। तारा की साधना की श्रेष्ठता और अनिवार्यता का समर्थन वशिष्ठ, विश्वामित्र, रावण, गुरु गोरखनाथ व अनेक ऋषि मुनियों ने एक स्वर में किया है। ‘संकेत चन्द्रोदय’ में शंकराचार्य ने तारा-साधना को ही जीवन का प्रमुख आधार बताया है। कुबेर भी भगवती तारा की साधना से ही अतुलनीय भण्डार को प्राप्त कर सके थे। तारा-साधना अत्यंत ही प्राचीन विद्या है, और महाविद्या साधना होने के बावजूद भी शीघ्र सिद्ध होने वाली है, इसी कारण साधकों के मध्य तारा-यंत्र के प्रति आकर्षण विशेष रूप से रहता है।

वर्तमान समय में ऐश्वर्य और आर्थिक सुदृढता ही सफलता का मापदण्ड है, पुण्य कार्य करने के लिए भी धन की आवश्यकता ही है, इसीलिए अर्थ को शास्त्रों में पुरुषार्थ कहा गया है। साधकों के हितार्थ शुभ मुहूर्त में कुछ ऐसे यंत्रों की प्राण-प्रतिष्ठा कराई गई है, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने घर में स्थापित कर कुछ दिनों में ही इसके प्रभाव को अनुभव कर सकता है, अपने जीवन में सम्पन्नता और ऐश्वर्य को साकार होते, आय के नये स्रोत निकलते देख सकता है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 258/- + 45/- postage  
Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)  
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India  
फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax). 0291-2432010

गृहस्थ और संन्यास धारा मिलन

विवित्र विकट कठिन नहीं है

यही जीवन का मूल धर्म है

जीवन कैसे जिए? क्या यह जीवन कमाने, खर्च करने, सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए ही है, निरन्तर भाग-दौड़ ही है अथवा सब कुछ छोड़कर ईश्वर ध्यान और एकांत वास करने हेतु ही है, जिससे आत्म साक्षात्कार किया जा सके। जीवन की विसंगतियों में सामन्जस्य कैसे हो? इन्हीं प्रश्नों का समाधान करता, विवेचना पूर्ण यह आलेख -

जीवन की दो धाराएं हैं - गृहस्थ और संन्यस्त। ये दोनों सदा समाज में समानान्तर बहती ही रही हैं और दो समानान्तर रेखाएं जिस प्रकार से एक-दूसरे का कभी अतिक्रमण नहीं करतीं, उसी प्रकार इन्होंने भी कभी एक-दूसरे का अतिक्रमण नहीं किया। इनका परस्पर यह अतिक्रमण न करना क्या किन्हीं दो परस्पर विपरीत स्थितियों का प्रदर्शन मानना चाहिए? क्या गृहस्थ और संन्यास दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं? या कहीं से इनमें कोई साम्य भी है? यह बात प्रत्येक विचारशील पाठक को, और विशेष रूप से यदि वह साधक है तो कभी न कभी उद्देलित करती ही है, और यह उद्देलित करनी ही चाहिए क्योंकि उद्देलित करना ही इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति एक सकारात्मक चिन्तन की दिशा में अग्रसर है, तथा अपने को दबोच कर, सूर्य चिन्तनों से ग्रस्त होकर, पर्दे डालकर नहीं जी रहा, न ऐसा करने से जीवन निया ही जा सकता है।

...जैसा कि प्रारम्भ में कहा कि ये जीवन की दो धाराएं हैं अर्थात् दोनों ही प्रवाहित हैं, दोनों ही गतिशील हैं, और जब दोनों ही गतिशील हैं तो आलोचना अथवा किसी की हेयता जैसी कोई बात नहीं रह जाती। अंतर केवल इतना होता है कि जहां एक गृहस्थ के जीवन की धारा बार-बार अटकते हुए कुछ कम गति से गतिशील रहती है, वहीं एक संन्यासी के जीवन की धारा

धारणा की जा सकती है कि वह एक गृहस्थ की अपेक्षा अधिक तीव्रता से गतिशील रहेगी।

**वेग और गतिशीलता** - ये दो गुण ही वास्तव में प्रवाह के लक्षण हैं, और प्रवाह की सार्थकता हैं, क्योंकि जिस प्रवाह में गति न हो, जिसमें एक लहर से दूसरी लहर लड़कर उससे बच्चों की सी धींगा-मुश्ती न कर रही हो, उसमें किलोल कैसी, और निर्मलता संभव भी हो तो कैसे? लक्ष्य तक तो प्रत्येक प्रवाह पहुंच ही जाएगा चाहे वह धीमा हो अथवा तेज, लेकिन जो प्रवाह उछलता हुआ आता है उसमें तो कुछ और ही बात है।

पहाड़ी नदी जब बहती हुई उछलती है तो अपने किनारे पर उगे वृक्षों, जीव-जन्तुओं, सभी को भिगोती जाती है, मानो जैसे-तैसे बस अपनी ही यात्रा पूरी करने की बात निश्चय कर चल पड़ी हो, जिसके लिए यात्रा का लक्ष्य उस अगाध समुद्र से मिलने से भी अधिक इस बात में आ समाया हो कि कैसे नर्तन करते हुए चले, कैसे अपने किनारों पर खड़े सभी लोगों पर कुछ छीटे उछाल दे, उन्हें भिगो दे, सराबोर कर दे, फिर ऐसे ही प्रवाह के समक्ष सिर झुकाने के लिए प्रकृति भी विवश हो जाती है। पेड़ उसकी राह छोड़कर ढुलक जाते हैं और चट्टानें कट जाती हैं।

संन्यास चट्टानों को लुढ़काने की ही, अटकाव साफ कर देने की ही क्रिया है। जीवन में गति लाने की ही धारणा है और यह तीव्रता व वेग से निरन्तर प्रवाहित रहती है या उसके विषय में धारणा, यह गति कोई भी व्यक्ति, चाहे वह गृहस्थ हो या विरक्त,

मैंने एक प्रसन्नता का अविष्कार किया और उसके आनन्द में व्यक्त था कि मैंने अपने घर के दरवाजे पर कोलाहल सुना। दरवाजा खोला तो मैंने पाया कि व्यक्ति आपस में लड़ रहे हैं। वे मेरी प्रसन्नता को लेकर लड़ रहे थे। उनमें से एक देवपुरुष था और दूसरा शैतान। एक का कहना था कि मेरा आनन्द पाप है, जबकि दूसरे का कहना था कि नहीं, पुण्य।'

- एक प्राचीन मिस्री लोक कथा

ठीक यही स्थिति तो आज भी है। जीवन आज भी पाप एवं पुण्य के मध्य में फँसा धिस्ट रहा है। अंतर इस बात से नहीं पड़ता कि जीवन की शैली क्या है, वह गृहस्थ है अथवा संन्यस्त। आवश्यकता है तो मूल में विद्यमान आनन्द को समझने की।

जब तक अपने जीवन में नहीं ले आता, तब तक अपूर्ण है और एक प्रकार से कहा जाए तो नाले के समान ही उसका जीवन गतिशील तो है किन्तु अनेक दुर्गन्धों से भरकर, पीड़ा की काई को ऊपर झलकाता हुआ, उदास और मलिन।

संन्यास गेस्ट्र नहीं, संन्यास पहाड़ों की ओर प्रस्थान भी नहीं, और संन्यास गृहस्थ का त्याग भी नहीं। एक गृहस्थ जिस प्रकार से जीवन के संगीत को सुने बिना अधूरा है, उसी प्रकार कोई संन्यासी भी जीवन के संगीत से यदि वंचित है, तो अधूरा है।

सुबह उठे, ऑफिस गए और वापस लौट कर अगले दिन पुनः ऑफिस जाने के लिए सो गए या मन पर सौ-सौ पर्दे ढाल, गेस्ट्र वस्त्र पहन कर अतृप्त मानसिक दशा लेकर यदि ट्रूंठ की भाँति मालाओं की गणना में उलझे रहे और सिद्धियों का लेखा-जोखा रखते रह गए, तो इन दोनों ही जीवनों में मौलिक भेद क्या हुआ? यह तो केवल स्थान व आवरण का भेद रहा, धारणा का तो नहीं रहा।

यदि अपने आस-पास देखें तो सैकड़ों व्यक्ति इसी प्रकार का जीवन जी रहे हैं। सहज आनन्द, सहज हास्य, सहज गति उनके जीवन से समाप्त हो गयी है। ... न उनके समक्ष कोई स्पष्ट लक्ष्य है, न उन्हें यही पता है कि जीवन में लक्ष्य निर्धारित क्या करें?

आजीविका-प्राप्ति को जीवन का चिन्तन बनाना और फिर धन-संग्रह करना जीवन का एक आवश्यक अंग तो हो सकता है

किन्तु यह जीवन का ऐसा लक्ष्य नहीं हो सकता, जिससे अनिवार्य रूप से जीवन में सुख-संतोष भी मिल जाए। दूसरे के लिए कुछ करके, फिर जीवन का और ऊंचा लक्ष्य सोचना, उसे जीना तो बहुत आगे की बात है।

जीवन की इसी विसंगति, गृहस्थ व संन्यस्त, दोनों ही धाराओं में प्रवाह की न्यूनता को समझ कर सिद्धाश्रम ने यह व्यवस्था दी कि जीवन में कोई न कोई ऐसी साधना या ऐसी घटना अवश्य हो, जिससे साधक अपने जीवन की खोई हुई गति प्राप्त कर सके, जिससे अटकाव दूर हो और साधक तीव्र हो, आगे बढ़ सकें। जीवन में जो प्रतिदिन की सुबह एक उदासी और धिसापिटा क्रम लेकर आकर खड़ी हो जाती है, वह क्रम समाप्त हो।

आनन्द अपने मूल में एक चेतना है न कि चमत्कार। आनन्द की मूल धारण चेतना में ही छुपी है, साधना का रहस्य भी चेतना में ही छुपा है, साधना के द्वारा इस शरीर के अक्षय शक्ति कोष में जिस प्रकार से विखण्डन की क्रिया आरम्भ होती है, वही फिर कभी धन-सम्पत्ति का आधार बनती है, तो कभी रोग-मुक्ति का और वही आगे जाकर उस परम सुख एवं उस अनिवार्यी आनन्द का आधार भी बनती है। किसके भीतर यह विखण्डन किस साधना से आरम्भ हो जायेगा कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन एक साधना ऐसी भी है जो सभी साधनाओं के मध्य एक अलग प्रभाव, एक अलग स्फुलिंग रखती है और वह है सिद्धाश्रम द्वारा विकसित की गयी 'त्वष्ट्रा साधना'। त्वष्ट्रा देव का उल्लेख अतिप्राचीन, क्रष्णवेद कालीन है एवं इनकी विस्तृत साधना-पद्धति का वर्णन यजुर्वेद में बहुतायत से आकाश, पृथ्वी व सभी लोक के निवासियों को रूप प्रदान करने वाले देव के रूप में किया गया है।

यहां सौन्दर्य का तात्पर्य केवल दैहिक सौन्दर्य से नहीं, वरन् आंतरिक सौन्दर्य से है, उस चेतना के प्रवाह से है जिससे व्यक्ति के अंदर का आह्वाद छलक कर उसके चेहरे पर ओस की भाँति दिख सके। भारतीय सौन्दर्य-आराधना के पीछे जो दृष्टि रही, उसका तात्पर्य ही यही है कि व्यक्ति आनन्द का साक्षी बन सके, सहभागी बन सके, उसके साथ संयुक्त हो सके, संन्यस्त हो सके। तब संन्यास और गृहस्थ दो अलग-अलग जीवन-शैलियां भी नहीं रह जातीं क्योंकि संन्यास रुद्धिवादिता का विनाश ही हो तो है।

त्वष्ट्रा साधना वास्तव में उस वेग की ही साधना है, जिसके द्वारा जीवन में आनन्द का प्रवाह उत्पन्न हो सकता है। यजुर्वेद के उनतीसवें अध्याय के नवें श्लोक में स्पष्ट कहा गया है -

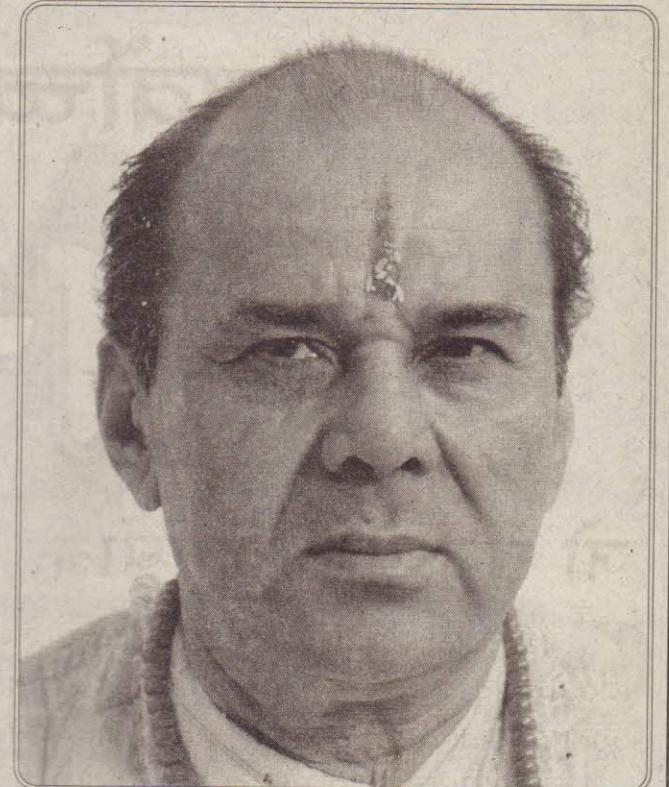
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान्  
 त्वष्टुर्वर्गं जायत उरशुरश्वः ।  
 त्वष्टे वं विश्वै भुवनं जजान्  
 बहोः कर्त्तर्मिह वर्धित होतः ॥

‘त्वष्टा देवता, देवताओं की कामना वाले, यज्ञ करने वाले, वीर पुत्र उत्पन्न करते हैं। त्वष्टा द्वारा ही शीघ्रगामी और सब दिशाओं में व्याप्त होने वाला अवश्य उत्पन्न होता है। वही त्वष्टा इस सम्पूर्ण विश्व का रचयिता है। हे ऋषि इस प्रकार अनेक कर्म वाले परमात्मा का इस स्थान में यजन करो।’

त्वष्टा देव की साधना उपासना प्राचीन काल में विविध यज्ञों द्वारा एवं कई माह तक चलने वाले यज्ञों के रूप में अत्यन्त लोकप्रिय रही, किन्तु वर्तमान समय में न तो उन जटिल यज्ञ पद्धतियों का ज्ञान सुलभ रह गया न वैसे ‘ज्ञाता’ रह गए जो तपस्या के तेज-बल से युक्त होकर यज्ञ के माध्यम से उनका आह्वान कर सकें, अपने शिष्य को उनकी शक्तियों का लाभ दिला सकें। इसी कारणवश कालान्तर में विशिष्ट साधकों ने और सिद्धाश्रम के योगियों ने ज्ञान-चिन्तन द्वारा वे उपाय ढूँढ़े जिनके द्वारा इस साधना को पुनर्जीवित किया जा सके। यज्ञ के स्थान पर मंत्रात्मक एवं यंत्रात्मक उपाय ढूँढ़े गए क्योंकि यंत्रात्मक उपाय अपनाने से, उचित यंत्र की स्थापना से, साधक के जीवन में साठ प्रतिशत से भी अधिक कार्य तो स्वतः हो ही जाता है। विशिष्ट साधकों ने अपनी प्रज्ञा से ज्ञात किया कि प्रकृति का एक अनुपम उपहार है, जिसे उन्होंने ‘त्वष्टा’ की संज्ञा से विभूषित किया। उन्हें ज्ञान था कि जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वह प्रकृति में भी है ही, और इसी ‘त्वष्टा’ के द्वारा उन्होंने साधना कर, यह अनुभव पाया कि इसका सम्बन्ध विशेष मंत्र से कर देने पर ठीक वही फल प्राप्त होते हैं, ठीक वही वेग और अश्व के समान बल प्राप्त हो जाता है, जो अन्यथा, यज्ञ द्वारा प्राप्त होता था।

ऊपर त्वष्टा के वर्णन में उन्हें जिस ‘अश्व’ का उत्पन्न करने वाला कहा गया है उसका अर्थ यही है कि साधक अत्यधिक बलवान् एवं इतना अधिक पुष्टता से भरा हो जाता है, जिस प्रकार से एक जंगली अश्व, जो अपने अद्वितीय बल के कारण किसी प्रकार से संभाला ही नहीं जा सकता।

‘त्वष्टा’ को वास्तव में जिस रूप में साधकों ने प्राप्त किया, वह श्वेत रंग की एक विशिष्ट मणि है, जिसे स्थापित कर साधना की जाती है। जिसे साधक अपनी सुविधानुसार दिन या रात्रि में कभी भी सम्पन्न कर सकता है। सिद्धाश्रम- प्रणीत साधना होने के कारण और संन्यस्त साधना होने के कारण साधक स्वयं भी गेरुए रंग के वस्त्र धारण कर साधना के उन



क्षणों में एक संन्यासी की भाँति बैठे तो वह पूर्ण क्षमता से इस साधना के तेज-बल को अपने अन्दर समा सकता है। साधक श्वेत वस्त्र धारण कर गुरु चादर अपने ऊपर डालकर, यह साधना सम्पन्न कर सकता है। सामने किसी पात्र में ‘त्वष्टा’ को स्थापित कर, प्रार्थना कर, अपने शरीर में तेज-बल के साथ-साथ आनन्द का उद्गम उद्भूत होने के लिए प्रार्थना साथ ही करें। निम्न मंत्र का जप ‘स्फटिक माला’ से पांच माला करना पूर्ण सफलता दायक माना गया है।

#### मंत्र

॥ॐ हीं भव त्वष्ट्रा हीं फट्॥

ऐसा ही त्वष्टा पूजन और मंत्र जप पांच दिन करें। ये पांच दिन एकादशी से पूर्णिमा तक हो तो विशेष प्रभावकारी होता है। मंत्र-जप के उपरान्त साधक को चाहिए कि इन दोनों सामग्रियों को श्वेत वस्त्र में बांध कर किसी पवित्र सरोवर में विसर्जित कर दे और उस आनन्द के साक्षीभूत बने, उस आनन्द से इतना अधिक सराबोर हो जाए कि वह उसके पास से स्वतः ही बिखर कर दूसरे के जीवन में भी उत्तर सके। उसके आनन्द से अन्य व्यक्ति भी आनन्दित हो सकें।

अपने आनन्द का इस प्रकार बिखर जाना ही, इस प्रकार दूसरे के लिए उपयोगी हो जाना ही सही अर्थों में संन्यास की मूल भावना है।

# सर्वोच्च योग

# दीक्षा-योग

**जो राजयोग, कर्मयोग, ज्ञान योग का आधार है**

गुरु ऐसे ही वृक्ष उपजाते हैं, अपने आकाश रुपी हृदय सेलगते हैं, उन्हें सघन बनाते हैं, जिनकी छांब के नीचे पूरी मानवता विश्राम करती है, पर वृक्ष... वृक्ष तो उन्मुक्त, नृत्ययुक्त उठता ही जाता है, उड़ता ही जाता है धरा से उठकर आकाश में समाने के लिए।

यही इस युग का वास्तविक योग है। योग की अन्य यदृतियां अपने स्थान पर अपने-अपने ढंग से महत्वपूर्ण हैं, किन्तु जिस यदृति में अनन्त संभावनाएं आ समायी हैं, वही दीक्षा योग है।

राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, प्रेमयोग - जो भी जीवन में धरती क्यों न हो, उसको तोड़ कर अंकुरित हो ही जाती है, मिलन करा दे वही 'योग' है, जो अपने भीतर से ही जोड़ दे तब घुटन और अंधकार के बाहर आशा का एक अंकुर फूटता वही 'योग' है। जो अपने अन्दर की यात्रा पूरी करा दे। बाहर है और वह उन्मुक्त आकाश की ओर निहारता हुआ, बढ़ते हुए भटकता मन उन्मनी होकर अन्तस् की ओर लौट आए, यह आकाश को चूम लेने तक ऊंचा हो जाता है। दीक्षा में भी ऐसा जान जाए कि वह तो सदा से अक्षय कोष के मुंह पर बैठा था। ठीक उसके नीचे ही रत्नों का भंडार छुपा था। लहरों की सी थपकियां देती जीवन की हलचलों के नीचे, धोंधे और सीपी को छोड़ जहां मोती ही मोती भरे थे, वह वहां तक पहुंच जाए, तो वहां तक पहुंच जाना ही 'योग' है।

किसी भी योग की अन्तिम स्थिति इसी प्रशान्त और गहन समुद्र के पास पहुंचने तक की ही यात्रा होती है। यही समाधि की वास्तविक स्थिति भी होती है और यही 'विचार-शून्य' मन-मस्तिष्क को प्राप्त करने की दशा भी है। समुद्र बीचों-बीच में जाकर नितान्त शांत नहीं होता, गति वहां भी शेष रह जाती है पर वह गति तो जीवन का एक क्रम है, और ऐसी ही लहरों पर, ऐसी ही शांत लहरों पर उजले पंख लिए पक्षी आकर तैरते हैं, प्रेम के आनन्द के और चैतन्यता के शुभ्र श्वेत पक्षी।

दीक्षा एक बीज है जो किसी तरह से एक बार बस मन में पड़ जाय तो फिर वह अपनी जिजीविषा से कैसी भी सख्त

तक उठ कर उसको चूम लेना होता है तक राह तक उठ कर उसको चूम लेना होता है उस आकाश को, जो गुरु का ही प्रतिरूप माना गया है, जो निर्मल कहा गया है और जिसमें अवस्थित होना एक योगी की अन्तिम स्थिति कही गयी है।

वृक्ष के जन्म के पश्चात् उस में एक चेतना होती है, जीवन-रस होता है, उछाह और एक निराली यात्रा होती है। घुटन से उठकर, सड़ांध से निकल कर ऊपर आकाश छू लेने तक राह में पुष्प बिखेरता है, रंग, गंध और अपने सारे अस्तित्व का एक-एक कण। उसकी पत्तियां, उसकी जड़, उसकी शाखा, क्या कुछ गीत नहीं गाती जीवन के!

गुरु भी अपना प्रवाह देते हैं इस प्रकार एक योग करने के लिए, देवदार के वृक्ष की तरह पवित्र बनने के लिए, और यह तो फिर होता ही है कि इस क्रम में बहुत कुछ और संवरता चला जाता है। चाहे वह रोजमरा की जिन्दगी हो या बरसों के साथ चली आ रही मानसिक गुत्थी, शरीर की जड़ता, दबी-

छुपी इच्छाएं और भी बहुत कुछ, क्योंकि मानव-जीवन जहां अनन्त कामनाओं को समेटे हैं, वहीं अनन्त संभावनाओं को भी समेटे हैं - प्रेम की सम्भावनायें, दया, ममता, करुणा की भी सम्भावनाएं, जिनके माध्यम से किसी को छांव मिले।

गुरु ऐसे ही वृक्ष उपजाते हैं, अपने आकाश रूपी हृदय से लगाते हैं, उन्हें सघन बनाते हैं, जिनकी छांव के नीचे पूरी मानवता विश्राम करती है, पर वृक्ष... वृक्ष तो उन्मुक्त, नृत्ययुक्त उठता ही जाता है, उड़ता ही जाता है धरा से उठकर आकाश में समाने के लिए।

यही इस युग का वास्तविक योग है। योग की अन्य पद्धतियां अपने स्थान पर अपने-अपने ढंग से महत्वपूर्ण हैं, किन्तु जिस पद्धति में अनन्त संभावनाएं आ समायी हैं, वही दीक्षा योग है।

जो घुटन में, सड़ांध में अपनी अस्मिता खो चुके हैं, उन्हें उगना है एक वृक्ष की भाँति, धरा पर अपने-आप को स्थापित करते हुए। जो निकल चुके हैं जीवन के प्रवाह से बंधे-बंधाए क्रम को छोड़; और आ चुके हैं गुरु रूपी समुद्र के पास, उन्हें सही लहर पकड़ कर अब समुद्र के गर्भ में जाना ही है। यही दीक्षा-योग है।

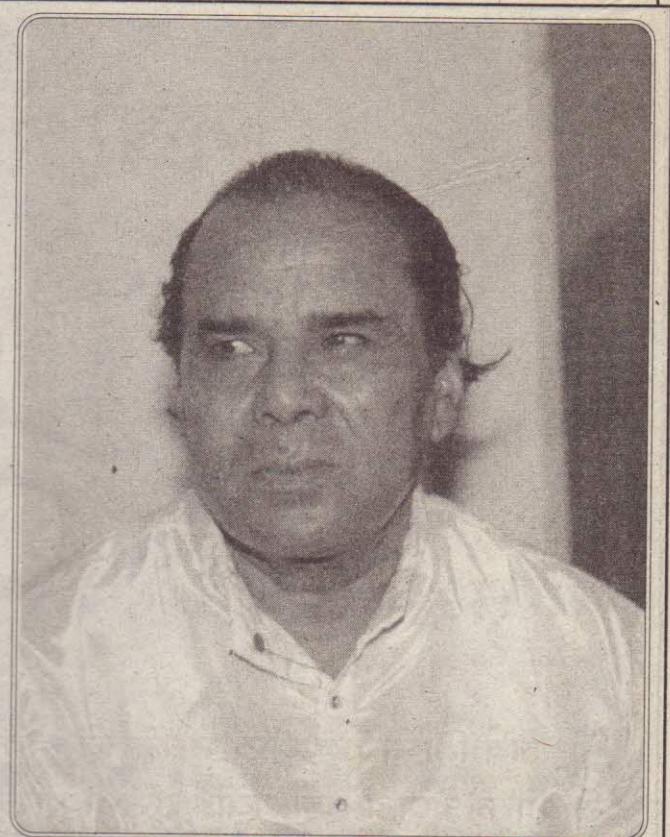
योग की परिभाषा प्रकृति से है। वृक्ष, पर्वत, सागर, नदियां पल-पल जिस तन्मयता में लीन होकर अपने रोम-रोम से गुरु का जो अनहृद आनन्द गुंजारित कर रही है, उससे परे हटकर योग को कैसे कहें? दीक्षा को शब्दों में बांध कर कैसे बतायें? दीक्षा तप का एक बल ही नहीं, गुरु रूपी समुद्र का एक प्रवाह ही नहीं, यह तो उससे भी ऊपर करुणा का एक अजस्र प्रवाह है। दीक्षा प्रेम की रिम-झिम फुहार है, जिसमें भीगना और भिगोना दोनों ही कविता है।

**अपने को अपने ही भीतर खोज लेने के लिए व्यर्थ में इतनी भाग दौड़ ही क्यों? जो सुख अपने ही अन्दर छुपा है, उसके लिए इतनी उद्धिज्ञता क्यों?**

दीक्षायोग क्रियाएं नहीं करवाता, उस आनन्द से परिचय करवाता है, जिसको प्राप्त करना ही किसी भी योग का लक्ष्य हो सकता है।

यह आपके जीवन का सौभाग्य है कि आप नववर्ष के प्रारम्भ में गुरुदेव से तांत्रोक्त अष्टमहालक्ष्मी दीक्षा प्राप्तकरने जा रहे हैं।

जिसकी आपको निरन्तर आवश्यकता है।



इस युग में सब गणित हो गया है। भावनाएं और जीवन की उदात्त स्थितियां हास्यापद दृष्टि से देखी जाने लगी हैं। किन्तु जीवन के नितान्त भौतिक क्षणों से ऊपर उठने पर या भोग के बाद भी अतृसि शेष रह जाने पर जो शून्य बचता है, हास्य के बाद भी तो मन के कोने में जो रुदन शेष रह जाता है, सारी जगमगाहटों के बावजूद जो अंधकार धना रह ही जाता है और सब कुछ होते हुए भी जिस 'कुछ' की कमी बेहद खटकती रहती है, उन सभी का उत्तर यही दीक्षा योग ही है, क्योंकि यह 'प्राण' का प्रवाह है। एक क्षुद्र देह में बद्ध प्राण की असीम ब्रह्माण्ड में विस्तारित होने की जो कामना है, वही प्रेम के माध्यम से, कभी करुणा के माध्यम से, कभी अपनत्व के माध्यम से विस्तारित होने को प्रत्येक व्यक्ति में थोड़ी या बहुत तड़फ लेकर रहती ही है। सामान्य व्यक्ति के दृष्टि-पटल के सामने पारिवारिक सम्बन्ध होते हैं, जिन्हें वह अपना प्रेम, करुणा और अपनत्व देता है, और गुरु के सामने समस्त ब्रह्माण्ड उनका अपना होता है।

ऐसे ही प्राण-स्वरूप गुरु के प्राणों में समाहित होने की क्रिया, रच-पच जाने की और घुल-मिल जाने की क्रिया है 'दीक्षा योग', जिसमें बस किसी पल आकर किनारे खड़ा हो जाना है, वे खुद लहर बनकर आयेंगे और अपने भीतर तक ले जायेंगे, वहां रत्नों के गर्भ तक! - जीवन के बीचों-बीच!

जीवन का सही रूप  
से शायम है

# दीक्षा

जब शिष्य का शुरू से मिलन होता है तो गुरु अपनी उजस शक्ति शंखर से शक्ति अणुओं का प्रवाह इस प्रकार करते हैं कि शिष्य के भीतर शक्ति का विस्फोट प्रारम्भ हो जाए, वह विस्तर घतिशील बना हुआ, शक्ति युक्त बनता हुआ अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा सकें।

**दीक्षा तत्व को स्पष्ट करता यह आलेख-**

पारिभाषिक व्याख्याओं को यदि न लें और सरल शब्दों में दीक्षा का तात्पर्य समझने का प्रयास करें, तो सीधा सा अर्थ है, 'दक्ष' हो जाना अर्थात् निपुण हो जाना, परिपूर्ण हो जाना, सक्षम व सफलता युक्त हो जाना तथा ऐसा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सम्भव होना। व्यक्ति अपने प्रयासों से भी किन्हीं स्थितियों को प्राप्त कर सकता है, यह असंभव नहीं है किन्तु यदि वह इसे सुनियोजित ढंग से करता है तो उसके समय व शक्ति के व्यय में भी लाभ मिलता है। व्यक्ति यदि चाहे तो एक स्थान से दूसरे स्थान तक साठ किलोमीटर दूर या सौ किलोमीटर दूर किसी नगर की यात्रा पैदल अथवा बैलगाड़ी से करने के लिए भी स्वतंत्र है। और यदि वह चाहे तो तीव्रतर यंत्रों-रेलगाड़ी अथवा बस के माध्यम से भी यह दूरी कुछ ही घंटों में पार कर सकता है। यह जीवन भी इस प्रकार यदि तंत्र और यंत्र से आबद्ध कर पूर्ण किया जाए तो कम समय में ही मनोवांछित सफलता प्राप्त की जा सकती है, अपना अभीष्ट प्राप्त किया जा सकता है तथा जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

और यह शीघ्रता, ये क्रमबद्ध उपाय आज के युग में तो अत्यन्त आवश्यक हो गये हैं, क्योंकि यह युग भौतिक पक्षों के साथ जीने की बाध्यता है। व्यक्ति अन्तस् से भले ही आध्यात्मिक हो किन्तु आज के युग में वह भी एक भौतिक आवरण के मध्य ही अपने जीवन को व्यतीत करता है, और इसमें कोई दोष भी नहीं है। दोष तो किसी भी स्थिति का अतिक्रमण मात्र होता है।

**जीवन की एक तंत्र है**

विश्व का सबसे बड़ा तंत्र तो मानव-शरीर और उसका जीवन है। एक जीवन में ही वह हजारों-लाखों प्रकार की क्रियाएं करता है, हजारों व्यक्तियों से मिलता है, और लाखों-लाखों विचारों के मध्य निरन्तर जीवित रह कर गतिशील होता है। ये सब इसी शरीर रूपी तंत्र से ही उत्पन्न होते हैं और इनको तंत्र के द्वारा ही सुनियोजित व सफलतापूर्वक आबद्ध किया जा सकता है। शरीर और जीवन - जिसने इस तंत्र को समझ लिया, वही सही अर्थों में तंत्र समझने का अधिकारी है। जिसने इस सीढ़ी पर पहला कदम रख लिया, वह आगे

बढ़कर दूसरा कदम भी रख देगा और धीरे-धीरे  
शिखर पर पहुंच जाएगा।

दीक्षा और तंत्र अपने-आप में दो पृथक स्थितियाँ नहीं हैं, जिसने भी तंत्र को समझने का प्रयास किया है वह दीक्षा के महत्व से अनजाना नहीं रह सकता है; और जिसने दीक्षा के महत्व को समझ लिया है, वह इस निष्कर्ष पर पहुंचता ही है कि गुरु-प्रदत्त इस ज्ञान की पूर्णता तंत्र पर जाकर होती है इन दोनों स्थितियों का जिस माध्यम से मिलाप किया जाता है उसे ही शास्त्रों में 'तंत्र दीक्षा' के नाम से सम्बोधित किया गया है। 'तंत्र दीक्षा' का तात्पर्य केवल तांत्रिक अभिचारिक क्रियाओं तक ही सीमित नहीं, वरन् 'तंत्र दीक्षा' के माध्यम से ही व्यक्ति अपने 'जीवन के तंत्र' को सुव्यवस्थित करने में सफल सिद्ध होता है।

दीक्षा शब्द मूल रूप से चार अक्षरों से बना है,  
यह शब्द है - द+ई+क्ष+आ

द- सद्यः कुण्डली, शिवा, स्वस्तिक, जितेन्द्रिय

ई - त्रिमूर्ति, महामाया, पुष्टि, विशुद्ध, शान्ति, शिवा-तुष्टि

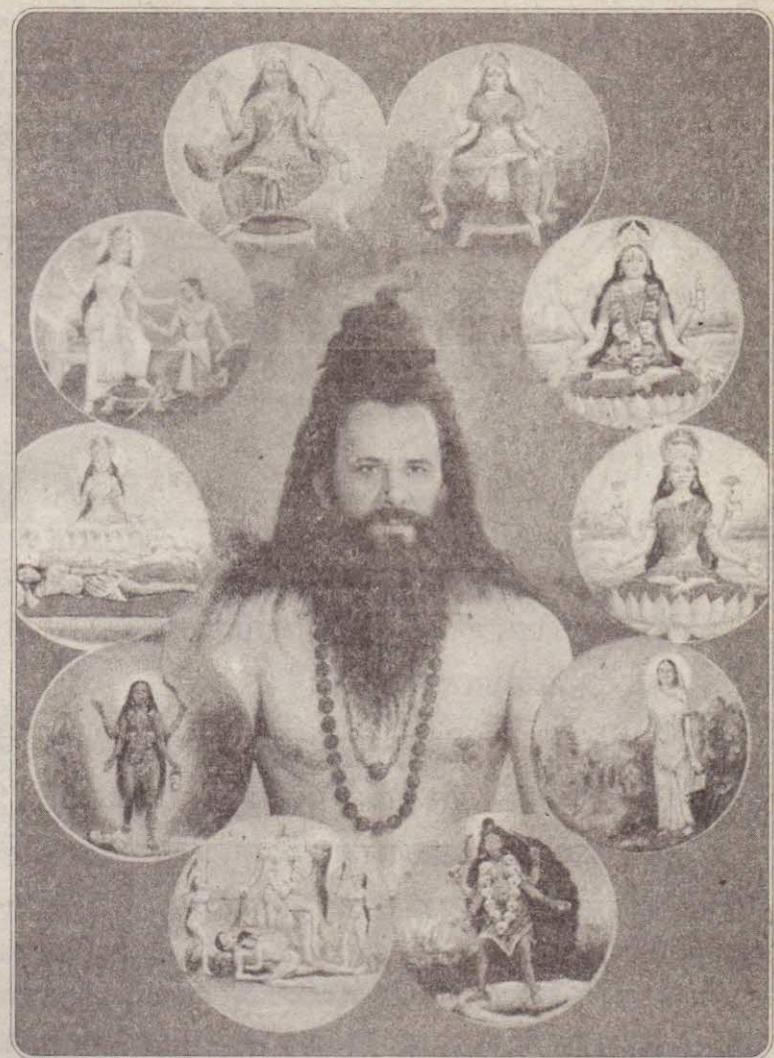
क्ष - क्रोध-संहार, महाक्षोभ, अनल-क्षय

आ - प्रचण्ड, एकज, नारायण, क्रिया, कान्ति।

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि जीवन में जो शिव और शक्ति का संयुक्त रूप है, जो महामाया, तुष्टि एवं विशुद्धता की स्थिति है और जो जीवन के मलों का संहार कर जीवन में कांति उत्पन्न करने की क्रिया है, वह दीक्षा है। वास्तव में दीक्षा ही परम ज्ञान को देने में समर्थ है व मन, वचन, कर्म, द्वारा जो पाप-दोष हो चुके हैं अथवा हो रहे हैं उन्हें नष्ट करने की क्रिया है। जिस प्रकार अन्य धातुओं से मिश्रित स्वर्ण को तपाया जाता है तो स्वर्ण अलग हो जाता है, उसी प्रकार दीक्षा रूपी अग्नि में तप कर ही साधक के अन्दर का स्वर्ण निकल कर उसे कान्तिमय बनाता है।

### स्वावलम्बी बनने की क्रिया

यह युग सही अर्थों में 'तंत्र-युग' है, तंत्र का काल है, जबकि सामान्य वैदिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन अधिक स्पष्ट नहीं रह गए हैं, साथ ही जीवन की अनेक प्रकार की समस्याओं को समाप्त करने के लिए तंत्र का आश्रय लेना ही बुद्धिमत्ता व सफलता का सूचक है। तांत्रोक्त क्रियाओं में गति अत्यन्त तीव्र आश्रित होने की बाध्यता नहीं रह जाती।



होती है एवं तांत्रोक्त दीक्षा के द्वारा पूज्य गुरुदेव अपने प्राणों का मंथन कर शक्ति के अणुओं का प्रवाह शिष्य की ओर इस प्रकार करते हैं, जिससे शिष्य के शरीर में हलचल मच जाए, उसके अन्दर शक्ति का विस्फोट प्रारम्भ हो जाए, वह निरन्तर गतिशील बना हुआ, शक्ति-युक्त बनता हुआ अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा सके। संसार में जितनी भी शक्तियाँ हैं, वे बाह्य रूप से अर्जित की हुई होती हैं और उसी पुरुष को सफलता कभी मिल पाती है, और कभी नहीं। इसके स्थान पर यदि व्यक्ति अपने ही अन्दर निहित क्रिया-शक्ति, ध्यान-शक्ति और इच्छा-शक्ति को जाग्रत करता हुआ तीनों में परस्पर सन्तुलन स्थापित करता हुआ गतिशील होता है, तो वह स्वयं ही देव तुल्य बनने में समर्थ हो पाता है और इसी क्रिया का प्रारम्भ योग सद्गुरुदेव द्वारा प्रदत्त 'तंत्र दीक्षा' के माध्यम से होता है, जिसके पश्चात् फिर व्यक्ति को अपने कार्यों की पूर्णता के लिए किसी स्थिति में किसी अन्य पर

०४५८० • भैरव ही भय का विनाश करते हैं  
• ४५९० तंत्र साधनाओं का आधार है

# भैरव साधना

जिसे सम्पन्न करने से अन्य साधनाएं सरल रूप में सिद्ध हो जाती है। भैरव साधना से जीवन की आपत्तियां, बाधाएं नष्ट होने लगती हैं। इसीलिए भैरव को आपत्ति उद्धारक देव कहा गया है।

श्री भैरव देव, भगवान शिव के अंश से उद्भूत होने के कारण उन्हें के समान सरल व सौम्य हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होकर रक्षा करते हैं। ‘भैरव की साधना’ जीवन में जहां एक ओर दिद्रिता का नाश, अभावों की पूर्ति करती है, वहां जीवन की व्याधियां कष्ट, पीड़ा और शत्रुओं से रक्षा भी करती हैं...

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है। जब तक तक की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं। यद्यपि ये साधनाएं ‘भैरव पूजन’ नहीं हो जाता, तब तक मूल यज्ञ भी प्रारम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं, और विश्व के संहारकर्ता परन्तु ‘भैरव-साधना’ कलियुग में तुरन्त फलदायक और शिव के स्वरूप तथा महाशक्ति काली के सेवक हैं, इसीलिए इन्हें ‘काल भैरव’ का नाम दिया गया है।

किसी भी गांव में चले जाइये, वहां कोई मंदिर अथवा पूजन स्थान हो या नहीं, लेकिन भैरव का मन्दिर अवश्य ही होगा। जन-जन के देवता के रूप में भैरव की ख्याति है, उनसे करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, और यह आस्था तभी बन सकती है, जब प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होते रहे हों, और लोगों के कार्य सिद्ध होते रहे हों।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रंथों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय, सर्वप्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक हैं।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों के साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं। यद्यपि ये साधनाएं शत्रु-संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली हैं, परन्तु ‘भैरव-साधना’ कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है।

अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों हाथ मिलता है, इसीलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त फल रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी प्रकार का यज्ञ-कार्य हो तो, यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है। किसी भी

प्रकार की पूजा हो, उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाएं आबद्ध हो जाती हैं, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न ही किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती हैं। ऐसा करने पर साधक

को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग-पग पर कठिनाइयाँ और बाधाएं आने लगी हैं, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे हैं, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाये या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

जीवन में सैकड़ों प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक साधना अपने-आप में महत्वपूर्ण और सारगम्भित है। साधक अपनी रुचि के अनुसार साधना का चयन करता है और उसमें सफलता प्राप्त करता है। श्रद्धा के बल पर ही वह अपने उद्देश्य में और अपनी साधना में सफल हो सकता है।

हमारा जीवन संघर्षमय जीवन है, जिसमें पग-पग पर विपत्तियों और बाधाओं का बोलबाला है, यदि हम शांतिपूर्वक जीवन बिताना भी चाहें, तब भी चारों तरफ का वातावरण ऐसा नहीं करने देता।

जीवन में सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ हों, और किसी प्रकार की टेन्शन या तनाव हमारे मानस में नहीं हों, साथ ही साथ हम इस प्रकार की समस्याओं से दूर रहकर सही प्रकार से चिन्तन कर सकें।

इसीलिए आज के युग में अन्य सभी साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद्' में 'भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए', इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका सारा मूल तथ्य निम्न प्रकार से है -

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।
2. जीवन की बाधाएं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
3. जीवन के नित्य नये कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
4. शरीर-स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।
5. आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।



जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।

शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।

जीवन में समस्त प्रकार के क्रृष्ण और कर्जों की समाप्ति के लिए।

राज्य से आने वाली बाधाओं या अकारण भय से मुक्ति के लिए।

जेल से छूटने के लिए, मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।

चोर-भय, दुष्ट-भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो, आदि के लिए भी 'काल भैरव साधना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है।

उच्च कोटि के योगी, सन्न्यासी तो भैरव साधना करते ही हैं, जो श्रेष्ठ बिजनेसमैन या व्यापारी हैं, वे भी अपने पण्डितों से

'काल भैरव साधना' सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रुचि रखते हैं, और अपने शत्रुओं पर विजय पाना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं।

मेरा यह अनुभव रहा है कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक है और महत्वपूर्ण है।

इस साधना को कोई भी साधक कर सकता है। इसमें किसी प्रकार की कोई कठिनाई भी उसको देखनी नहीं पड़ती, यह एक प्रकार से सौम्य साधना है, और किसी भी वर्ण का गृहस्थ या संन्यासी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साथ ही साथ, इस साधना की यह विशेषता है, कि इसमें कम से कम उपकरणों की जरूरत पड़ती है, और किसी प्रकार की कोई जटिल विधि नहीं है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकते हैं, इस साधना के द्वारा पति से यदि मतभेद हों तो दूर किए जा सकते हैं, और पति की दीघायु के लिए भी यही साधना सफलतादायक है।

नीचे में साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट कर रहा हूँ।

### समय

इस साधना को किसी भी महीने से प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु यह साधना शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार को ही प्रारम्भ की जा सकती है। यह साधना किस दिन समाप्त होती है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ करना जरूरी है।

### पूजन-सामग्री

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित सामग्री पहले से ही मंगवाकर रख लेनी चाहिए - एक किलो चावल, एक मीटर लाल वस्त्र, लकड़ी का तख्ता, थोड़ा सा गंधक, तांबे का एक लोटा और एक नारियल।

साधक इस प्रयोग को अपने घर में या अन्य किसी स्थान पर भी कर सकता है। सर्वप्रथम साधक अपने कमरे में एक लकड़ी का तख्ता जो एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा हो रखकर उस पर लाल वस्त्र बिछाएं तथा उस लाल वस्त्र के चारों कोनों पर चावल की चार ढेरियां तथा एक बीच में ढेरी बना देनी चाहिए।

बीच की ढेरी पर तेल का दीपक रख देना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, दीपक के सामने गंधक के पांच टुकड़े लाल वस्त्र पर रखे जाते हैं।

दीपक के पीछे तांबे का लोटा भर कर रख दें और उस पर नारियल रख दें।

गंधक के टुकड़ों के पास मंत्र सिद्ध संजीवन क्रिया से युक्त भैरव यंत्र स्थापित कर दें। यह यंत्र ताम्र-पात्र पर अंकित होता है, और विशेष संजीवन मुहूर्त में ही इस यंत्र का निर्माण किया जाता है, इसके बाद विशेष मंत्रों से इसे मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त किया जाता है, जिससे कि यह यंत्र पूर्ण सफलतादायक हो जाता है।

इसके बाद शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को प्रातः काल यह कार्य सम्पन्न करने हेतु साधक स्नान करके आसन पर बैठ जाए, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए और उसके सामने लकड़ी का तख्ता बिछा होना चाहिए, साधक को सूती या ऊनी आसन का प्रयोग करना चाहिए, पर यह असन लाल रंग का होना आवश्यक है, अथवा आसन को पहले से रंगवाकर तैयार कर लेना चाहिए।

यदि स्त्री साधक हो तो वह क्रतु धर्म से निवृत्त होने के बाद ही इस साधना को प्रारम्भ करे, इस बात का ध्यान रखें कि साधना-काल में वह रजस्वला न हो, यदि ऐसा हो जाता है, तो वह साधना सम्पन्न नहीं मानी जानी चाहिए।

साधक धोती पहन कर आसन पर बैठे और ऊपर किसी भी प्रकार का वस्त्र न पहने। वह चाहे तो दूसरी धोती ओढ़ सकता है, या ऊनी कम्बल ओढ़ सकता है।

मंगलवार के दिन प्रातः काल 7 से 9 बजे के बीच इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है यह साधना मात्र 7 दिन की है, और नित्य भैरव मंत्र की 51 मालाएं फेरनी आवश्यक हैं। इसमें मूँगे की माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, इसके अलावा अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग वर्जित है।

### साधना विधान

साधक सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों को धोकर दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करे, अर्थात् उस जल को पीकर अन्तर को शुद्ध करे, इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

**ॐ हरे बटुकाय श्रीं आपत्ति उद्धारणाय भैरव देवता  
प्रीत्ये मम अमुकं (जो काम सिद्ध करना चाहते हो उसके बारे में बाले) कर्त्य सिद्धवर्थः भैरव प्रयोग महं करिष्ये।**

ऐसा कहकर जल छोड़ दें उसके बाद विनियोग करें अर्थात् हाथ में जल लेकर निम्न पंक्ति पढ़ें -

ॐ अस्य श्री आपत्ति उद्धारक भैरव मंत्रस्य,  
बृहदारण्य कृष्णः, उनुष्टुप् छन्दः, श्री भैरव देवता:  
हीं बीजम् श्रीं शक्तिः, कलीं कीलकम् श्री आपत्ति  
उद्धारक भैरव प्रीतये जये विनियोगः ।

ऐसा कह कर के हाथ में लिया हुआ जल छोड़ दें ।

इसके बाद यंत्र के सामने हाथ जोड़कर निम्नलिखित ध्यान करें -

#### ध्यान

त्रिनेत्रं रक्तं वर्णं वरदाभव्यहस्तकम् ।  
सर्वे त्रिशूलमभवं कपालं वरमेव च ॥  
रक्तं वस्त्रं परिधानं रक्तमाल्यानुलेपनम् ।  
नीलशीर्वं च सौम्यं च सर्वाभिरणं भूषितम् ॥

इसके बाद दीपक लगाकर भैरव यंत्र के सामने हाथ में जल लेकर अपनी समस्या या आपत्ति का उल्लेख करें, कि साधना समाप्त होते-होते मेरा 'अमुक' (जो काम सिद्ध करना चाहते हो उसके बारे में बाले) कार्य सिद्ध एवं सम्पन्न हो जाए ।

इसके बाद भैरव यंत्र के सामने दूध का थोड़ा-सा प्रसाद भोग लगाएं और लाल रंग के कुछ पुष्प समर्पित करें ।

॥३५ हीं भैरवाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु  
भैरवाय हीं॥

जब 51 मालाएं पूरी हो जाएं तब आसन से उठें और भैरव यंत्र का जो भोग लगाया हुआ है, वह भोग कुत्ते को खिलां दें क्योंकि भैरव का वाहन श्वान ही होता है ।

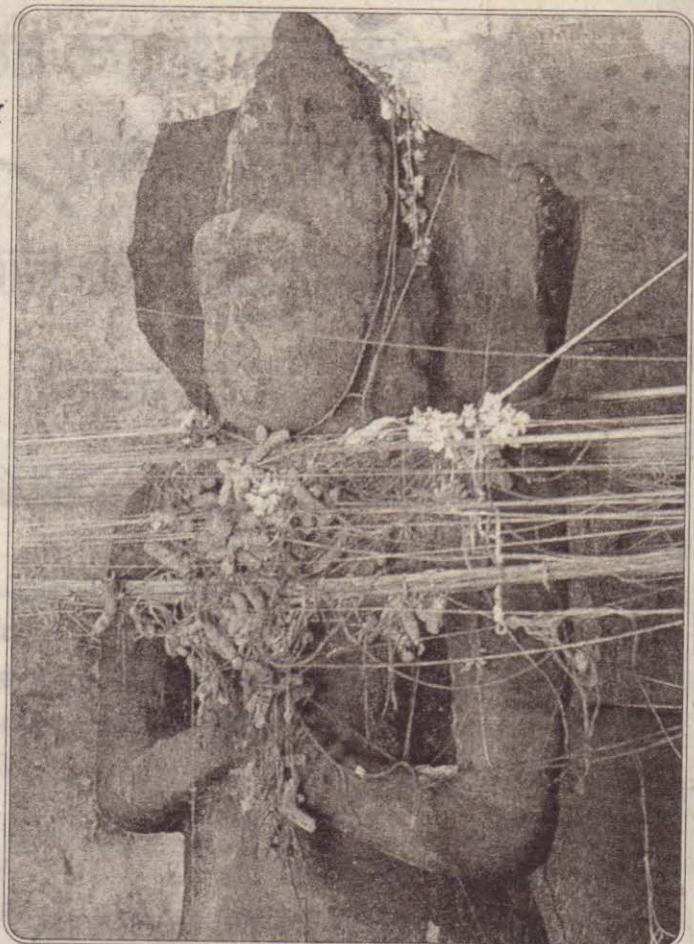
इसके बाद पुनः स्नान कर अपने नित्य कार्य में लगें ।

यह साधना सात दिन की है, इन सात दिनों में साधक जमीन पर सोए । चारपाई का प्रयोग न करें, स्त्री-संग वर्जित है, दिन में एक समय भोजन करें और मांस-मदिरा आदि का सेवन न करें । यदि साधक धूमपान करता हो तो उसे चाहिए कि वह साधना-काल में धूमपान न करे ।

इस प्रकार 7 दिन पूरे हो जाएं, तो आठवें दिन जब पुनः मंगलवार आए, तब इस मंत्र की एक माला फेरें और भैरव से प्रार्थना करें कि उसने साधना सम्पन्न की है अतः जलदी से जलदी उसका कार्य सम्पन्न हो ।

इसके बाद किसी एक बालक को अपने घर में भोजन कराएं और उसके बाद ही स्वयं भोजन करें ।

यह साधना सम्पन्न करने पर निश्चय ही साधक की कामना पूरी होती है, और जिस उद्देश्य के लिए उसने साधना प्रारम्भ चाहिए । जिससे उसी समय अनुकूलता प्राप्त हो जाए ।



की है, उसमें सफलता मिलती ही है ।

साधना-समाप्ति के बाद साधक लकड़ी के तख्ते पर बिछे हुए चावल, नारियल, लोटा एवं वह कपड़ा किसी गरीब ब्राह्मण को दान कर दें । गंधक दक्षिण दिशा में जाकर गड़दा खोदकर उसमें दबा दें । लकड़ी के तख्ते का प्रयोग बाद में घर के कार्यों में किया जा सकता है, दीपक को भी दक्षिण दिशा की तरफ जाकर रख देना चाहिए ।

इस साधना से साधक को पूर्ण सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, जिस भैरव यंत्र के सामने साधना की थी, उस यंत्र को अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर रख आये या नदी में विसर्जित कर दें ।

वस्तुतः कलियुग में यह साधना गोपनीय, महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ, शीघ्र एवं निश्चित रूप से सफलतादायक है ।

साधना सामग्री - 450/-

यह तो भैरव की मूल साधना है जिसे प्रत्येक साधक को अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये । इसके अलावा समय-समय पर भैरव के लघु प्रयोग-साबर प्रयोग भी अवश्य सम्पन्न करने चाहिए । जिससे उसी समय अनुकूलता प्राप्त हो जाए ।

# ★ — भैरव-साधना-के-तीन-विशिष्ट-प्रयोग — ★

**शुद्ध बाधा विवादण प्रयोग**

**काला भैरव चैण-जागृक प्रयोग**

**छुक्रदली कीं श्रीघ्र विजाति प्रयोग**



भैरव के अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है, वास्तव में भैरव साधना की तांत्रोक्त साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

आगे तीन प्रयोग विशेष रूप से दिये जा रहे हैं जिन्हें साधक अपनी बाधा के अनुसार अवश्य सम्पन्न करें। भैरव साधना के लिये दो दिन प्रमुख हैं, रविवार और मंगलवार। इसके अलावा प्रत्येक रविवार को ‘भैरव मंत्र’ का जप अवश्य करना चाहिये।

## 1. शत्रु-बाधा-निवारण-प्रयोग

साधना वाले दिन प्रातः साधक स्नान कर, लाल वस्त्र धारण करें, सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिठी की ढेरी बनाकर उसे पानी से धो लें, फिर उसके ऊपर सिन्दूर से तिलक करें और उस पर ‘काल भैरव गुटिका’ स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर ‘पांच आक्रान्त चक्र’ तिल की ढेरियां बना कर रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर लगाएं। अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुण्डुल का धूप तथा अगरबत्ती इत्यादि जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु-बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डालकर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मंत्र का जप करते हुए, ‘काल भैरव गुटिका’ के समक्ष अर्पित करते रहें -

### मंत्र

**विभूति भूति नाशाय, दुष्ट क्षय कारकं, महाभैरव मरत्का। छन्दः श्री बटुकः भैरव देवता, मरमेष्टित नमः। सर्व दुष्ट विनाशनं सेवकं सर्वसिद्धि कुरु। उ३ सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।**  
काल भैरव, बटुक भैरव, भूत-भैरव, महा-भैरव महा-भय विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्।

### सावर मंत्र

उ३ काल भैरव, शमशान भैरव, काल रूप काल भैरव! मेरी दैरी तेरो आहार रे, काढि करेजा चखन करो कट कट, उ३ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवताः, सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार 51 बार इस मंत्र का जप कर, पूजा में रखे, धूप और दीप से भैरव की आरती सम्पन्न करें। अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मंत्र का जप करते रहें। यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर शांत हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं।

साधना सामग्री - 210/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

## 2. काल भैरव रोग-नाशक प्रयोग

यह प्रयोग प्रातः काल में सम्पन्न किया जाता है, इसमें यदि स्वयं की बीमारी-नाश हेतु प्रयोग करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें, और यदि दूसरे के नाम से प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें।

### संकल्प

उ३ अस्य श्री बटुक भैरव स्त्रोतस्य सप्त ऋषि नमः।

अपने सामने एक पात्र में ‘काल भैरव महायंत्र’ स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं जिसमें चार

बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठें, भैरव यंत्र के सामने पुष्प, लड्डू, 'सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोरा रखें तथा मंत्र-जप प्रारम्भ करें, मंत्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुँह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें, उसमें सात सुपारी रखें तथा निम्न मंत्र का जप करते हुए ये तिल थोड़े-थोड़े कर दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें -

#### मंत्र

ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो! महाभय विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्। शोक दुःख क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णत्वं महेश। सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरवी गुनी। महात्मनः शोगिनां महादेव स्वरूपं। सर्व सिद्धयेत्। ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो। महा भैरव महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार 21 बार मंत्र जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यंत्र की पूजा में प्रयोग में लाए काले डोरे को रोगी की भुजा पर बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं।

साधना सामग्री - 260/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

### 3. मुकदमे में शीघ्र विजय का प्रयोग

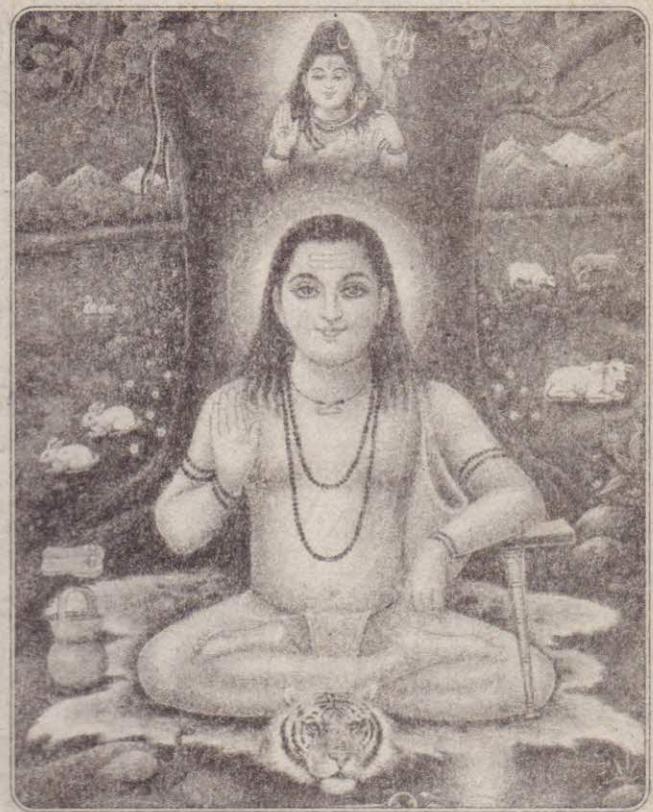
इस प्रयोग हेतु साधक सांयकाल में रविवार के दिन सम्पन्न करें, पूजा-स्थान में पूर्ण रूप से शांति होनी चाहिए तथा निस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने 'काल भैरव महाशंख' स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से घेरा बना दें, सामने एक 'नागचक्र' स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन, तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मंत्र-जप प्रारम्भ करें-

#### मंत्र

ॐ आं हीं हीं हीं (अमुक) उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वर्थकस्य सिद्धि रूपं



त्वं महाकाल! काल भक्षणं महादेव स्वरूप त्वं। सर्व सिद्धयेत्! ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव। महा भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवेत्।

51 बार मंत्र-जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर बैग, ब्रीफकेस में रख दें और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत हो कर संथित करने के इच्छुक हो जाता है, मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मंत्र-जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर, ही जान सकते हैं कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है!

काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, और तब साधक की शक्ति में वृद्धि हो कर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है।

काल भैरव के ये प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले, तब तक आगे के सात रविवार तक मंत्र-अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना सामग्री - 300/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

भगवान् चैक्ष द्यास्य नौं श्रीमद्भुषणलता में लिखा है

कलियुग में

च०ठी (दुर्गा) और गणपति  
शीघ्र साध्य होंगे

दुर्गा गणपति का सायुज्य



# श्रीदावेद गणपति

जो प्रकृति का बक़वान है औक श्वेतआक तो पवित्रतम माना गया है,  
जिसका क्षर्ष मात्र श्रेष्ठतम है औक यदि इसकी विधिवत् काधना की जाए तो  
जीवन में शक्ति औक अमृद्धि का आधार बनता है -

जीवन की दो अत्याथशयक काधनाओं को कंयुक्त व क्वलतम ढंग के  
प्रकृत अवता विशिष्ट लेक्ष।

जगत में आदि देव, जगत के मूल सृष्टिकर्ता एवं नित्य गणपति रहस्य

स्वरूप भगवान गणपति ही तो हैं, जो लीला को व्यक्त करने के लिए भिन्न-भिन्न स्वरूपों में अवतरित होते ही रहते हैं। भगवान् श्री गणपति के आठ अवतार एवं बत्तीस स्वरूप कहीं वे देवताओं के अनुरोध पर मां भगवती पार्वती के गर्भ से उत्पन्न बताये गए हैं, तो कहीं उनको मां भगवती पार्वती के शरीर के उबटन से निर्मित कहा गया है और कहीं उनको 'योग-पुत्र' की संज्ञा दी गई है। उनके गजानन होने की कथा भी सर्व विदित है कि वे आदि ब्रह्म हैं, अँकार स्वरूप हैं तथा इसी कारणवश शास्त्रों में उनकी उत्पत्ति की कथाओं को प्रमुखता न देकर उनके उन स्वरूपों को वर्णित किया गया है, जिनमें वे होने के कारण ही नहीं वरन् इससे भी अधिक उनके पर-अपने भक्तों के प्रति कृपालु व वरदायक हैं।

भगवान् श्री गणपति का ध्यान व पूजन केवल उनके साधक भगवान् श्री गणपति का ध्यान व पूजन केवल उनके प्रथम पूज्य होने के कारण ही नहीं, अथवा विघ्न-विनाशक ब्रह्म-स्वरूप होने के कारण करते हैं तथा, उनके उस स्वरूप

को प्रणाम करते हैं जो अचिन्त्य है और जो उँकार स्वरूप है। गणपत्यर्थीष्ठ उपनिषद में वर्णित है कि भगवान् श्री गणपति का ध्यान करने वाला योगी निःसंदेह उच्चकोटि का योगी ही होता है। उसे विविध स्वरूपों, विविध रंगों से आलोकित स्वरूपों अथवा भिन्न-भिन्न वर्णों से भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह तो उनकी लीला का विस्तार मात्र है। जबकि योग्य-साधक उनके मनोनुकूल स्वरूप का चयन करके या यों कहा जाए कि उनके विशिष्ट स्वरूप की धारणा मन में पृष्ठ करते हुए साधना विशेष को सम्पन्न कर लाभ प्राप्त करते हैं।

उनका गजवदन स्वरूप एवं मूषक वाहन पौराणिक कथा से भी अधिक इस बात को सूचित करने वाला है कि इस मन को, जो मूषक की भाँति ही चंचल है, उस पर गज के समान गाम्भीर्य रखकर ही नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। भगवान् श्री गणपति के अनेक स्वरूपों में जहां महागणपति, विजय गणपति, उच्छिष्ट गणपति इत्यादि हैं, वहीं एक महत्वपूर्ण स्वरूप दुर्गागणपति का भी है जो इस तथ्य को सुस्पष्ट करता है, कि वास्तव में गणपति एवं दुर्गा का समन्वय ही साधना की पूर्णता है।

साधनाओं की चर्चा की जाए; और दुर्गा साधना का उल्लेख न हो ऐसा संभव ही नहीं। दुर्गा-साधना के अभाव में, शक्ति की अनुपस्थिति में कोई साधना पूर्ण हो भी कैसे सकती है? शक्ति-साधनाओं की चर्चा आरम्भ होने पर स्वतः ही दस महाविद्याओं का नाम जिह्वा पर आ जाता है, किन्तु इन साधनाओं के मूल में जो साधना है जहां से सभी साधनाएं प्रवाह ले रही

श्वेतार्कं मूर्तं पुष्ट्यार्कं समुद्भृत्य विद्यरथेत् ।  
बाहुभ्यां धारणात्तस्य तृनिष्ठानि विशेषतः ॥  
तदर्शनेन नश्यन्ति डाकिनीप्रेतदानवाः ।  
तद्धूर्षेन यत्तायन्ते प्रेताद्या दूरतो ध्रुवम् ॥  
(डामर तंत्र से)

केवल श्वेतार्क की जड़ में प्राप्त प्रकृति-निर्मित गणपति विग्रह ही नहीं, यदि श्वेतार्क की जड़ या उसका कोई अंश भी प्राप्त हो जाए तो वह भी तंत्र ग्रंथों में महत्वपूर्ण मानी गयी है। संयोग से जब कभी रवि-पुष्य नक्षत्र हो तब ऐसे श्वेतार्क की जड़ उखाड़ कर उसे बांह में धारण करने से कई प्रकार के अनिष्ट समाप्त हो जाते हैं और ऐसे व्यक्ति से डाकिनी, प्रेत, दानव दूर ही रहते हैं। ऐसे जड़ की धूप देने से घर में प्रेत-बाधा भी समाप्त होती है।



है, वह दुर्गा साधना ही है। दुर्गा मां भगवती जगदम्बा का ही ऐसा स्वरूप है जो अपनी सम्पूर्णता के साथ वरदायक व तीव्र दोनों ही है। दस महाविद्या साधना जहां जीवन के एक-एक पक्ष को लेकर प्रबल है, या विशेष रूप से निर्धारित है वहीं दुर्गा समस्त महाविद्याओं के स्वरूप को बीज रूप में अपने में समाये है सम्पूर्ण रूप से फलप्रद। यह एक अधूरी धारणा है कि दुर्गा की साधना केवल शक्ति-साधना के रूप में ही की जा सकती है।

### दुर्गा शक्ति आवश्यक

प्रत्येक साधक की इच्छा रहती ही है, कि वह जीवन में एक बार मां भगवती जगदम्बा का साक्षात् अवश्य करे क्योंकि बिना जगदम्बा का साक्षात् किए, बिना शक्तिमय हुए, तंत्र के क्षेत्र में जाने की आकंक्षा व उन्नति संभव ही कहां? जीवन में उच्चकोटि की साधनाओं में सफल होने के लिए, उच्चकोटि का योगी या संन्यासी बनने के लिए भी शक्ति की साधना मां भगवती जगदम्बा का साक्षात् दर्शन अनिवार्य है और दुर्गा-साधना में ही जगदम्बा साधना की सफलता का गुद्य सूत्र छुपा है। बिना दुर्गा-साधना को सिद्ध किए, साधक न तो जगदम्बा का साक्षात् कर सकता है, न जीवन के दुःख-दैन्य को मिटा सकता है, न किसी प्रकार से कोई भी उन्नति कर सकता है, क्योंकि जब तक उनके पास दुर्गाति-विनाशक दुर्गा

का सहारा नहीं होगा तब तक वह उस मानसिकता में पहुंच ही नहीं पाता कि आगे की साधनाओं, जीवन की श्रेष्ठ स्थितियों के विषय में चिन्तन भी कर सके।

### दुर्गा-गणपति से दरिद्रता नाश

दरिद्रता केवल वहीं तक सीमित नहीं होती, कि व्यक्ति धन, ऐश्वर्य, सौन्दर्य से हीन है, वरन् उसके पश्चात् इससे निर्धारित होता है कि व्यक्ति अपनी मानसिकता से जीवन में किस स्थान पर खड़ा है? यदि सब कुछ होते हुए भी उसके जीवन में सुख-संतोष की अनुभूति नहीं है, धन का सदुपयोग करने की चेतना नहीं है, किसी को कुछ प्रदान करने की भावना नहीं है या आगे बढ़कर उच्चकोटि की साधनाओं में सफल होने की ललक नहीं है, तो वह भी जीवन की दरिद्रता ही है। यह सत्य है कि दैनिक जीवन के अभाव कभी व्यक्ति को उस रूप में एकाग्र होने ही नहीं देते कि वह अपने मानस को किसी एक बिन्दु पर या किसी उच्च चिन्तन पर एकाग्र कर सके, और बिना एकाग्रता अथवा निश्चिन्तता के साधना में सफल भी नहीं हो सकते। व्यक्ति जब तक एक बिन्दु पर खो जाने की कला नहीं जान लेता, साधना के पीछे अपने सारे अस्तित्व को नहीं भुला लेना, सोते-जागते, उठते-बैठते उसी के चिन्तन में लीन नहीं रहने लगता तब तक सफल हो भी कैसे सकता है?

प्रस्तुत साधना-गणपति-साधना-युक्त होनें के कारण इन दोनों ही प्रकार की स्थितियों का निराकरण भली-भाँति करती है। जो साधक धन-अभाव के कारण या दैनिक जीवन की अड़चनों के कारण गतिशील न हो पा रहे हों या जो सभी प्रकार से सुखी, सन्तुष्ट, सम्पन्न होते हुए भी साधना के क्षेत्र में प्रारम्भिक सफलता भी न पा रहे हों, दोनों को ही आगे बढ़ने के लिए मार्ग देती है और यदि साधक इस साधना को अपने दैनिक जीवन का एक स्थायी अंग बना लेता है, तो यह नियमित करनी ही चाहिए।

निरन्तर उसके राह में आने वाले कांटों को भी दूर करती ही है।

### दुर्गा गणपति-श्वेतार्क गणपति

यह साधना विशेष रूप से तीन बुधवारों की ऐसी साधना है, जिसमें 'दुर्गागणपति' की स्थापना कर, उन्हीं की साधना व मंत्र-जप किया जाता है। दुर्गागणपति का निर्माण अर्थात् दुर्गा से संयुक्त गणपति को स्वतः प्रकृति ने मनुष्य को प्रदान किया है और प्राकृतिक रूप से यह जिस विग्रह में प्राप्त होती है उसका नाम 'श्वेतार्क गणपति' है। प्रकृति में कभी-कभी संयोगवश दुर्लभ रूप से सफेद आके पौधे मिल जाते हैं और ऐसे दुर्लभ सैकड़ों पेड़ों में से कहीं किसी एक पेड़ में, उसकी जड़ में स्वतः निर्मित गणपति विग्रह प्राप्त होते हैं। प्रकृति द्वारा निर्मित होने के कारण इन्हें शक्ति-सम्पन्न माना गया है, और ऐसे ही विग्रह पर यह प्रस्तुत साधना सफलता पूर्वक की जा सकती है।

#### साधना विधान

ऐसे विग्रह को प्राप्त कर किसी भी बुधवार की प्रातः ताम्रपात्र में स्थापित कर उनको शुद्ध धी-मिश्रित सिन्दूर से तिळक कर, लाल कनेर के पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत एवं दूर्वादल से पूजन कर एक बड़ा धी का दीपक स्थापित करें। जिसमें सुगन्धित द्रव्य की कुछ बूंदें अवश्य ढाल दें। इसके पश्चात् 'रक्त स्फटिक माला' से उपरोक्त विग्रह को दुर्गा व गणपति का साक्षात् स्वरूप मानते हुए दोनों के संयुक्त बीज मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करें।

#### मंत्र

॥३५ दुं गं कार्य सिद्धये श्वेतार्क गं दुं फट॥

मंत्र-जप के उपरान्त इस दुर्लभ विग्रह को अपने पूजा-स्थान में स्थापित कर सकते हैं। यह तीन बुधवारों की साधना सम्पन्न करते रह सकते हैं। विशेष रूप से जिनके इष्ट गणपति हों अथवा जिनकी इष्ट भगवती दुर्गा हों उन्हें तो यह साधना नियमित करनी ही चाहिए।

साधना सामग्री - 600/-

# ॐ शंखार वर्गी विलक्षणा द्वौर सिद्धिद्वायवृ शाधना

## ऋद्धि-सिद्धि अजुष्टाकृत्साधना



सर्वमंगल गणपति तो स्वयं विघ्नों को दूर करने वाले और पूर्णता देने वाले देवता हैं, और उनकी भायाएं 'ऋद्धि' और 'सिद्धि' हैं, जो सम्पूर्ण वैभव, यश, प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली हैं। जिस घर में इन दोनों महादेवियों की स्थापना होती है, वहां स्वयं गणपति साक्षात् स्वरूप में उपस्थित रहते हैं।

पर दुर्भाग्य वश 'ऋद्धि-सिद्धि साधना' सर्वथा लोप ही हो गई है। योगीराज चेतनानन्द जी ने गणेश उपनिषद् के श्लोकों का पूर्ण अन्वय कर इस दुर्लभ साधना को प्रकट किया है, जो कि वास्तव में सिद्धिप्रद, महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना है।

इस गोपनीय साधना को पूर्ण प्रमाणिकता के साथ पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है जबकि इस बार दिनांक २१ जनवरी २००६ को वृद्धि योग के साथ अनुराधा नक्षत्र में ऋद्धि सिद्धि साधना दिवस है, इस दिन साधना को सम्पन्न कर हम जीवन की पूर्णता, सफलता, ऐश्वर्य एवं श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

गणपति स्वयं ज्ञान और निर्वाण को देने वाले हैं। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में कहा गया है, कि गणपति ही एकमात्र ऐसे देवता हैं, जो सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने वाले हैं। 'लिंग पुराण' में भी सभी देवताओं पर विचार करने के बाद यही निर्णय बताया है, कि जीवन में पूर्ण सफलता गणपति और ऋद्धि-सिद्धि के माध्यम से ही संभव है।

मैं यहां गणपति के बारे में ज्यादा विवेचन न कर इस साधना का मूल तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं।

कुछ समय बाद इन दोनों पत्नियों से एक-एक पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम रखा गया 'शुभ' और सिद्धि से जो पुत्र पैदा हुआ, उसका नाम 'लाभ' रखा गया, इस प्रकार शुभ-लाभ, सर्वमान्य बताया है, कि जीवन में पूर्णता और सफलता देने वाला बन गया।

शास्त्रों में कहा गया है, कि जो गृहस्थ हैं, और अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता और सफलता चाहते हैं, उनको अवश्य ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

### ऋद्धि-सिद्धि

गणपति स्वयं बुद्धि सागर और उच्चकोटि के ज्ञानी थे। जब ग्रंथों को टटोल कर, गणेश उपनिषद् के श्लोक की सूक्ष्म गणपति वयस्क हुए, तो विश्वकर्मा विश्वरूप की दो लड़कियों मीमांसा कर, इस साधना को स्पष्ट रूप से कहा है - 'ऋद्धि-से गणपति का विवाह होना निश्चित हुआ, इन दोनों कन्याओं सिद्धि साधना ही जीवन की पूर्णता है।'

में से एक का नाम 'ऋद्धि' और दूसरी का नाम 'सिद्धि' था।

इन दोनों ही कन्याओं से विवाह होने के उपरान्त, जहां पर भी ये दोनों कन्याएं होती हैं, वहीं गणपति का वास होता है। विश्वकर्मा तो स्वयं समस्त भोगों को प्रदान करने वाले और जीवन में पूर्णता देने वाले देव हैं, इसलिए इन दोनों की साधना से भोग एवं सुख प्राप्त होता है।

यह साधना अत्यन्त ही सरल है, और कोई भी पुरुष या स्त्री, विवाहिता अथवा अविवाहिता इस साधना को सम्पन्न कर सकती हैं। कुंआरी कन्याओं द्वारा इस प्रयोग को करने से शीघ्र सुन्दर मनोवांछित वर की प्राप्ति होती है। विवाहिता स्त्रियों इस प्रकार की साधना सम्पन्न कर पूर्ण पारिवारिक कहते हैं कि ऋद्धि-सिद्धि साधना करने से भूमि-लाभ, और गृहस्थ सुख प्राप्त करती हैं। पुरुष इस साधना को सम्पन्न कर, व्यापार में वृद्धि और पूर्ण आर्थिक उत्तरि प्राप्त करने में होने की क्रिया उसी दिन से शुरू हो जाती है।

कहते हैं कि विद्यार्थी इस साधना को सिद्ध करें तो उन्हें सक्षम हो पाते हैं। विद्यार्थी इस साधना को सिद्ध करें तो उन्हें

परीक्षा में सफलता और श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त होती है। इस साधना को सिद्ध करने से घर में भगवान गणपति और ऋद्धि-सिद्धि का स्थाई निवास हो जाता है। साधुओं ने इस साधना को सिद्ध कर जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त की है। अखण्ड सौभाग्य के लिए और उत्तम कोटि की पुत्र-प्राप्ति के लिए इस साधना को सम्पन्न किया जाता है, जिनके सन्तान नहीं हो रही हो या जिन्हें पुत्र-प्राप्ति की इच्छा हो, उन्हें अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए।

### साधना-विधान

यह एक दिन की साधना है। स्त्रियां यदि साधना करती हों, तो सुबह स्नान कर अपने बालों को धो लें और उसके बाद ही साधना में भाग लें, यदि सम्भव हो तो पति-पत्नी दोनों ही इस साधना में भाग ले सकते हैं। कुआरी कन्याएं अपने सिर के बालों को धोकर योग्य वर-प्राप्ति के लिए इस साधना को सम्पन्न कर सकती हैं।

सर्वथा शुद्ध और पवित्र हो कर, पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर पीले आसन पर बैठ जाएं, सामने 'गणेश जी का चित्र' स्थापित कर दें। फिर लकड़ी का बाजोट अपने सामने बिछावें और उस पर पीला वस्त्र बिछा दें, बाजोट पर एक थाली रखें। इसके बाद थाली के मध्य में एक स्वस्तिक बनावें, और उसके चारों तरफ एक-एक स्वस्तिक केसर से अंकित करें।

इसके बाद ब्रह्मवैर्त पुराण के अनुसार मंत्रसिद्ध 'गणपति पंचानन' की स्थापना करें। (इसमें 1.गणपति विश्राम, 2.ऋद्धि, 3.सिद्धि, 4.शुभ गुटिका और 5.लाभ गुटिका होते हैं।) इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि ये सभी शास्त्रमतानुसार मंत्र-सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायक्त होने चाहिए।

इसके बाद मध्य में स्वस्तिक पर चावलों की ढेरी बनाकर गणपति को स्थापित करें, गणपति के बांहें और 'ऋद्धि' और दाहिनी और 'सिद्धि' को स्थापित करें, गणपति के ऊपर बने हुए स्वस्तिक के सामने, चावलों की ढेरी बनाकर उनके ऊपर 'शुभ गुटिका' और 'लाभ गुटिका' को स्थापित कर दें।

इसके बाद सामने 5 धी के दीपक और 5 अगरबत्तियां जलावें और फिर पहले से ही 105 पुष्प मंगवाकर रख लेने चाहिए, पूरे परिवार के लिए 105 पुष्प पर्याप्त हैं, पर एक बार पुष्प चढ़ाने के बाद उसी पुष्प को दोबारा नहीं चढ़ाया जा सकता।

इसके बाद निम्न मंत्रों से प्रत्येक विश्राम पर 21-21 पुष्प, 21 बार मंत्र बोलते हुए चढ़ावें -

**गणपति:** उ३५ जं गणपतवै नमः - इस मंत्र से भगवान गणेश पर 21 पुष्प चढ़ायें।

**ऋद्धि:** उ३५ हेम वण्णवै ऋद्धवै नमः - इस मंत्र से ऋद्धि पर 21 पुष्प चढ़ायें।

**सिद्धि:** उ३५ सर्वज्ञान भूषितवै सिद्धवै नमः - इस मंत्र से सिद्धि पर 21 पुष्प चढ़ायें।

**लाभः** उ३५ सौभाग्यप्रदायक धन-धान्य वुक्तावै लाभवै नमः - इस मंत्र से 21 पुष्प लाभ पर चढ़ायें।

**शुभः** उ३५ पूर्णवै पूर्णमिदावै शुभवै नमः - इस मंत्र से शुभ पर 21 पुष्प चढ़ायें।

इस प्रकार पांचों पर पुष्प चढ़ा कर, फिर जल को छिड़क कर स्नान करायें और सभी का केसर से तिलक करें, इसके बाद सभी को एक साथ लड्डू का भोग लगायें और निम्न स्तोत्र का 21 बार पाठ करें।

कामेश्वरीं महालक्ष्मीं ब्रह्माण्ड - वश - कारिणीम्।

सिद्धेश्वरीं सिद्धिदात्रीं शत्रूणां भव दायिनीम्॥

ऋद्धि देवीं पीत-वस्त्रां उद्यत-भानु सम-प्रभाम्।

कुल देवीं नमामि त्वां सर्व-काम-प्रदां शिवाम्॥

सिद्धि-स्त्रेण देवी त्वां विष्णु प्राण-वल्लभाम्।

काली-रूप-धृतां उद्ग्रां रत्न-बीज-निपातिनीम्॥

विद्या-रूप-धरां पुण्यां शुभ लाभ प्रद स्थिताम्।

दुर्गा-रूप-धरां पुण्यां शुभ लाभ प्रद स्थिताम्॥

मूषक वाहना रूढां सिंह-वाहन-संवृताम्।

ऋद्धि सिद्धि, महादेवि पूर्ण सौभाग्यं देहि मे॥

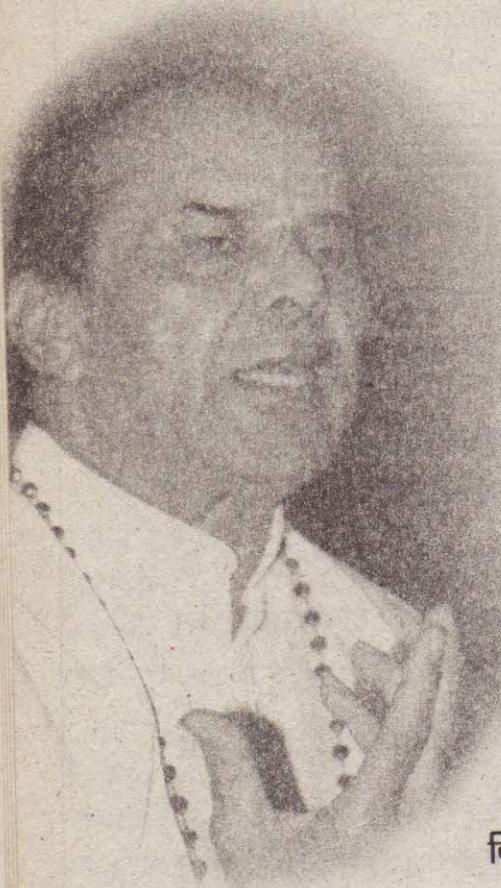
इस स्तोत्र के 21 पाठ करने आवश्यक हैं। जब पाठ समाप्त हो जाए, तो घर में गुड से बनी हुई मिठाई, जैसे - हलवा वगैरह बनायें, दूध की खीर बनाकर गणेश पंचानन को भोग लगायें, फिर पूरे परिवार के साथ बैठ कर भोजन करें, इस अवसर पर अपने इष्ट मित्रों को भी भोजन के लिए बुलाया जा सकता है। विविध व्यंजनों का भोग लगा कर भगवान गणपति की आरती करें और यथोचित घर की बेटियों और बहुओं को भेंट आदि दें।

यह साधना गृहस्थ जीवन गणपति ऋद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ को स्थायी रूप से स्थापित करने की साधना है। और जिस घर में ऐसी श्रेष्ठ शक्तियां स्थापित होती हैं। वह घर पूर्ण आनन्द से युक्त हो जाता है।

# शिष्य छार्मी

- ❖ एक शिष्य के लिए समय मूल्य नहीं रखता। उसके लिए तो महत्व इस बात का है कि गुरु क्या आज्ञा उसे देते हैं और वह कैसे उस आज्ञा का पालन करता है। जो गुरु कहे, वह करे तो वह शिष्य है। तर्क वितर्क अच्छे शिष्य का लक्षण नहीं है।
- ❖ एक शिष्य को चाहिए कि वह अपने हृदय को, मन को इतना शुद्ध और दिव्य बना दे, जिससे गुरु उसमें स्थापित हो सके, इतना चैतन्य बना दे कि बाहर की दृष्टिं हवाएं उस पर असर नहीं कर पाएं, उस पर जीवने के विकारों का कोई प्रभाव न हो।
- ❖ आत्मस्य, द्वेष, क्रोध, असत्य भाषण ये शिष्य को समाप्त कर देते हैं। इनसे बचना और इन पर विजय प्राप्त करना हर शिष्य का धर्म है, कर्तव्य है।
- ❖ दिन भर गुरु-कार्य में जुटे रहना, गुरु का चिंतन करते रहना और अगर कोई गलती हो गई है तो गुरु के सामने प्रायशिचत कर देना, यह शिष्य के जीवन की उच्चता है।
- ❖ शिष्य की आंखें गुरु के सामने नमन हों, उसमें श्रद्धा भाव हो, उसकी आंखों में प्रेम का भाव हो और समर्पण का भाव हो।
- ❖ जो फलदार वृक्ष होता है, वह सबसे पहले झुकता है, जो सूखी हुई लकड़ी होती है, वह तूंठ की तरह खड़ी रहती है। शिष्य का गुरु के आगे झुकना यह प्रमाण है कि उसमें प्रेम है, श्रद्धा है, समर्पण है।
- ❖ यह आवश्यक नहीं, आप मिठाई लेकर के और फूलों का हार लेकर के गुरु से मिलें। गुरु से मिलें तो आपकी आंखों में प्रेम के अश्रु हों, हृदय गदगद हो, कंठ अवरङ्घ हो और आपका मन गुरु के चरणों में समर्पित हो।
- ❖ गुरु के पास होना शिष्य के जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है। यह शिष्य का कर्तव्य है कि उन सौभाग्य के क्षणों को पहचाने और गुरु से कुछ अद्वितीय ज्ञान प्राप्त करे, अन्यथा यह तो वैसा ही होगा कि हम समुद्र किनारे आएं और धौंधे, सीपियां उठा कर ले आएं।
- ❖ केवल 'गुरुदेव! गुरुदेव!' कहने से व्यक्ति शिष्य नहीं हो जाता। वह शिष्य होता है पूर्ण समर्पण द्वारा, गुरु-सेवा द्वारा। गुरु-सेवा के माध्यम से ही शिष्य का नाम गुरु के हृदय पटल पर अंकित हो जाता है।

# गुरु व्यापरी



★ जिस प्रकार से एक लोटे का जल समुद्र में डाल दिया जाता है, तो वह लोटे का जल भी समुद्र बन जाता है, ठीक उसी प्रकार जब सामान्य शिष्य गुरु की सेवा करता हुआ उनसे एकाकार हो जाता है, तो वह पूर्ण गुरुमय बन जाता है। इस गुरुमय बनाने की क्रिया को ही सिद्धि कहते हैं।

★ गुरु तो बहुत दूर की देखता है। वह देखता है कि शिष्य को जीवन की पगड़ण्डी पर कहाँ रखड़ा करना है, और जहाँ रखड़ा करना है, उसके लिए आज इसको कौन-कौन सी आझ्ञा देनी है। इसलिए शिष्य को आझ्ञा-पालन में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

★ शिष्य तो वह है, जिसकी मन में हर समय यही इच्छा हो, कि मैं गुरु के पास ढौङ्कर पहुंच जाऊं। हो सकता है कोई मजबूरी हो, नहीं जा सके, यह अलग चीज है, मगर मन में उत्कर्ष हो, तीव्र इच्छा हो, छटपटाहट बनी रहे कि उसे हर हालत में गुरु के पास पहुंचना है।

★ गुरु से प्राणगत सम्बन्ध होना चाहिए, देहगत नहीं। यदि यहाँ गुरु की तबियत ठीक नहीं है, ...और आपका मन बड़ा बैचेन होता हो, बड़ी छटपटाहट महसूस होती हो, ऐसा लगे कि कुछ

खाली-खाली सा है और मालूम नहीं होता कि यह वेदना क्यों है?, यह छटपटाहट क्यों है?, किस कारण से है?... यही तो प्राणगत और आत्मा के सम्बन्ध होते हैं।

- ☆ ...परन्तु गुरु से प्रेम का रास्ता आसान नहीं है, यह तो तलवार की एक धार है, जिस पर चलने से पैर लहूलुहान हो जाते हैं। ऐसी पगड़पड़ी नहीं है, जिसके नीचे पुष्प बिछे हों। प्रेम करना तो बहुत कठिन है, तकलीफदायक है। पूर्ण हृदय से प्रेम करने की क्रिया बिरले को ही आ पाती है।
- ☆ प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम के रस में भीगेंगे नहीं, ईश्वर, की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता... और यह अंदर उतर कर प्रभु से साक्षात् करने की क्रिया ही तो प्रेम है।
- ☆ यदि कोई शिष्य चाहे कि मैं गुरु को हृदय में समेट लूं, गुरु को अपने में आत्मसात् कर लूं, और यदि उसके हृदय में प्रेम की सरिता नहीं है, यदि उसके हृदय में प्रेम-रस नहीं है, तो वह अपने जीवन में, अपने हृदय में गुरु को उतार ही नहीं सकता।
- ☆ जुदाई तो अपने आप में एक तपस्या है, किसी का इंतजार करना अपने आप में पूर्ण साधना है। किसी को याद करना, किसी के चिंतन में डूबे रहना अपने आप में ईश्वर की साधना है।

14 जनवरी 2009

# प्राणश्चेतना का उच्चतम पर्व महिला सशक्तिप्रदान

जिस दिन सूर्य-साधना सम्पन्न करें  
लायें अपने जीवन में तेजस्विता

भारतीय सभ्यता और साधना की जन्म-स्थली को यदि हिमालय की गोद कहा जाए, तो संभवतः कोई अनुचित कथन नहीं होगा। सुविशाल हिमालय पर्वत की छाया-तले बैठकर ही हमारे ऋषि-मुनियों ने चिंतन-मनन किया, इसके स्पष्ट प्रमाण है। कालांतर में यहाँ से जीवन और ज्ञान की जो धारा बही, वहाँ गंगा एवं यमुना नदी के किनारे-किनारे आर्य-सभ्यता के रूप में स्थापित हुई - यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है।

यही कारण है, कि हमारा सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य प्रकृति-प्रेम से ही भरा हुआ है और उसी की जो सूक्ष्म समृतियां आज तक प्रत्येक भारतवासी के मन में हैं, वे उसे सहज ही हिमालय की उपत्यकाओं, गुहाओं, कंदराओं एवं वनों की ओर आकर्षित करती ही रहती हैं। हिमालय एवं हिमालय के चरण तले स्थित समस्त भूभाग हमारे लिए भूमि का एक टुकड़ा ही नहीं वरन् हमारे पूर्वजों का निवास-स्थान, चिंतन-मनन की भूमि होने के कारण यज्ञस्थल के समान ही पवित्र और श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाने योग्य है।

यह तथ्य, कि साधनाओं का जन्म मुख्य रूप से हिमालय की तराई वाले प्रदेश में ही हुआ, इसका प्रबल प्रमाण यह है, कि किसी भी हिन्दू के उत्सवपूर्ण जीवन का दीपावली के उपरांत एक प्रकार से अवसान हो जाता है, जो पुनः माघ माह में पढ़ने वाले पर्व मकर संक्रान्ति से जाग्रत हो जाता है।

यद्यपि इन तीन माह में भी वे ऋषि-मुनि सर्वथा प्रसुप्त नहीं हो जाते थे, वरन् आध्यात्मिक जीवन से संबंधित, कुण्डलिनी जागरण से संबंधित उच्चकोटि की गहन क्रियाएं करते ही रहते थे। हिमाच्छादित प्रदेशों में रहने के कारण कार्तिक शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ कर, प्रायः माघ की अमावस्या तक उनका जीवन प्रकृति में एकान्तवास से भरा हुआ होता था तथा माघ माह की शुक्ल पक्ष के आरम्भ के साथ ही साथ शीत की भीषणता में कमी आने से पुनः उनका उल्लासमयता का मूल स्वभाव भी जाग्रत हो उठता था।

इसी तथ्य को इस प्रकार से भी देखा जा सकता है, कि उन्होंने वस्तुओं के जो भेद किए, उनमें से अधिकांश शीत क्रतु के ही विभिन्न भेदों से सम्बन्धित हैं, यथा-ग्रीष्म, वर्षा,

हेमंत, शिशिर, शरद एवं वसंत। इनमें से चार भाग अर्थात् हेमंत से वसंत तक क्या शीत ऋतु के ही विभिन्न चरण नहीं?

ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था, कि जब प्रचंड शरद ऋतु के उपरात भगवान् सूर्य के दर्शन हों, तो उनमें नवजीवन और आङ्गाद का संचार हो। यद्यपि ऊपर मैंने ऋतुओं के अनुसार भेद किए हैं, किंतु हमारे पूर्वज, जो मुख्यतः प्रकृति-पूजक ही थे, उनकी गणना सूर्य की गति से होती थी तथा वे अपनी विशिष्ट गणना-पद्धति से यह पूर्वानुमान कर लेते थे, कि कब सूर्य का मकर राशि में संक्रमण होगा और वही अवसर उनके लिए नववर्ष का होता था।

किन्तु इन सभी बारों से यह निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए, कि वे कोई सर्वथा जड़ एवं आसमान के तारों को देखकर निष्कर्ष निकाल लेने वाले कोई अज्ञानी व्यक्तित्व थे; जैसा कि पाश्चात्य 'विद्वानों' ने उन्हें चरवाहा एवं वेदों को 'गढ़रियों के गीत' कह कर निन्दित किया है, और उनकी यही छवि प्रस्तुत की है। यदि वे जड़ व्यक्तित्व होते, तो सूर्य के संक्रमण के आधार पर दिवस न निर्धारित करते वरन् उन्हीं 'विद्वानों' की भाँति 31 दिसम्बर की रात्रि ही नववर्ष निर्धारित कर, पशुत्व प्रदर्शन कर 'हैप्पी न्यू ईयर' मना लेते, भले ही उस समय प्रचंड शीत पड़ रही हो या हिमपात हो रहा हो।

इसी विभेद के कारण, स्वयं को प्रकृतिमय बना देने के कारण ही साधनाओं में सौम्यता होती है और इसी कारणवश यदि हम मकर संक्रान्ति को अपना नववर्ष मानें, तो कोई अनुचित बात भी नहीं। मैं तो यह धारणा भी प्रस्तुत करना चाहता हूँ, कि यह संभव नहीं कि प्राचीन भारतीय पद्धति के अनुसार मकर संक्रान्ति को मनाए जाने वाले हृष्ण एवं उल्लास के वातावरण से अनुप्राणित होकर ही ईस्वी संवत् नहीं रचा गया होगा। दस-पन्द्रह दिवस के परिवर्तन से कोई मूलभूत अंतर तो नहीं पड़ जाता। यद्यपि यह बात अवश्य है, कि भारत में 'हैप्पी न्यू ईयर' मनाने और बौखलाने की कोई परम्परा पूर्व में नहीं रही। जो देश इस मानव देव को छोड़ कर जाने वाले जीव को भी संस्कार पूर्वक विदा देता है, वह उन्माद में विश्वास रख ही नहीं सकता।

इसी कारणवश मैं दृढ़ता पूर्वक कहना चाहता हूँ, कि हमारा नववर्ष तो मकर संक्रान्ति का पर्व होता है। साधकों को यह जिज्ञासा और आपत्ति हो सकती है, कि नववर्ष का प्रारम्भ भारतीय परम्परा में चैत्र नवरात्रि से माना गया है; मैं उनका विरोध नहीं कर रहा, क्योंकि यदि चैत्र नवरात्रि नववर्ष का प्रारम्भ है तो मकर संक्रान्ति उसके स्वागत की तैयारियों का



पर्व। क्या जिस अवसर पर हम कुछ नवीन प्रारम्भ करते हैं, वह भी पर्व नहीं होता? इसे एक उदरमना भारतीय की तरह धारण करने पर यह बात स्पष्ट हो सकती है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने हमारे ऋषि-मुनियों के 'गणना-चिन्तन' के क्रम को मुखरित करते हुए यह स्पष्ट किया था, कि वास्तव में मकर संक्रान्ति का पर्व केवल शरद ऋतु के उपरात आने वाली सुखद ऊष्मा के स्वागत का ही अवसर नहीं है, वरन् साधना-पर्व भी है, क्योंकि इस दिवस को सूर्य ब्रह्माण्ड में ऐसी स्थिति पर होता है, जिससे साधक किसी भी साधना के द्वारा उसकी तेजस्विता को अपने प्राणों में पूर्णता से उतार सकता है। सूर्य का भारतीय चिंतन में केवल एक ग्रह के रूप में अथवा ज्योतिषीय ढंग से ही महत्व नहीं है वरन् इसे साक्षात् प्राण व आत्मा का ही मूर्तिमंत स्वरूप माना गया है; जिस प्रकार चन्द्रमा को मन का प्रतीक कहा गया है।

वैज्ञानिक जिस सूर्य को अब Solar Energy के अक्षय स्रोत के रूप में देख कर कृतज्ञ हो रहे हैं, भारतीय चिंतन उसे युगों पूर्व ऊर्जा के स्रोत या विजली बनाने के कारखाने के रूप में न देखकर साक्षात् जीवनदाता के रूप में वंदित करता आ रहा है।

उपनिषद् में दृष्टव्य है, कि भगवान् सूर्य से किंचित् गुद्ध रूप में भी याचना की गयी है, कि वे उसे (अर्थात् साधक को)

## सूर्य-पूजा-साधना के नियम

1. साधक कोई भी साधना करे, उसे प्रातः उठ कर सर्वप्रथम सूर्य नमस्कार करना तो आवश्यक ही है।
2. सूर्योदय होने से पूर्व ही साधक नित्य क्रिया से निवृत्त होकर, स्नान कर, शुद्ध वस्त्र अवश्य धारण कर ले।
3. सूर्य की मूल पूजा उगते हुए सूर्य की पूजा ही है, और यही फलकारक है, अतः सूर्योदय के पश्चात् पूजन से कोई प्रयोजन सिद्ध ही नहीं होता।
4. सूर्य को लाल कनेर पुष्प विशेष प्रिय हैं, अतः साधक यही पुष्प सूर्य को अर्पित करे।
5. सूर्य देव को सर्योदय के समय पुष्पों के साथ ताम्रपात्र से तीन बार अर्थ्य देकर प्रणाम करना चाहिए।
6. रोग तथा निर्बलता से पीड़ित सूर्य-उपासक को रविवार के दिन नमक व तेल रहित भोजन केवल एक समय ग्रहण करना चाहिए।

केवल अपनी प्रखर रश्चियों से दश्ध ही न करें वरन् उसके भीतर समाहित होकर साधक को तेजवान भी बनायें; उपरोक्त स्तुति में ‘ज्योति को पुञ्जीभूत’ करने का यही अर्थ है; क्योंकि सूर्य का तेज कभी शांत नहीं हो सकता, किंतु साधक द्वारा उसे समाहित कर लेने के उपरांत वह ‘शांत’ हो सकता है, यों तब साधक का व्यक्तित्व भी सूर्यवत् प्रखर हो जाता है।

## सूर्य-उपासना व्यायाएँ?

मकर संक्रान्ति के अवसर पर सूर्य-साधना का लोक व्यवहार में सदा से महत्व रहा है। अंतर केवल इतना है, कि जहां सामान्य व्यक्ति केवल पूजन के द्वारा अपनी श्रद्धा भावना भगवान सूर्य को निवेदित करते हैं, वहीं साधक उनके वरदायक प्रभाव को किसी विशिष्ट साधना के द्वारा अपने शरीरमें उतारने का प्रयास करता है, जिसके फलस्वरूप उसके जीवन के विविध पाप-दोष एवं जड़ताएं समाप्त हो सकें।

सूर्य की साधना का महत्व एक छोटे से उदाहरण से ही समझा जा सकता है, कि जिस प्रकार एक छोटी-सी खिड़की खोलने पर कमरे का अंधकार पूरी तरह से समाप्त हो जाता है तथा उजाले का संचार हो जाता है, उसी प्रकार उचित साधना के द्वारा एक छोटी-सी खिड़की खोलने भर से ही जीवन की दरिद्रता, जड़ता, आलस्य, मलिनता और चिंता आदि का अंत होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

**क्या आप अपने नववर्ष का आरम्भ इसी रूप में नहीं करना चाहेंगे?**

मकर संक्रान्ति के पर्व को यदि ‘प्राणश्चेतना के पर्व’ की संज्ञा दी जाए, तो सर्वाधिक उचित होगा और यह भी सत्य है, कि जब तक जीवन में प्राणश्चेतना का प्रवाह नहीं होता, तब तक न तो व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है, न सुखी और न ही आध्यात्मिक। इन अर्थों में मकर संक्रान्ति की साधना चतुर्विध प्रभाव प्रदान करने में समर्थ है, जो मूलतः सूर्य साधना ही है।

### साधना-विधान

14 जनवरी 2009, मकर संक्रान्ति के दिन साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपना दैनिक क्रिया-कलाप और गुरु पूजन सम्पन्न करें। उसके पश्चात् एक थाली में कुंकुम से सूर्य का चित्र अंकित कर, पुष्प तथा चावल का आसन देकर मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सूर्य यंत्र स्थापित करें।

साधक लाल वस्त्र धारण करें तथा पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठें।

सूर्य यंत्र का पूजन रक्त चन्दन, लाल पुष्प इत्यादि से सम्पन्न करें।

अब साधना में आवश्यक द्वादश (12) लघु नारियल जो कि भगवान आदित्य (सूर्य) के द्वादश रूप है उनकी प्रार्थना निम्न प्रकार से करते हुए एक-एक लघु नारियल सूर्य यंत्र के चारों ओर गोल घेरे में स्थापित करें।

1. इन्द्र के रूप में भगवान सूर्य देवराज मुझे अपने शत्रुओं का नाश करने तथा अर्धम की रक्षा करने की शक्ति प्रदान करें।
2. धाता के रूप में वे ही प्रजापति में स्थित हो मुझे सृष्टि रचना अर्थात् संतानत्पति एवं परिवार-संचालन की शक्ति प्रदान करें।
3. पर्यन्य रूप में अपनी किरणों में स्थित हो, तेजस्विता से मुझे तेज एवं बल प्रदान करें।
4. पूषा रूप में भगवान सूर्य मुझे परिवार के पोषण की शक्ति प्रदान करें।
5. त्वष्टा रूप में मुझे प्रकृति, वनस्पतियों एवं औषधियों का ज्ञान प्रदान करें।
6. अर्यमा रूप में मुझे बल एवं शक्ति प्रदान करें जिससे मैं समाज की रक्षा करूँ।
7. भग रूप में भगवान सूर्य मुझे स्थिरता प्रदान करें।
8. विवस्वान् रूप में मुझे अग्नि के समान तेजस्विता प्रदान करें।
9. अंश रूप में चंद्रमा में स्थित हो मुझे स्वास्थ्य प्रदान करें।
10. विष्णु कला में मुझे समृद्धि एवं दीर्घआयु प्रदान करें।

11. वरुण रूप में भगवान् सूर्य मुझे समुद्र के समान धैर्य एवं गंभीरता प्रदान करें।
12. मित्र रूप में भगवान् सूर्य मेरा कल्याण करें, एवं सदा मेरे ऊपर अपनी कृपा बनाये रखें।

इसके पश्चात् दीपक प्रज्ज्वलित करें और अपने सम्पूर्ण परिवार की सुख-शांति-प्राप्ति हेतु तथा रोग, दरिद्रता-नाश हेतु भगवान् आदित्य से प्रार्थना करें -

#### ध्यान मंत्र

भास्वद्वत्काढ्यमौलि: स्फुरदधररुचारजिज्ञतश्चारुके शी।  
भास्वान्द्योदिव्यतेजा करकमलयुतः स्वप्णविष्णु प्रभामिः।  
विश्वाकशावकाशो ग्रहगणसहिते भाति वश्चोदयद्वौ  
सत्वर्वन्दनदप्रदाता हरिहरनमित पातु मां विश्वचक्षुः॥

इसके पश्चात् प्राणश्चेतना माला से निम्न आदित्य मंत्र का 108 बार अर्थात् 1 माला मंत्र-जप धीरे-धीरे शांति से सम्पन्न करें।

#### आदित्य मंत्र

॥पूषद्वेकर्षं यम् सूर्यं प्राजापत्यं रश्मीन्समूहं तेजो  
यत्र रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्चामि योऽसाव सर  
पूरुषः सोऽहमस्मि॥

यदि साधक धैर्य पूर्वक इस मंत्र की एक माला मंत्र जप (अर्थात् 108 बार उच्चारण) कर सके, जो अत्युत्तम माना गया है।

अपने पूर्वजों द्वारा प्रणीत किसी भी साधना में मुहूर्त विशेष पर भावपूर्वक संलग्न होने पर उनका भी सूक्ष्म रूप से आशीर्वाद मिलता ही है। पाश्चात्य पञ्चति से नववर्ष तो कुछ घंटों के कोलाहल से मनाया जाता है, जबकि अपनी परम्परागत पञ्चति को अपना कर पूरे वर्ष को ही उल्लासमय बनाया जा सकता है। ऋषियों ने इसी कल्याणमयी भावना से ओत-प्रोत होकर उन पञ्चतियों की रचना की थी।

साधना की समाप्ति पर सभी सामग्रियां जल में विसर्जित कर दें तथा उदित होते हुए नववर्ष के सूर्य को कुंकुम, अक्षत, पुष्प मिश्रित जल से अर्च्य दें।

#### सूर्य का जीवन से सम्बन्ध

सूर्य-साधना का यह प्रयोग यदि साधक प्रतिदिन करें, तो अत्यन्त श्रेष्ठ रहता है, और उनकी समस्त साधनाएं तथा समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

सूर्य तो आरोग्य-देव हैं, इनके सामने निर्बलता, रोग, जड़ता ठहर ही नहीं सकती। सूर्य का तात्पर्य ही आयु, बल, आरोग्य है।

नित्य प्रति सूर्य नमस्कार और प्राणायाम से शरीर का

#### सूर्य साधना के अन्य मंत्र

सूर्य वैदिक मंत्र

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो  
निवेश्यद्वृत्तमत्यर्थं हिरण्यरेन सविता  
रथेनार देवा याति भुवनानि पश्यन्॥

सूर्य गायत्री मंत्र

आदित्याय विद्धहे प्रभाकराय थीमहि तद्धः  
सूर्यः प्रचोदयात्॥

एकाक्षरीबीज मंत्र

ॐ घृणः सूर्याय नमः॥

तांत्रोक्त सूर्य मंत्र

ॐ हां हाँ हाँ सः सूर्यायनमः॥

दृष्टित रक्त साफ होता है, और इस पूजा के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी बनता है।

‘गायत्री मंत्र साधना’ मूल रूप से ‘सूर्य साधना’ ही है, जिसमें सविता अर्थात् सूर्य से बल, बुद्धि, वीर्य, पराक्रम, तेज तथा सब प्रकार से उन्नति, प्रगति की प्रार्थना की गई है।

यह सूर्य ही है, जिसके द्वारा प्रकृति की समस्त शक्तियां मनुष्य को प्राप्त होती हैं। नवग्रहों में ये प्रथम देवता हैं, इनकी साधना-उपासना विजय की साधना है।

एक दिन प्रातः जरा उठ कर, उदय होते हुए सूर्य की पूजा कर, नमस्कार कर इस साधना का आनन्द तो लें, यह आनन्द शरीर को ही नहीं, मन के भी, कुण्डलिनी जागरण के बिन्दुओं को कंपित कर आनन्द से ओत-प्रोत कर देने वाला होता है।

यह विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो भित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों भित्रों का पता लिखकर भेजों। कार्ड मिलने पर 570/- की दी.पी.वी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र मिठु प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों भित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आप द्वारा गुरु परिवार में दो जये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप की 570/- न्यौछातर राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

सिंह वाहिनी लक्ष्मी साधना

और

विष्णु-लक्ष्मी सायुज्य बृसिंह साधना

का अनुठातांत्रोत्त पर्व

मंकर अंत्रांठा

जिस दिन की गर्व लक्ष्मी साधना का प्रभाव व्याप्ति रहता है,  
व्योक्ति यह वर्ष के प्रारम्भ का सबसे महत्वपूर्ण दिवस है।

मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य-साधना सम्पन्न करनी चाहिये क्योंकि सूर्य तेजस्विता के प्रतीक हैं और प्रकृति को ऊष्मा प्रदान कर धात्य वृद्धि करते हैं लेकिन हमारे आर्य ऋषियों ने विचार किया कि जब तक मनुष्य धनहीन, दरिद्र है तो उसमें तेजस्विता कैसे आ सकती है? यदि धरती में बीज ही नहीं हैं, तो कैसे पौधा उग सकता है? वह वृक्ष बन ही नहीं सकता, ठीक ऐसे ही यदि व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ नहीं है तो उसमें तेजस्विता नहीं आ सकती है। ऋषियों ने मकर संक्रान्ति के शुभ अवसर पर सूर्य-साधना के साथ विशिष्ट लक्ष्मी-साधनाओं की रचना की, नवीन मंत्र दिये। ये दो साधनाएं आपके लिये, ...इन साधनाओं को यदि मकर संक्रान्ति कल्प पर सम्पन्न न कर सके तो उस दिन संकल्प लेकर अगली संक्रान्ति अर्थात् २३ फरवरी २००८ या १५ मार्च २००८ को अवश्य सम्पन्न करें।

नवग्रहों में सूर्य ही प्रधान ग्रह देवता है, सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है, सूर्य ही जीवन तत्व को अग्रसर करने वाला, उसे चैतन्य बनाने वाला, प्रकाश देने वाला, मूल तत्व है।

मकर संक्रान्ति का महत्व इस कारण सबसे अधिक बढ़ जाता है, कि उस समय सूर्य उस कोण पर आ जाता है, जब वह अपनी सम्पूर्ण रश्मियां मानव पर उतारता है। इनको ग्रहण किस प्रकार किया जाय, इसके लिए चैतन्य होना आवश्यक है, तभी ये रश्मियां भीतर की रश्मियों के साथ मिल कर मकर संक्रान्ति पर तीव्र तांत्रोत्त साधनाएं करने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

शरीर और सूर्य

मनुष्य का शरीर अपने आपमें सृष्टि के सारे क्रम को समेटे हुए है, और जब यह क्रम बिंदु जाता है, तो शरीर में दोष उत्पन्न होते हैं, जिसके कारण व्याधि, पीड़ा, बीमारी का आगमन होता है, इसके अतिरिक्त शरीर की आन्तरिक व्यवस्था के दोष के कारण मन के भीतर दोष उत्पन्न होते हैं, जो कि मानसिक शक्ति, इच्छा को हानि पहुंचाते हैं, व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि, क्षीण होती है, इन सब दोषों का नाश सूर्य तत्व को जाग्रत कर किया जा सकता है। क्या कारण है कि एक मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है, और एक व्यक्ति पूरे जीवन, सामान्य ही बना रहता है, दोनों में भेद शरीर के भीतर जाग्रत सूर्य तत्व का है। नाभिचक्र, सूर्य चक्र का उद्गम स्थल है, और यह अचेतन मन के संस्कार तथा

चेतना का प्रधान केन्द्र है, शक्ति का स्रोत बिन्दु है, साधारण मनुष्यों में यह तत्व सुम होता है, न तो इनकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान होता है और न ही वह इसका लाभ उठा पाता है। इस तत्व को अर्थात् भीतर के मणिपुर सूर्य चक्र को जाग्रत करने के लिए बाहर के सूर्य तत्व की साधना आवश्यक है, बाहर का सूर्य अनन्त शक्ति का स्रोत है, और इसको जब भीतर के सूर्य चक्र से जोड़ दिया जाता है, तो साधारण मनुष्य भी अनन्त मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है, और जब यह तत्व जाग्रत हो जाता है, तो बीमारी, पीड़ा, बाधाएं उस मनुष्य के पास आ ही नहीं सकती हैं।

मकर संक्रान्ति का जो पर्व है, वह संक्रान्ति अन्य सभी संक्रान्तियों से अलग है क्योंकि यही है वह दिवस, जिस दिन भगवान् सूर्य की प्रखरतादायक रश्मियों में विश्वकर्मा द्वारा सन्तुलन स्थापित किया गया और इसी कारणवश इस दिवस को 'सूर्य' एक ऐसे विशेष कोण पर स्थित होता है, जबकि उसकी सम्पूर्ण प्रखरता पृथ्वी को प्राप्त हो जाती है। सूर्य ही आधार है किसी भी संरक्षण का और इसी कारणवश इस दिवस को की गई प्रत्येक साधना फलप्रद होती ही है। लोक परम्परा में इस दिवस पर पुण्य प्रदायक नदियों में स्नान करने की प्राचीन परम्परा रही है, और उसके पीछे भी यही रहस्य छुपा है। साधक इसी अवसर का उपयोग करता है, अपने मन में पूरे वर्ष भर से संजोकर रखी हुई किसी एक विशेष साधना को सम्पन्न करने में, क्योंकि साधक के उत्सवमय होने का ढंग ही निराला होता है, वह आम व्यक्तियों की तरह खाने-पीने और शोरगुल मचाने को ही उत्सव नहीं मानता, वरन् अपने जीवन में साधना की उस चैतन्यता को स्थान देता है जो उसका पूरा-पूरा वर्ष और सम्पूर्ण जीवन संवार दे।

बाहर का यह सूर्य तो साल के 365 दिन जाग्रत है, लेकिन इसके द्वारा भीतर के सूर्य तत्व को कुछ विशेष मुहूर्तों में तत्काल जाग्रत किया जा सकता है, और इसके लिए मकर संक्रान्ति से बढ़ कर कोई सिद्ध मुहूर्त नहीं है।

### मकर संक्रान्ति और महालक्ष्मी

मकर संक्रान्ति के दिन ही भगवती लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ। जब लक्ष्मी की उत्पत्ति देवासुर संग्राम के अवसर पर समुद्र मंथन के द्वारा हुई, तब वह कन्या थी और इसलिए जिस



स्थान पर समुद्र मंथन हुआ, जिस स्थान पर समुद्र मंथन के गर्भ से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस स्थान को आज 'कन्याकुमारी' कहते हैं, जो भारतवर्ष के दक्षिणी छोर पर है। यह एक ऐसा स्थान है, जहां तीन समुद्र एक साथ मिलते हैं और यहां पर कन्याकुमारी का पवित्र और श्रेष्ठ मन्दिर है, हजारों-लाखों लोग प्रति वर्ष भारतवर्ष से दक्षिण में कन्याकुमारी स्थान पर जाते हैं और उसकी प्राकृतिक छटा देखते हैं, समुद्र का पारस्परिक मिलन और तीन समुद्रों का संगम देखते हैं, जहां पर सूर्योदय विश्व-प्रसिद्ध है। जो भी कन्याकुमारी जाता है, वह प्रातः काल उठ कर सूर्योदय को देखने की अभिलाषा मन में अवश्य रखता है, क्योंकि कन्याकुमारी का सूर्योदय अपने आप में अद्भुत है, ऐसा लगता है कि जैसे समुद्र में से धीरे-धीरे स्वर्ण कलश बाहर निकल रहा हो, ठीक वैसा ही सौने की तरह चमचमाता हुआ कलश, जिसमें अमृत और तेजस्विता भरी हुई है, चारों तरफ अगाध समुद्र है, जहां तक दृष्टि जाती है, समुद्र की लहरें दिखाई देती हैं और उन लहरों के बीच सूर्य बाहर निकलता है तो अपने आपमें एक अद्भुत और अनिवार्यी दृश्य दिखाई देता है।

समुद्र मंथन के उपरांत जो चौदह रत्न निकले, उन चौदह रत्नों में 'श्री लक्ष्मी' भी एक रत्न थी, मगर वह कन्या थी, अविवाहिता थी, कुंवारी थी और इस के प्रतीक स्वरूप उस स्थान पर कन्याकुमारी के मंदिर का निर्माण किया गया, एक पवित्र भूमि का आविर्भाव हुआ और आज भी श्रद्धालु लोग उस कुंवारी लक्ष्मी के विग्रह को देखने के लिए हजारों हजारों की संख्या में आते हैं।

इसके कुछ ही समय बाद भगवान् विष्णु अवतरित हुए और

**पौराणिक आस्त्वान है कि 'सूर्य', जो कि वारत्व में आदि ब्रह्मा के तेज का पिंड है, प्रारम्भ में इतने अधिक तेजरवी व ज्वलनशील थे कि उनकी रश्मियों से सभी लोक व्याकुल हो गए। जल-सरोवर, नदी, तालाब सूखने लग गए और प्रखर गर्मी से देव, यथा, किङ्गर, गन्धर्व, मनुष्य सभी ग्राहि-ग्राहि कर उठे। उन्होंने आदि ब्रह्मा के पास जाकर समर्वेत रूप से अपनी रक्षा की प्रार्थना की। आदि ब्रह्मा अपने ही वंशज सूर्य के पास गए, उसे विविध प्रकार से सन्तुष्ट कर उससे मृदु होने को कहा। सूर्य ने उबरे प्रार्थना की कि आप मेरे पितामह-तुल्य है, अतः आप ही कोई उपाय करें, और तब ब्रह्मा जी ने एक उचित मुहूर्त पर विश्वकर्मा को बुलाकर वज्र की सान पर सूर्य को स्थापित कर उनके तेज को काट-छाट दिया। उस कटे-छटे तेज से ही भगवान् विष्णु का सदुर्शन चक्र, अमोघ यमदण्ड, शंकर का त्रिशूल, काल का खड़ग, तथा दुर्गा के शक्तिशाली त्रिशूल का निर्माण हुआ। यह कथा रख्ष्ट करती है सूर्य के प्रखर तेज को। सूर्य वारत्व में केवल एक ग्रह का ही नाम नहीं, सूर्य तो आदित्य रवरूप में सभी देवताओं के आदि कर्ता हैं। रक्ष्य पुराण में वर्णित है कि महर्षि व्यास ने वैशम्पयान ऋषि को रख्ष्ट कहा है कि इनमें और ब्रह्म में कोई भेद ही नहीं है, क्योंकि ये दोनों ही धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाले हैं।**

उस समुद्र के किनारे ही लक्ष्मी को पत्नी रूप में स्वीकार किया और यही समय मकर संक्रान्ति पर्व कहलाता है, जब कुंवारी कन्या का पाणिग्रहण भगवान् विष्णु के साथ होता है, इसीलिए इस दिन का विशेष महत्व है।

जो साधक मकर संक्रान्ति के विधान को पूरी तरह से सम्पन्न करता है, इस विशेष मुहूर्त पर लक्ष्मी की आराधना करता है, सूर्य की आराधना करता है, विष्णु की आराधना करता है, तो जहां एक और उसके जीवन के दोष दूर होते हैं, पीड़ा, व्याधि, बीमारी का निवारण होता है, वहीं लक्ष्मी-साधना से जीवन की दरिद्रता, दुर्भाग्य, कर्ज का नाश होता है, और लक्ष्मी का स्थायी निवास बन जाता है।

### साधना के तीन मुहूर्त

मकर संक्रान्ति महापर्व को तीन भागों में बांटा जा सकता है। दिनांक 13 जनवरी 2009 को रात्रि में ही सूर्य मकर राशि में प्रवेश कर जाता है। इस कारण 13 जनवरी की रात्रि को बुधवार के दिन महालक्ष्मी-साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इसके पश्चात् 14 जनवरी प्रातः पिछले पृष्ठों में दी गई सूर्य-साधना सम्पन्न करनी आवश्यक है। 14 जनवरी की रात्रि को विष्णु-लक्ष्मी की संयुक्त साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

### मकर संक्रान्ति की महालक्ष्मी-साधना

इस महापर्व के प्रथम दिन पौष शुक्ल 13 जनवरी 2009 बुधवार को महालक्ष्मी सिद्धि दिवस है और इस दिन महालक्ष्मी के विशेष स्वरूप की विशेष प्रकार से साधना सम्पन्न की जाती है।

इस दिन लक्ष्मी के सिंहवाहिनी रूप और कमलधारिणी स्वरूप की साधना की जाती है, और लक्ष्मी उपनिषद् में लिखा है, कि जो साधक मकर संक्रान्ति पर लक्ष्मी के इस स्वरूप का चिंतन करता है, उसके घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती है, क्योंकि सिंह समस्त दुर्भिक्ष, अंभाव और दुर्भाग्य को समाप्त करने वाला है, रोग और पापों का भक्षण करने वाला है, आलस्य और जीवन की न्यूनताओं को दूर करने वाला है, वहीं कमल जीवन को आलोकित करने वाला सदैव चैतन्य तत्व है, अतः इस विशेष दिन लक्ष्मी के इस विशेष रूप की साधना सम्पन्न करने का तात्पर्य जीवन में पूर्णता प्राप्त करना है।

### सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यंत्र

इस यंत्र का निर्माण कुछ विशेष मुहूर्त में ही किया जाता है, और सबसे बड़ी बात यह है, कि इसकी स्थापना केवल मकर संक्रान्ति कल्प में ही की जाती है। ऐसा महायंत्र घर में स्थापित होने पर कर्ज समाप्त हो जाते हैं, घर के लड़ाई झगड़े दूर होते

हैं, व्यापार-वृद्धि होने लगती है, आर्थिक उन्नति और राजकीय दृष्टि से सम्मान प्राप्त होता है।

इस महायंत्र में लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रत्येक ग्रंथ में विशेष वर्णन आया है, प्रत्येक ऋषि ने इसके महत्व को स्वीकारा है, यहां तक कि तंत्र के सर्वोपरि गुरु गोरखनाथ जी ने भी इस यंत्र के तांत्रिक महत्व और मांत्रिक महत्व को विशिष्ट बताया है।

#### साधना-विधान

इस साधना का विधान अत्यन्त सरल है, और साधक स्वयं इसे सम्पन्न करें, इस हेतु आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें। मकर संक्रान्ति कल्प में अर्थात् 13 जनवरी 2009 रात्रि में स्नान सम्पन्न करने के पश्चात् शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठ जायें और सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर महायंत्र को स्थापित कर दें, इससे पहले अलग पात्र में इस 'सिंह वाहिनी महालक्ष्मी महायंत्र' को जल से तथा दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान कर पुनः शुद्ध जल से धो-पौछ कर इसे रेशमी वस्त्र पर स्थापित कर दें, और केशर से इस महायंत्र पर नौ बिन्दियां लगायें, जो नवनिधि की प्रतीक हैं।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें।

#### विनियोग

**अस्य श्री महालक्ष्मी हृदयमालामंत्रस्य भार्गव ऋषिः** आद्यादि श्रीमहालक्ष्मी देवता, अनुष्टुप्यआदि नानाछन्दसिः, श्री बीजम् हर्ण शक्तिः, ऐं कीलकम् श्री महालक्ष्मी प्रसादं सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि 'अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक मकर संक्रान्ति पर्व पर भगवती लक्ष्मी को नवनिधियों के साथ अपने घर में स्थापित करने के लिए साधना सम्पन्न कर रहा हूँ।'

**मकर संक्रान्ति का जो पर्व है, वह संक्रान्ति अन्य सभी संक्रान्तियों से अलग है क्योंकि यही पर्व लोक-मान्यता के अनुसार सूर्य-उपासना में नियत है, लैकिन यह एक अद्यूरा तथ्य है। वास्तव में तो सूर्य की साधना करने के साथ-साथ यह दिवस लक्ष्मी, विष्णु, नृसिंह, महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए उपयुक्त है।**

ऐसा कर हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दें, और फिर यंत्र के सामने शुद्ध घृत के पांच दीपक लगायें, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें, और दूध के बने हुए प्रसाद का नैवेद्य समर्पित करें, इसके बाद हाथ जोड़ कर ध्यान करें।

#### ध्यान

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तरी स्वलीलया।  
हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवी विचिन्तये॥

इसके बाद साधक लक्ष्मी माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें, इसमें 'लक्ष्मी माला' का ही प्रयोग होता है।

#### महामंत्र

॥३५ श्री हर्ण ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै  
सिंहवाहिन्यै स्वाहा॥

इसके बाद साधक लक्ष्मी की आरती करें और यंत्र को अपनी तिजोरी में रख दें या पूजा-स्थान में रहने दें तथा प्रसाद को घर के सभी सदस्यों में वितरित कर दें इस प्रकार मकर संक्रान्ति कल्पवास के प्रथम दिन यह महत्वपूर्ण साधना सम्पन्न की जाती है।

साधना सामग्री - 360/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

#### मकर संक्रान्ति विष्णु नृसिंह साधना

वर्तमान युग में विष्णु के नृसिंह स्वरूप की साधना ही सर्वश्रेष्ठ हैं, क्योंकि इस रूप में जहां एक ओर सौम्यता है, वहीं दूसरी ओर शत्रुनाश का पराक्रम भी है, इस स्वरूप की साधना करने से तीन प्रकार की बाधाएं मुख्य रूप से दूर होती हैं। प्रथम तो साधक को भय-मुक्ति प्राप्त होती है दुःस्वप्नों से शांति मिलती है, कर्ण-रोग, नेत्र-रोग, शिरो-रोग, एवं कंठ-रोग दूर हो जाते हैं, शत्रु तथा विवाद में विजय प्राप्त होती है।

यह साधना मकर संक्रान्ति कल्प में 14 जनवरी 2009 को रात्रि में सम्पन्न करनी है। इस हेतु साधक 'विष्णु नृसिंह महायंत्र' बत्तीस दीपक, केशर, चावल, नैवेद्य, पुष्प की व्यवस्था पहले से कर लें।

**प्रातः** स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने एक बड़े लकड़ी के पीढ़े पर लाल वस्त्र बिछाएं, मध्य में एक पात्र में, 'विष्णु नृसिंह यंत्र' की स्थापना करें, पीढ़े के चार कोनों में चार पत्ते रखें कर उन पर चावल की ढेरी बनाएं और चार सुपारी रखें तथा इन चारों कोनों में श्रीं, ह्रीं, धृति, पुष्टि का ध्यान करते हुए पूजा करें।

# नाश्तिकी वापरि

## व्रेष -

आप किसी भी क्षेत्र में हों, इस माह आपको अद्वितीय सफलता प्राप्त होगी ही तथा आप नवीन उत्साह एवं उमंग से परिपूर्ण होते हुए अपने क्षेत्र में अग्रसर होंगे। व्यापारियों, प्रेस से जुड़े व्यक्तियों के लिए तो यह समय बेजोड़ सिद्ध होगा। उन्हें आशा से कहीं अधिक सफलता प्राप्त होगी तथा समाज में मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा सकता है। किसी विशेष कार्य से यात्राएं करनी पड़ेंगी। आप 'गायत्री साधना' (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 4, 8, 13, 22, 31 हैं।

## वृष -

बेरोजगारों के लिए नौकरी प्राप्ति करने का अच्छा अवसर है। अपने प्रयासों को बढ़ाएं तथा पूरी जी तोड़ कोशिश करें, अवश्य ही आपके मनोनुकूल नौकरी प्राप्त होगी। अगर आप अपना स्वयं का व्यापार आरंभ करने की सोच रहे हैं तो उसके लिए भी समय अच्छा है, परन्तु साझेदारी में कोई बड़ा व्यवसाय आरंभ करने की अपेक्षा कोई छोटा सा निजी व्यापार आरंभ करना श्रेयस्कर सिद्ध होगा। माह के मध्य में किसी अतिथि के घर पर आगमन से हर्ष का वातावरण बनेगा। आप 'सौभाग्य पंचमी साधना' (अक्टूबर 2008) करें। शुभ तिथियां - 2, 13, 16, 24, 28 हैं।

## मिथुन -

आप बहुत समय से कोई कार्य करने की सोच रहे हैं तथा धनाभाव, समयाभाव या किसी अन्य कारण से उसे कार्यान्वित नहीं कर पा रहे हैं तो इस माह आपको सही दिशा देनी का अवसर प्राप्त होगा। गुरु के प्रति श्रद्धायुक्त होते ही आपके कदम चूमेगी तथा आप तीव्रता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकेंगे। यह बात सब के लिए लागू है, चाहे आप नौकरी में हैं, व्यापारी हैं, विद्यार्थी हैं, नेता हैं, या साधक हैं या किसी अन्य क्षेत्र में हैं। आप 'धूमावती साधना' (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 1, 6, 9, 20, 28 हैं।

## कर्क -

इस माह आपके लिये कुछ विशेष नया तो नहीं होगा, उसके बावजूद भी आप काफी व्यस्त रहेंगे। आप अपने कार्य की अपेक्षा अन्य लोगों की परेशानियों एवं कार्यों में हस्तक्षेप करेंगे, जिससे आपको मानसिक परेशानी एवं बाधा के अलावा कुछ विशेष हाथ नहीं लगेगा। आपके लिये यह अच्छा होगा कि आप अपने कार्य पर ध्यान दें, अपने परिवार पर ध्यान दें। आपकी व्यस्ता के कारण, परिवार में भी तनाव उत्पन्न हो सकता है। आप 'चन्द्रघौलिश्वर साधना' (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 2, 8, 14, 17, 21, 25 हैं।

## सिंह -

आलोचनाओं एवं आरोपों से भरा यह माह आपके लिये बहुत कठिन ही होगा। इस माह आप पर आपके विरोधी एवं शत्रुगण आरोप लगाने का प्रयास करेंगे, आपको इूठे आरोपों में फंसाया भी जा सकता है। किसी कारण से आप कानूनी कार्यवाही में भी फंस सकते हैं। अतः आप सावधान रहें तथा अपने विरोधियों एवं शत्रुओं पर विशेष रूप से ध्यान दें। आवश्यक है कि वे स्वयं को प्रेम-प्रसंगों से दूर ही रखें। आप 'नवार्ण साधना' (सितम्बर 2008) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 2, 4, 10, 18, 27 हैं।

## कन्या -

बेरोजगारों के लिये यह माह अत्यधिक उत्तम सिद्ध होगा। उन्हें अनेक अवसर प्राप्त होंगे, जिससे वे अपनी योग्यता एवं दक्षता प्रदर्शित कर पायेंगे। नौकरी-पेशा व्यक्तियों को भी बड़े बदलाव का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी-पेशा व्यक्तियों को भी इस माह बहुत कुछ नया होगा। स्त्रियों के लिये भी इस माह बहुत कुछ नया होगा। कुंवारे युवक-युवतियों को योग्य वर प्राप्त होंगे एवं गृहस्थ व्यक्तियों के जीवन में नया अंकुरण होगा। परिवार में हर्ष एवं उल्लास का माहील होगा। विद्यार्थियों को भी सफलताएं प्राप्त होंगी। आप 'सौभाग्य पंचमी साधना' (अक्टूबर 2008) करें। तिथियां - 1, 3, 10, 14, 22, 23 हैं।

## तुना -

संतान एवं परिवार को लेकर इस माह आप चिंतित हो सकते हैं। आपके लिये अच्छा होगा कि आप परिवार पर ध्यान दें तथा कोई भी ऐसा कार्य न करें, जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न हो जाये। इस माह आपको अपने शुभ चिन्तकों एवं मित्रों से विशेष सावधान रहने की जरूरत है, हो सकता है कि आपका कोई अपना ही आपके साथ विश्वासदात कर लें। इस माह किसी को उधार न ही प्रदान करें तो आपके लिये अच्छा होगा। माह के अन्त में आपको लाभ कमाने के अवसर भी प्राप्त होंगे। आप ‘धूमावती साधना’ (नवम्बर 2008) करें। शुभ तिथियां - 3, 6, 13, 17, 23 हैं।

## वृष्टिघक -

माह के प्रारम्भ में खनिज पदार्थों से जुड़े व्यवसाय के लोगों को विशेष लाभ की स्थिति बनेगी। जमीन-जायदाद, लौह-अयस्क आदि की खरीद के लिये माह उत्तम सिद्ध होगा। प्रेम प्रसंगों में सक्रिय युवक-युवतियों को संभल जाना चाहिए, उन्हें प्रेम में धोखा हो सकता है अथवा समाज में उनकी बदनामी हो सकती है। कला-जगत के व्यक्तियों को इस माह सम्मान प्राप्त हो सकता है। स्त्रियों के लिये यह माह सुखद ही सिद्ध होगा। बेरोजगारों एवं विद्यार्थियों को प्रयास करने पर सफलता प्राप्त होगी। आप ‘मनः शक्ति साधना’ (जुलाई 2008) करें। तिथियां - 3, 7, 12, 14, 25, 27 हैं।

## धनु -

यह माह सभी दृष्टियों से सामान्य ही सिद्ध होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, परिवार में कोई व्यक्ति अथवा आप स्वयं बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। अनावश्यक व्यय के कारण आप अपना धैर्य नहीं खोएं। अपने शुभ चिन्तकों एवं मित्रों से विचार कर ही कोई विशेष कार्य सम्पन्न करें। इस माह आपके किसी धर्मिक यात्रा के विशेष योग बन रहे हैं। अविवाहितों को अच्छे सम्बन्ध प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों को इस माह विशेष प्रयास की आवश्यकता होगी अन्यथा सफलता संदिग्ध है। आप ‘वज्र प्रस्तारिणी साधना’ (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 1, 15, 17, 18, 27 हैं।

## भक्त -

आध्यात्मिक दृष्टि से यह माह आपके जीवन में एक नया अध्याय प्रारम्भ करेगा। साधकों को इस माह साधनाओं में सफलता प्राप्त होगी। जीवन में परिवर्तन के लिये यह माह बहुत उत्तम सिद्ध होगा। यदि आप अपनी जीवन-शैली अथवा व्यापार अथवा नौकरी में परिवर्तन के बारे में सोच रहे हैं, तो

**योग:** सिद्ध योग - 1, 2, 10, 13, 15, 16, 24, 28 जनवरी/ 3, 5, 11, 17, 19, 20, 28 फरवरी ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग - 13, 21 जनवरी/ 23 फरवरी ☆  
अमृत सिद्ध योग - 23 फरवरी ☆ रवि पुष्य योग - 8 फरवरी ☆

आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। यह परिवर्तन आपके लिये उपयोगी ही सिद्ध होगा। महिलाओं को विशेष रूप से परिवार में सम्मान प्राप्त होगा तथा गृहस्थ-सुख में भी पूर्णता प्राप्त होगी। आप ‘शूलिनी साधना’ (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 4, 14, 18, 27, 31 हैं।

## कुंभ -

किसी ओर की बातों पर बिना सोचे समझे निर्णय नहीं करें अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है। आप स्वयं ही खुद का नुकसान कर सकते हैं। इस माह किसी प्रकार का ऋण नहीं लें। यदि आप कोई अचल सम्पत्ति खरीदने की सोच भी रहे हैं तो उसे आने वाले समय के लिये टाल दें। संतान एवं परिवारजनों से आपको सहयोग प्राप्त होगा। महिलाओं के लिये भी समय कुछ विशेष अच्छा नहीं होगा। उन्हें इस माह परिवार में अपने सम्मान के लिये संघर्ष करना पड़ सकता है। आप ‘भगवती दुर्गा शक्ति साधना’ (सितम्बर 2008) करें। तिथियां - 3, 9, 17, 19, 24 हैं।

## मीन -

संतान-पत्नी-परिवारजनों के विरोध एवं असहयोग के कारण आप मानसिक रूप से दुःखी हो सकते हैं। किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों से स्वयं को दूर ही रखें तो आपके लिये श्रेष्ठ होगा। आप को माह के अन्त में आर्थिक उत्तरि के अवसर प्राप्त होंगे। आपको किसी यात्रा पर भी जाना पड़ सकता है, जो कि आपके लिये लाभकारी ही सिद्ध होगी। आप निर्णय लेने में थोड़ी सावधानी बरतें क्योंकि समय पूर्ण रूप से आपके अनुकूल नहीं है। महिलाओं को इस माह स्वर्ण-प्राप्ति के विशेष योग हैं। आप ‘गायत्री साधना’ (नवम्बर 2008) करें। तिथियां - 3, 11, 14, 21, 28 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार				
22 दिस.	पौष कृष्ण	-11	सोम	सफला एकादशी व्रत
24 दिस.	पौष कृष्ण	-12	बुध	प्रदोष व्रत
27 दिस.	पौष कृष्ण	-30	शनि	पौषी श्नैश्चरी अमावस्या
01 जन.	पौष शु.	-05	गुरु	नववर्ष 2009 प्रारम्भ
07 जन.	पौष शु.	-11	बुध	पुत्रदा एकादशी
09 जन.	पौष शु.	-13	शुक्र	प्रदोष व्रत
11 जन.	पौष शु.	-15	रवि	पूर्णिमा व्रत

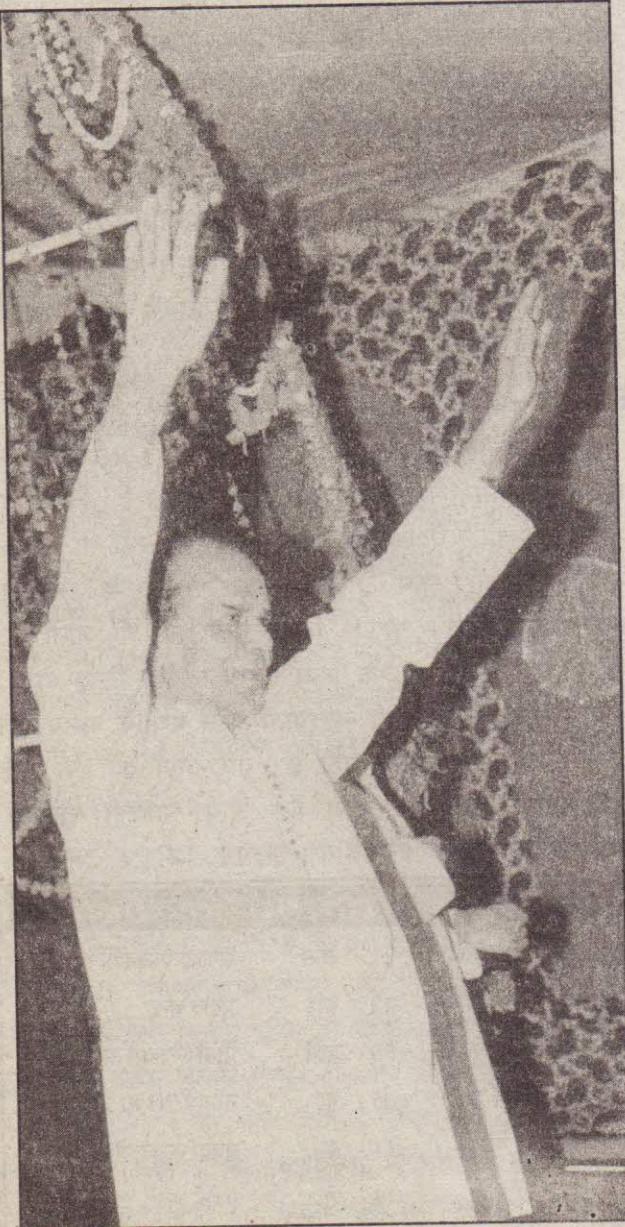
ॐ

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप ख्याल अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, वाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से

सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।**



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (दिसम्बर 21, 28) (जनवरी 4, 11)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक  रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (दिसम्बर 22, 29) (जनवरी 5)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक  रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (दिसम्बर 16, 23, 30) (जनवरी 6)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक  रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (दिसम्बर 17, 24, 31) (जनवरी 7)	दिन 06:48 से 11:36 तक  रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (दिसम्बर 18, 25) (जनवरी 1, 8)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक  रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (दिसम्बर 19, 26) (जनवरी 2, 9)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक  रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (दिसम्बर 20, 27) (जनवरी 3, 10)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक  रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

3-4 जनवरी 09

नववर्ष 2009

## नववर्ष में नवतृष्णुता प्रारम्भ होनी ही चाहिये

आप अपने जीवन ने भौतिक  
और आध्यात्मिक उन्नति चाहते हैं

क्योंकि

नववर्ष - गुरुद्वादशी - शारदीय पूजा

# अमरांशुलक्ष्मी

एक अति आवश्यक विस्तृत विवेचन -

नववर्ष कहते ही मन में एक नयेपन का अहसास होने लगता है, जिसके है, इसके नाम से ही कुछ नया सा झलकने लगता है। 'नव' यानि परिवर्तन, कुछ नया, जो जीवन को बदल कर रख दे। 'नव' का अर्थ है - निर्माण कर दे उसका, जो अपने-आप में कुछ अलग हो, नूतन हो, नवीन हो।

बाद 'नववर्ष' के उदय का बेसब्री से इंतजार करता है, जिसके आगमन से उसके चेहरे पर उसी प्रकार की खुशी, प्रसन्नता, उमंग, प्रफुल्लता छा जाती है, क्योंकि उसे अपने जीवन में फिर एक नयेपन का अहसास होता है, एक बार फिर कुछ नया उद्घाटित होने वाला होता है उसके जीवन में।

हाँ! कुछ ऐसा ही होता है यह 'नया वर्ष', जो जीवन में रंग-बिरंगे रंगों को भर देने वाला होता है, जो नई उम्मीदों, नई उमंगों, नये उत्साह, नये जोश को अपने में समेटे हुए होता है, क्योंकि एक 'नये वर्ष' का शुभारम्भ कर, व्यक्ति अपने विचारों, अपने चिंतन को एक नई दिशा देता है, जिससे कि वह उन्नति की ओर अग्रसर हो सके, और वह उसके जीवन का एक उन्नतिदायक वर्ष बन जाए।

'पुराना वर्ष' आपके जीवन की खट्टी-मीठी, आनन्दप्रद और कड़वी यादें लिए हुए वृद्धता की ओर अग्रसर होता है, जबकि 'नया वर्ष', नवशिशु के रूप में आनन्द, उमंग, उत्साह, जोश और महत्वकांक्षाओं की गठरी लिए सामने खड़ा होता है। एक नवजात शिशु की भाँति ही हर व्यक्ति 12 महीनों के सम्पन्नता, वैभव, प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है, और यदि वह

हर व्यक्ति उस क्षण से एक नये जीवन की शुरुआत करता है, और नयापन तो होता ही खुशी, उमंग, आनन्द और उल्लास से भर देने के लिए है।

एक मां जिस प्रकार शिशु के अन्दर नवीन संस्कारों को पैदा कर, उसके जीवन की जिम्मेदार होती है, जिसके आधार पर उस बालक का पूरा जीवन अपनी मां द्वारा दिये गये अच्छे या बुरे संस्कारों पर निर्भर होता है, ठीक उसी प्रकार हर व्यक्ति अपने जीवन में, अच्छे या बुरे कार्यों का स्वयं जिम्मेदार होता है।

यदि मां अपने शिशु में अच्छे विचारों, अच्छे संस्कारों का समावेश करती है, तो वह बालक अपने जीवन में सुख, है। एक नवजात शिशु की भाँति ही हर व्यक्ति 12 महीनों के सम्पन्नता, वैभव, प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है, और यदि वह

ध्यान नहीं दे पाती तो बालक बुरे संस्कारों की ओर मुड़ जाता है। तो उस बालक का जीवन दुःखी, पीड़ित कष्टप्रद, परेशानियों और बाधाओं से भरा व्यतीत होता है।

यदि व्यक्ति एक 'नवशिशु' की भाँति 'नववर्ष' में अच्छे कर्मों को प्रविष्ट करता है, तो वह वर्ष उसे जीवन में सुख-सम्पन्नता, वैभव, आनन्द और उन्नति प्रदान करने वाला होता है, जिसके आधार पर ही वह अपने उस वर्ष में पूर्णता, श्रेष्ठता और विव्यता प्राप्त कर लेता है, और यदि व्यक्ति उस वर्ष का प्रारम्भ ही गलत व बुरे ढंग से करता है, तो वैसा ही दुःखी, पीड़ित, चिन्ताग्रस्त, कष्टप्रद जीवन उसे भुगतना पड़ता है, जो उसके जीवन की न्यूनताओं को लिए हुए निराशजनक और नीरस ढंग से व्यतीत होता है।

- क्योंकि जैसा बीज व्यक्ति मिट्टी में बोता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है, इसलिए हमें चाहिए, कि हम 'नववर्ष' का शुभारंभ सुन्दर, नवीन और शुभ तरीके से करें।

व्यक्ति अपने अच्छे-बुरे कर्मों को सोचकर एक नये चिंतन, नये विचारों को अपने मानस में सजोते हुए 'नववर्ष' का स्वागत करता है, जिससे कि वह अपने नये विचारों को, अपनी कल्पना को नये ढंग से विस्तार देकर एक नवीन जीवन की पुष्टि कर सके, जिससे कि उसका आने वाला 'समय, 'नया वर्ष' खुशियों से भरा हो, मंगलमय हो, उत्सवमय हो।

- और इस उत्सव को, उस उमंग को, इस उत्साह को भारतीय साधना-ग्रंथों में एक पर्व के रूप में वर्णित किया गया है। वर्तमान में इस दिन जहां सामान्य, संकीर्ण और तुच्छ बुद्धि का व्यक्ति इस 'नववर्ष' का स्वागत अर्द्धरात्रि की घोर कालिमा में शराब पीकर, जुआ खेलकर, कलबों में जाकर करता है, वहीं एक समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति इस वर्ष का स्वागत शुभ ढंग से कर, अपने जीवन को धन्य कर लेता है।

इसका आरम्भ उत्साह, उल्लास और साधनात्मक चिंतन से कर, व्यक्ति एक नई दिशा, एक नई रोशनी को प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठता और उच्चता प्रदान करता है।

उसके जीवन में 'नववर्ष' का अर्थ ही जीवन शैली में नवीनता, नया उत्साह और बल भर देना है, जिससे कि यह 'नया वर्ष' हमारे लिए उमंग और उत्साह से भरा हुआ हो।

जहां व्यक्ति इस 'नववर्ष' का आरम्भ, जो उसके जीवन के मूल्यवान क्षण होते हैं, उन स्वर्णिम क्षणों को, जिनको वह अज्ञानतावश, मूर्खता पूर्ण तरीकों से हो-हल्ला, नाच-गा कर, जुआ आदि खेल कर गंवा बैठता है, वहीं एक समझदार

व्यक्ति, साधक या शिष्य उन्हीं महत्वपूर्ण और मूल्यवान क्षणों का उचित और साधनात्मक ढंग से उपयोग कर अपने जीवन के प्रत्येक दिन को स्वर्णिम, श्रेष्ठ, दिव्य और उत्सवमय बना लेता है।

इस 'नववर्ष' के दिव्य, स्वर्णिम क्षणों का उचित प्रयोग कर वह उस ऊर्जा-शक्ति के माध्यम से अपने जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों में सफलता प्राप्त कर लेता है, जिन पक्षों में सफलता प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का हेतु होता है, और यही मानव जीवन की श्रेष्ठता है, अद्वितीयता है, सम्पूर्णता है।

जीवन के दो पक्ष हैं - आध्यात्मिक और भौतिक।

आध्यात्मिक जीवन का आधार भी लक्ष्मी ही है, क्योंकि अध्यात्म जीवित रहेगा, मनुष्य जीवित रहेगा अन्न से, जल से... और इसके मूल में लक्ष्मी तो है ही।

परन्तु जो व्यक्ति अहंकार से ग्रसित है, जो व्यक्ति नास्तिक है, जो व्यक्ति देवताओं की साधना को, आराधना को, सिद्धियों को, मंत्रों को नहीं पहचानते या उन पर विश्वास नहीं करते, वे जीवन में बहुत बड़े अभाव को पाल-पोस रहे होते हैं, उनके जीवन में सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं होता, निर्धनता उनके चारों ओर मंडराती रहती है, भूख उसे व्यथित करती रहती है, जीवन की समस्याएं उनके सामने मुँह उठाए खड़ी रहती हैं... ऐसा व्यक्ति चाहे अपने-आप को कितना ही वीर, साहसी सिद्ध कर दे, मगर यह कटु सत्य है, कि वह अपने आप में उस आनन्द और मधुरता को, उस सम्पूर्णता और वैभव को प्राप्त नहीं कर सकता, जो दैवी-कृपा या भगवती-कृपा से प्राप्त होता है।

इसमें कोई दो राय नहीं है, कि जीवन में महाकाली और महासरस्वती की साधना भी जरूरी है, क्योंकि भगवती काली की साधना से जहां जीवन निष्कंटक और शत्रु-रहित बनता है, वहीं महासरस्वती-साधना के माध्यम से उसे बोलने की शक्ति प्राप्त होती है, उसका व्यक्तित्व निखरता है, वह समाज में सम्माननीय और पूजनीय बनता है। मगर यह सब तब हो सकता है, जब धन का आधार हो -

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,  
सः पण्डितः स गुणवान् गुणज्ञः /  
स एव वक्ता स च दर्शनीयः,  
सर्वे गुणाः कञ्चनमाश्रयन्ते ॥

जिसके पास लक्ष्मी की कृपा है 'यस्यास्ति वित्तं...' समाज

उसको समझदार समझता है, प्रतिष्ठित समझता है, उसे कुलीन समझता है, उसे पण्डित कहते हैं, उसे गुणज कहते हैं, लोग उससे सलाह लेते हैं, उसके पास बैठते हैं, उससे मित्रता करने का प्रयत्न करते हैं।

जिसके पास लक्ष्मी की कृपा होती है, वह अपने-आप अच्छा वक्ता बन जाता है - 'सः एव वक्ता, स च माननीयः...' समाज में लोग उसका सम्मान करते हैं, पूजा करते हैं, उसके पास बैठने, उससे मित्रता करने को प्रयत्नशील होते हैं।

यह सब विचारणीय है... इसका ज्ञान केवल गुरु ही देसकता है, जो व्यक्ति का पथ प्रदर्शक है, जो उसको रास्ता बताने वाला है, जो उसके जीवन का निर्माण करने वाला है, जो उसके जीवन में बाधा और परेशानियों से सुरक्षा के लिए स्तम्भ की तरह खड़ा है, क्योंकि गुरु को उन सारी पद्धतियों का ज्ञान होता है, यदि वह सही अर्थों में गुरु है तो।

इसीलिए जरूरत है - 'जीवित - जाग्रत चैतन्य गुरु' की। जीवित और जाग्रत गुरु की इसीलिए, क्योंकि उसे इन सारे तथ्यों का, इन सारी पद्धतियों का ज्ञान होता है। ज्ञान होता है, कि कौन-सी साधना और किस प्रकार की साधना किस शिष्य को दी जाय?

इस प्रकार की साधना योगी, गुरु, विद्वान्, शास्त्र कोई भी प्रदान कर सकता है, मगर इस बात का ध्यान रहे कि हमारे मन में इसके प्रति ललक हो, एक चेतना हो, एक विचार हो कि हमें इस साधना को सम्पन्न करना ही है। जब तक साधक में जोश, एक चेतना नहीं होती, ललक नहीं होती, जब तक साधक में यह आत्म विश्वास नहीं होता, कि उसे यह साधना करनी ही है, तब तक साधना प्रारम्भ भी नहीं हो सकती; इसके लिये मंत्र पर, गुरु पर, साधना पर विश्वास होना चाहिए।

**मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।  
यदृशी भावना यस्य तादृशं फलितमया: //**

जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, उसको उतनी ही फल-प्राप्ति होती है। यदि हम भगवती महालक्ष्मी की साधना प्रारम्भ करें, तो उसका आधार है - 'श्रद्धा' ...मंत्र-जप तो बाद की क्रिया है।

अब निर्णय तो व्यक्ति को स्वयं करना है, कि वह किस प्रकार के जीवन की सृष्टि करना चाहता है, दुःखी, पीड़ित, निराशाजनक और कष्टप्रद जीवन की, या फिर श्रेष्ठता,



दिव्यता, आनन्द और पूर्णता प्राप्त जीवन की। यह निर्णय तो उसके खुद का है, कि वह किस प्रकार के जीवन को व्यतीत करेगे?

आइये लक्ष्मी के सम्बन्ध में और आगे चर्चा करते हैं -

**सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भव्यंकरि।  
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥**

'सभी बातों की जाता, सभी के प्रति वरदायक, सभी दुष्ट प्रकृति के लोगों को भय देने वाली, सभी दुःखों को हर लेने वाली है महालक्ष्मी! तुम्हें बारंबार प्रणाम है।'

लक्ष्मी की जीवन में और उपरोक्त वर्णित श्लोक के अनुसार व्यापक रूप में क्या आवश्यकता होती है, इस बात को गृहस्थ साधक से अधिक गहनता से कोई नहीं समझ सकता और एक पर्व ही क्यों, वह तो पूरे वर्षभर इसी दिशा में सतत चेष्टारत रहता ही है। इसी प्रकार सतत चेष्टारत रहना, भौतिक जीवन में अपना कर्म कुशलता पूर्वक करने के साथ-साथ साधनाओं के द्वारा भी अपने लक्ष्य की पूर्ति में गतिशील रहना ही योग्य साधक का लक्षण है। योग्य व समर्थ साधक ही सही अर्थों में 'पुरुष' कहा जा सकता है और लक्ष्मी तो सदैव से 'पुरुष' का वरण करने के लिए बाध्य होती ही रही है।

ऐसे ही साधक इस बात की भी महत्ता समझते हैं कि किस प्रकार जीवन में लक्ष्मी के एक से अधिक स्वरूपों की साधना करके ही जीवन को अनेक प्रकार से सुखी व सम्पन्न बनाने के साथ अपनी विभिन्न मनोकामनाओं को भी पूर्ति की जा सकती है। केवल धनलक्ष्मी ही नहीं, यश लक्ष्मी, आयुलक्ष्मी, वाहन लक्ष्मी, स्थिर लक्ष्मी जैसे लक्ष्मी के स्वरूपों को अपना कर ही सही अर्थों में लक्ष्मी की साधना की जाती है। जिस प्रकार दीपावली के बहुत पूर्व से व्यक्ति अपने निवास स्थान को साफ-सुसज्जित करना प्रारम्भ कर देता है, उस प्रकार का कार्य नववर्ष के साथ भी प्रारम्भ होना चाहिए। जिस प्रकार लक्ष्मी के आगमन से पूर्व ही उनके स्वागत की विधिवत् तैयारी की जाती है, उसी प्रकार विभिन्न साधनाओं के माध्यम से उनकी सम्पूर्णता को भी प्राप्त करने की चेष्टा की जानी चाहिए।

जहां लक्ष्मी की सम्पूर्णता को अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है, वहां स्वतः ही अष्टलक्ष्मी साधना का नाम उभरकर सामने आ जाता है। अष्टलक्ष्मी की साधना अपने आप में इस प्रकार से सम्पूर्णता का पर्याय बन चुकी है कि प्रत्येक योग्य साधक अपने जीवन में कम से कम एक बार इसे पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न कर ही लेना चाहता है। अष्टलक्ष्मी साधना का रहस्य केवल यहीं तक सीमित नहीं है। अष्टलक्ष्मी अपने-आप में आठ प्रकार के ऐश्वर्यों (जिसके बारे में पत्रिका के नवम्बर 2008 में विस्तार से आया है, उसे भी पढ़ें।) को तो समाहित करती ही है साथ ही ये लक्ष्मी के आठ अत्यन्त प्रखर स्वरूपों - द्विभुजालक्ष्मी, गजलक्ष्मी, महालक्ष्मी, श्री देवी, वीर लक्ष्मी, द्विभुजा वीर लक्ष्मी, अष्टभुजा वीर लक्ष्मी एवं प्रसन्न लक्ष्मी के सम्मिलित स्वरूपों की साधना भी है, जिनमें से प्रत्येक स्वरूप का विशेष वरदायक प्रभाव भी है, जिस प्रकार नव दुर्गा साधना के अन्तर्गत प्रत्येक दुर्गा-स्वरूप का एक प्रधान व विशिष्ट वरदायक स्वरूप होता है। आगे मैं इन्हीं स्वरूपों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ -

### द्विभुजा लक्ष्मी

भगवती लक्ष्मी का यह स्वरूप अपने-आप में पूर्ण रूप से विष्णुमय स्वरूप है तथा इनका इस रूप में ध्यान करने से, इस रूप में साधना करने से जहां साधक को एक ओर पूर्ण गृहस्थ-सुख, शांति एवं सौभाग्य प्राप्त होता है, वहीं उसे ऐसी पात्रता भी प्राप्त हो जाती है कि वह स्वयं भगवान विष्णु के समान पालकर्ता एवं दुःखहर्ता बनने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक सद्गृहस्थ अपने सीमित स्वरूप में ऊपरे दर को प्रदान करने वाला है तथा जब भगवती लक्ष्मी द्वारा वर

परिवार एवं कुटुम्ब का पालन करने के रूप में भगवान विष्णु का ही तो कार्य करता है, अतः उसे भगवती लक्ष्मी के इस स्वरूप की साधना द्वारा जो शक्ति एवं विष्णुत्व प्राप्त होता है, उससे उसका व्यक्तिगत जीवन संवरने के साथ-साथ वह परिवार का भी हित साधन करता है।

### गजलक्ष्मी

गजलक्ष्मी स्वरूप में भगवती लक्ष्मी लाल वस्त्र धारण कर, कमल के आसन पर विराजमान हो, एक हाथ में कमल, द्वितीय में अमृतपूर्ण कलश, तृतीय हस्त में बेल तथा चतुर्थ में शंख धारण करने वाली वर्णित की गयी है। जिनके दोनों ओर दो गजराज उनका अभिषेक कर रहे हैं। भगवती लक्ष्मी का यह दिव्य स्वरूप वास्तव में प्रचुर धनदात्री एवं आकस्मिक धन प्रदात्री देवी का ही स्वरूप है। गजलक्ष्मी-स्वरूप की साधना अपने-आप में ही सम्पूर्ण साधना मानी गयी है जिनके द्वारा साधक के जीवन में सदैव आवश्यकता से अधिक धन प्राप्त होता ही रहता है।

### महालक्ष्मी

अष्टलक्ष्मी के अन्तर्गत तृतीय लक्ष्मी 'महालक्ष्मी' हैं, जिनकी प्रत्येक साधक किसी न किसी रूप में साधना, ध्यान अथवा कामना करता ही है। महालक्ष्मी का अर्थ है पूर्णता; जो विभिन्न प्रकार के सुखों एवं ऐवश्य से घटित होती है। गृहस्थ-सुख, पत्नी-सुख, पुत्र-पौत्रादि-सुख, वाहन-सुख, अनुचर-सुख, स्वास्थ्य-सुख इत्यादि पक्षों की सिद्ध सफल साधना का ही दूसरा नाम है महालक्ष्मी-साधना एवं इसी कारणवश उन्हें अष्टलक्ष्मी साधना के मध्य एक विशेष स्थान प्राप्त है।

### श्रीदेवी

जैसा कि भगवती महालक्ष्मी की इस संज्ञा से ही स्पष्ट है कि ये जीवन में 'श्री' दिलाने में समर्थ देवी हैं। केवल भरण-पोषण के लिए पर्याप्त धन अर्जित कर लेने अथवा अपने परिवार का भली-भांति पालन पोषण कर लेने से ही जीवन में श्री का आगमन संभव नहीं होता, वरन् व्यक्ति की समाज में क्या प्रतिष्ठा है, उसके पास स्थायी सम्पत्ति, स्वयं का आवास इत्यादि अचल सम्पत्ति किस अनुपात में उपस्थित है, जिसकी जीवन में प्राप्ति एवं संभावना को यहीं सुनिश्चित करने में समर्थ देवी हैं।

### वीर लक्ष्मी

वीर लक्ष्मी का स्वरूप अपने-आप में पूर्णरूप से अभय एवं

एवं अभय प्राप्त होने की बात आती है तो उसका सीधा सा तात्पर्य होता है कि जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव अथवा दरिद्रता रह ही नहीं सकती। एक प्रकार से जीवन के समस्त अशुभ, अंधकार, मलिनता, दैन्य एवं हीनभावना को जड़मूल से समाप्त कर देने वाली देवी वीर लक्ष्मी हैं।

### द्विभुजा वीर लक्ष्मी

भगवती महालक्ष्मी का उपरोक्त स्वरूप जहां चतुर्भुजा है वहीं यह स्वरूप द्विभुजा है एवं इस स्वरूप में ये, विशेष रूप से जीवन के गृहस्थ पक्षों के प्रति वरदायक एवं अभयदायक हैं, जिससे साधक के जीवन में जहां एक ओर गृहकलह आदि का अंत होता है, वहीं अनेक प्रकार से पारिवारिक उत्तरि, श्री, सम्पदा का आगमन, संतान की उत्तित तथा धन-धान्य में पूर्णता की स्थिति निर्मित होने लगती है।

### अष्टभुजा वीर लक्ष्मी

**वस्तुतः:** वीर लक्ष्मी से तात्पर्य है, जहां महालक्ष्मी केवल धनप्रदात्री न होकर अन्य प्रकार से शक्तिमयता द्वारा साधक के जीवन को संवारने में तत्पर हों। वीर लक्ष्मी, द्विभुजा वीर लक्ष्मी के उपरान्त अष्टभुजा वीर लक्ष्मी का भी यही तात्पर्य है। अपनी अष्ट भुजाओं में विभिन्न आभूषण धारण कर ये इस स्वरूप में साधक के जीवन में उन सभी परिस्थितियों का संहार करने में तत्पर रहती हैं, जिनसे दरिद्रता अथवा अभाव जैसी स्थिति बनी रहती है। मुकदमेबाजी, रोग, व्यसन, आकस्मिक व्यय जैसी समस्त स्थितियों का नाश अष्टलक्ष्मी के इसी स्वरूप द्वारा साधक के जीवन में संभव होता है।

### प्रसञ्च लक्ष्मी

जीवन में पूर्ण मानसिक सुख, कान्ति, ओज, तेज, बल, साहस, सौन्दर्य, हास्य, मनोविनोद, मित्र-सुख एवं चारों पुरुषार्थों की जननी प्रसन्न लक्ष्मी ही हैं, जो अष्टलक्ष्मियों में से शेष लक्ष्मियों द्वारा प्रदत्त स्थिति को पूर्णता प्रदान करने में समर्थ हैं एवं जिससे साधक अपने जीवन में धन सम्पदा का पूर्ण सुख अनुभव करते हुए एक विशेष प्रकार की तृप्ति व चैतन्यता अनुभव करता रहता है।

इस प्रकार लक्ष्मी के इन सम्मिलित अष्ट स्वरूपों की साधना का ही दूसरा नाम है अष्ट लक्ष्मी साधना, जिसके द्वारा गृहस्थ-जीवन का कोई भी पक्ष अद्यूता नहीं रह जाता।

यह सब तो विवचेन हुआ लेकिन अन्त में शिष्य यही प्रश्न करता है कि मैं क्या करूँ? गुरु ही मुझे साधना और दीक्षा का मर्म समझाएं और अपने आशीर्वाद से आप्लावित करें।

### नववर्ष उपहार - अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा

शिष्य की सारी भागदौड़ अपने गुरु के चरणों में ही जाकर पूर्ण होती है। गुरु शिष्य को ज्ञान प्रदान करते हैं, शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को समाप्त करते हैं, उसे जीवन का धैर्य एवं साहस भी प्रदान करते हैं, समय-समय पर उसका मार्गदर्शन करते हैं, परन्तु प्रत्येक शिष्य के मन में एक इच्छा अवश्य रहती है कि उसे जीवन में दुःखों का सामना नहीं करना पड़े और आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठता प्राप्त हो। इसी आर्थिक उत्तमि के लिए वह विभिन्न साधनाएं करता है और मन ही मन निरन्तर प्रार्थना करता है कि उसके जीवन में अभाव नहीं रहे। अर्थ, अर्थात् धन अपने सम्पूर्ण स्वरूपों में उसके जीवन में प्रकाशित हो।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर हजारों शिष्यों ने गुरुदेव से प्रार्थना की और यह निवेदन किया कि इस बार नववर्ष के प्रारम्भ में हमें ऐसा आशीर्वाद और शक्तिपात्र प्राप्त हो, जिससे हम भौतिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न हो सकें। यह प्रसन्नता का विषय है कि गुरुदेव ने कृपा कर, इस बार सभी शिष्यों को 'अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा' प्रदान करने का निर्णय किया है जो आरोग्य धाम नई दिल्ली में प्राप्त होगी।

सद्गुरुदेव निखिल की कृपा से यह महान् दीक्षा आपको अवश्य प्राप्त होगी। आपको वर्ष के प्रारम्भ में 3-4 जनवरी 2009 को गुरु शक्तिपीठ आरोग्य धाम में उपस्थित होना है और सिद्धाश्रम-साधक-परिवार के कर्मठ सदस्य के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए सेवा भावना से यह दीक्षा प्राप्त करनी है।

इस नववर्ष के प्रारम्भ में ऐसी ही महान् क्रिया आपके जीवन में सम्पन्न हो सके, इसके लिए आवश्यकता है, गुरु के प्रति पूर्ण सत्य-निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास से दिनांक 3-4 जनवरी 2009 को आरोग्य धाम दिल्ली में आप आयें और आपको 'शक्तिपात्र युक्त अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा एवं साधना शिविर' में सम्मिलित होना है। इस हेतु आपको संलग्न प्रपत्र भर कर भेजना है। आपका हृदय से स्वागत है।

सिद्धाश्रम-साधक-परिवार में वृद्धि हेतु आपको केवल इतना करना है कि आप पांच नये सदस्य अवश्य बनायें और उनके नाम, पते सहित पीछे छपा-फॉर्म भर कर भेज दें। पत्रिका-नियमानुसायार पांच सदस्यों का सदस्यता शुल्क एवं उन्हें वर्षभर पत्रिका भेजने का न्यौष्ठावर शुल्क 1500/- रुपये आता है। इतना त्याग तो आपको करना ही है, तभी जीवन में एक नया अध्ययन अपने हाथ से लिख सकेंगे।

# शक्तिपूजा युक्त महालक्ष्मी दीक्षा

पांच मित्रों के नाम :-

1. नाम .....  
पूरापता

2. नाम .....  
पूरापता

3. नाम .....  
पूरापता

4. नाम .....  
पूरापता

5. नाम .....  
पूरापता

उस यशस्वी साधक का नाम, जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है।

नाम .....  
पूरापता

.....

**तिथेष -** जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह शक्तिपात्र युक्त अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1500/- का बैंक ड्रापट या मनीऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-14,

फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 27356700

# भूलक्षणी सरस्वती

जिसके जाग्रत होने पर ही क्रिया शक्ति महाकाली  
और इच्छा शक्ति महालक्ष्मी जाग्रत होती है। ज्ञान के  
बुद्धि आती है, बुद्धि के विद्या, विद्या के धैर्य, धैर्य के  
पराक्रम और पराक्रम के साहस आता है और इन  
क्षमताएँ के भाव्य जाग्रत होता है। भाव्य जाग्रण के  
जीवन में क्रिया और लक्ष्मी का उपगमन होता है।  
मनुष्य का पुरुषार्थ सफल होता है।



वि-शक्ति का तात्पर्य है ज्ञान-शक्ति, क्रिया-शक्ति और इच्छा-  
शक्ति है। इन तीनों का समन्वित स्वरूप ही शक्ति-स्वरूप कहा  
गया है। मूल रूप से ज्ञान-शक्ति सरस्वती के माध्यम से प्रकट  
होती है, क्रिया-शक्ति महाकाली के रूप में स्पष्ट होती है और  
इच्छा-शक्ति भगवती महालक्ष्मी के रूप में स्पष्ट होती है। विस्तृत  
विवेचन से पहले यह जान लेना चाहिए कि जगत् का आधार  
ज्ञान है, क्रिया है अथवा धन है? वास्तव में तीनों के समन्वित  
रूप से ही यह संसार-चक्र चल रहा है। जहां एक पक्ष भी  
कमजोर हो जाता है तो दूसरा पक्ष पूर्ण रूप से सफलता नहीं दे  
सकता है। अतः जीवन में आवश्यक है कि हम ज्ञान, क्रिया एवं  
इच्छा तीनों को समन्वित करें।

जीवन का आधार ही 'ज्ञान' है क्योंकि ज्ञान के बिना क्रिया  
और इच्छा फलीभूत हो ही नहीं सकती है।

उद्यमं साहसं धैर्यं विद्यां बुद्धिः पराक्रमः ।  
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैव सहायकृत ॥

उद्यम, साहस, धैर्य, विद्या, बुद्धि और पराक्रम, ये छः तत्व  
जहां होते हैं वहां भाग्य भी सहायता करता है। अर्थात् इन गुणों  
से मनुष्य अपने भाग्य को भी बदल सकता है और उसके कार्य  
सफल हो सकते हैं। तात्पर्य यह है कि किसी दुष्कर कार्य को  
सफल बनाने के लिए साहस के अलावा अन्य गुणों की भी  
आवश्यकता होती है। निरे जोश में आकर या हेकड़ी जाताने के  
लिए किया गया कार्य साहस नहीं अपितु दुस्साहस व मूर्खपूर्ण  
होता है।

ज्ञान व्यक्ति को धैर्य प्रदान करता है, उसे चतुरता प्रदान  
करता है और इसके साथ ही उसके सोचने समझने के साथ  
क्रिया की शक्ति में भी विस्तार करता है। जब ज्ञान और विद्या से

विद्या नाम नरस्य स्वप्नमधिकं प्रच्छन्तगुरुं धनं  
विद्या भोगकरी वशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः ।  
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता  
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

विद्या ही मनुष्य का सौन्दर्य और गुप्त धन है। विद्या ही श्रोता, वश और सुख देने वाली है,  
विद्या ही गुरुओं का श्री गुरु है, परदेस में विद्या ही बन्धु है, विद्या परा देवता है, विद्या ही  
राजाओं में पूजी जाती है, धन नहीं, अतः विद्याहीन नर निरा पशु है।

युक्त शक्ति क्रिया और इच्छा करते हैं तो वह कार्य अवश्य ही परिपूर्ण होता है।

भर्तृहरि कहते हैं कि -

हर्त्याति न गोस्वरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा  
द्वाथिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिपराम्।  
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति लिघ्न विद्याख्यमन्तर्धनम्  
येष्वा तान्प्रति मानुमुञ्जत नृपाः कस्तैः सहस्पर्धते॥

जिनके पास विद्या रूपी धन है उसको चार भी नहीं देख सकते और विद्या निरन्तर कल्याण की वृद्धि करती रहती है। गुरु द्वारा शिष्यों को सर्वदा विद्या देते रहने से भी यह धन बढ़ता ही रहता है, जिसका महाप्रलय में भी कभी नाश नहीं होता। विद्यायुक्त बुद्धिमान व्यक्ति से कोई भी स्पर्धा नहीं कर सकता है।

मनुष्य का शरीर नश्वर है, मरने के बाद नष्ट हो जाता है। फिर उसकी कोई स्मृति नहीं रहती है। आगे की पीढ़ियां उसका नाम तक भूल जाती हैं, शरीर नष्ट होने पर भी उसका यश रूपी शरीर सबके सामने रहता है। कहा है: 'कीर्तिर्यस्य स जीवितः', अर्थात् जिसकी कीर्ति है वह सदा जीवित रहता है, मर कर भी नहीं मरता। उसके नाम को काल भी नहीं खाता।

उपरोक्त विवेचन देने का सार यही है कि साधक अपने जीवन में ज्ञान रूपी सिद्धि प्राप्त करें, बुद्धि रूपी सिद्धि प्राप्त करें, उद्यम रूपी शक्ति प्राप्त हो, साहस का संचार हो, धैर्य का विकास हो और पराक्रम का कभी हास नहीं हो। यही ज्ञान तो शक्ति तत्व का आधार भूत ज्ञान है।

ज्ञान की आधार-शक्ति मां सरस्वती ही है जो जगत को प्रकाश देने वाली, अज्ञान का नाश करने वाली, मनुष्य में कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने वाली मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ मनुष्य में परिवर्तित कर देने वाली, मूर्ख को बुद्धिमान बनाने वाली आधार-शक्ति हैं जिनके ध्यान में नारद ऋषि ने कहा है -  
मुक्ता-कान्ति-निभां देवीं, ज्योत्स्ना-जात-विकारिणीम्।  
मुक्ता-हार-युतां शुभ्रां, शशि-खण्ड-विमण्डिताम्॥  
विभृतीं दक्ष-हस्ताभ्यां, व्याख्यां वर्णस्य मालिकाम्।  
अमृतेन तथा पूर्ण, घटं दिव्यं च युस्तकम्॥

अर्थात् देवीं सरस्वती आप देह-कान्ति मुक्ता की चमक के समान उज्ज्वल हैं, ज्योत्स्ना जैसा प्रकाश उससे निकल रहा है, वे मोतियों के हार से विभूषित हैं, शुभ्र-वर्ण हैं और अर्ध-चन्द्र सफल होते हैं।



से शोभायमान हैं। वार्षीश्वरी देवी चतुर्भुजा हैं। बांएं हाथों में से एक में व्याख्या मुद्रा और दूसरे में वर्ण - माला है। बांएं हाथों में एक में अमृत-पूर्ण कुम्भ है और दूसरे में पुस्तक है।

इस बार दिनांक 31 जनवरी 2009 को सरस्वती जयंती है, वसंत पंचमी है, यह एक महाकल्प है। इस शुभ अवसर पर सरस्वती की साधना कर हम अपने जीवन को एक श्रेष्ठ आधार प्रदान कर सकते हैं। पवित्रा में कई बार सरस्वती साधना के बारे में लिखा गया, लेकिन मुझे यह लिखते हुए खेद है कि लोगों की रूचि सरस्वती-साधना में कम और लक्ष्मी-साधना में ज्यादा रहती है, जबकि वास्तव में होना चाहिए यह कि वे अपने पूरे परिवार के साथ सरस्वती-साधना सम्पन्न करें, जिससे परिवार में श्रेष्ठता, साहस, धैर्य, एवं सतत् जिज्ञासा आये और बालकों में भी सरस्वती-ज्ञान प्रदान करने से उनके जीवन का आधार श्रेष्ठ बनता है और वे बड़े होकर अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में पूर्ण सफल होते हैं।

**बसन्त पंचमी - सरस्वती जयंती पर**

**प्रत्येक शिष्य साधक-साधिका के लिये आवश्यक**

# ज्ञान शक्ति सरस्वती साधना

तंत्र शास्त्र में दस देवियों को दस महाविद्या कहा गया है। देवी के मंत्र का नाम भी विद्या है। जीवन का आधार ज्ञान ही है और ज्ञान की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती हैं जो पुस्तक धारण किये हुए हैं, जो वीणा धारण किये हुए हैं जो आशीर्वद मुद्रा से युक्त हैं, जो व्यक्ति में पूर्ण अभ्य का संचार करती हैं, वह कहीं भी अकेला नहीं होता, ज्ञान रूपी आभूषण से सदैव युक्त रहता है, उसे अपने मित्र और शत्रु की पहचान होती है और यहीं तो साधक की पहचान है क्योंकि ज्ञान साधना कुण्डलिनी शक्ति का आधार है।

सरस्वती-साधना प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। जीवन में परीक्षाएं तो पग-पङ्ग पर चलती ही रहती हैं, हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बालक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करे, हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो, इन्टरव्यू में, नौकरी में सफलता प्राप्त हो, जो बात कहे, वह दूसरों पर प्रभाव डाले, नेतृत्व की क्षमता का विकास हो, तो उसे सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए। इसके अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है और जब एक बार सरस्वती सिद्ध हो जाती है तो वह अपनी कृपा जीवन भर बनाये रखती है क्योंकि माँ सरस्वती लक्ष्मी की तरह चंचला नहीं है, उसका तो स्थायी निवास रहता है।

## साधना-विधान

यह साधना सरस्वती जयंती के दिन प्रातः अथवा किसी भी पुष्ट नक्षत्र में भी प्रातः प्रारंभ की जा सकती है। साधक श्वेत धोती पहन कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठें, जनेऊ धारण करें यदि अपने बालकों को भी साधना कराना चाहते हैं तो उन्हें भी श्वेत धोती पहना कर अपने साथ बैठाएं, चन्दन का तिलक करें, सामने सरस्वती देवी का चित्र अथवा तस्वीर लगाएं, शुद्ध धी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं। अपने सामने एक ताम्र पात्र में एक पुष्ट रख कर उस पर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त से स्पर्श करें।

दिव्य चेतना 'सरस्वती यंत्र' स्थापित करें, उस पर केसर तथा चन्दन चढ़ाएं, अपने हाथ में सरस्वती बीज मंत्र 'ऐ' लिखकर तथा यंत्र के नीचे अपना नाम लिख कर सरस्वती की वन्दना करें।

## विनियोग

दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें -

वन्द्यां परागमविद्यां सिद्धिचण्डी संगिताम् । महा सप्तशती मंत्र स्वरूपां सर्वसिद्धिदाम् । ॐ अस्य सर्व विद्यान् महाराज्ञी सप्तशती मंत्रः रहस्याति-रहस्यमयी पराशक्तिः । श्री मदाद्या भगवती सिद्धि चण्डेका सहस्राक्षरी महाविद्यां श्री मार्कण्डेय सुमेधा ऋषिर्गर्वयत्र्यादि नानाविद्यानि छन्दांसि नवकरेटि शक्तियुक्ता श्री मदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवता श्री मदाद्या भगवती सिद्धि चण्डी प्रसादादस्त्रिलेष्टार्थं जये विनियोगः ।

जल को जमीन पर छोड़ दें।

## न्यास:

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए विभिन्न अंगों को दाएं हाथ से स्पर्श करें।

भगवती महासरस्वती की साधना पूर्ण रूप से एक सातिवक साधना है तथा इसमें आचार-विचार में नितनी अधिक निष्कपटता होगी, साधना में सफलता भी उतनी ही अधिक सन्निकट होगी। महासरस्वती की साधना किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी की सम्पन्न की जा सकती है तथा इन समस्त पंचमियों में से भी माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी की विशेष फलदायक माना गया है, जो इस वर्ष दिनांक 31 जनवरी 2009, की है।

ॐ श्रीं नमः सहस्रादि ।

ॐ वर्तीं नमो नेत्र-युगले ।

ॐ सौं नमः नासापुट्टद्वये ।

हौं ॐ नमः कंठे ।

ॐ ऐं नमो हस्त-युगे ।

ॐ सौं नमः कट्ट्यां ।

ॐ वर्तीं नमो जंघायुगे ।

ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वाणि ।

ॐ ऐं नमः भ्राते ।

ॐ ऐं नमः कण्ठद्वये ।

ॐ नमो सुखे ।

ॐ श्रीं नमो हृदये ।

ॐ वर्तीं नमः उदरे ।

ॐ ऐं नमो गुह्ये ।

ॐ हौं नमो जानु-द्वये ।

#### ध्यान

मां सरस्वती का ध्यान करें। फिर इस मंत्र का 21 बार जप करें-

ॐ या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या महिषोन्मूलिनी  
या धूम्रे क्षणचण्ड-मुण्डदलनी, या रत्न बीजासनी शतिः  
शुभनिशुभमदैत्य मथनी, या सिद्धलक्ष्मीपरा या देवी  
नवक्रोटि-मूर्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।

#### मूल मंत्र

ॐ ऐं हौं श्रीं हीं श्रीं ह्यौं वर्तां ऐं सौं ॐ हौं श्रीं ऐं  
वर्तां सौं ऐं वर्तां हौं श्रीं ज्य ज्य य महासरस्वती जगदाद्यै  
बीज सुरासुर त्रिभुवन निदानेदयांकुरे सर्वतेजोरूपिणि  
महा-स्वरूपिणी महामहिमे महामहारूपिणि महामहामाये  
महामायाविरं चि संस्तुते । विद्यि वरदे सच्चिदानन्दे विष्णु  
देहव्रते महामोहिनी मधुकैटभ जिहासिनी नित्य वरदान के द्वार खोल देती है।  
तत्परे । महास्वाध्यायवासिनी महामहो तेजयारिणी ।

सर्वाधारे सर्वकारण करणे अचिन्त्य रूपे । इन्द्रादि निखिलनिर्जरसे विते सामग्रान जायन्ति पूर्णोदय कारिणि । विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि रक्तांशुके सूर्यकोटि संकाशेन्द्रकोटि सुशीतले अग्निकोटि दहनशीते यम कोटि क्रूरे वायु कोटि वहन सुशीतले ।

संकट हो अथवा कष्ट, इस मंत्र का जप करने से संकट शांत हो जाता है। जीवन के परीक्षाकाल में प्रतिदिन पांच बार इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। यह अपने आप में सिद्धि विजयप्रद मंत्र है। मंत्रों में जो शक्ति है, वह शक्ति साधक स्वयं साधना कर प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है, वास्तव में यह अनुष्ठान ही शीघ्र प्रभावकारक है।

#### विशेष

साधकों के लिए पूर्ण मंत्र का नियमित जप करना संभव नहीं होता है। निश्चय ही मंत्र बड़ा है। अतः नित्य प्रति के साधना क्रम के लिये सरस्वती के कुछ विशेष मंत्र दिये जा रहे हैं; जो साधक के आत्म ज्ञान, वाक्सिद्धि, कार्य में सफलता एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति के विशेष मंत्र हैं। दैनिक जीवन में साधक इन मंत्रों का नित्य स्फटिक माला से मंत्र जप करें, तो उसे अवश्य ही लाभ प्राप्त होता है।

आत्म-ज्ञान हेतु  
वद वद वायवादिनि स्वाहा ॥

वाक् सिद्धि हेतु  
ॐ हीं ऐं हीं ॐ सरस्वत्यै नमः ॥

#### कार्य-सफलता हेतु

ॐ हीं श्रीं ऐं वायवादिनि भगवति अर्हन्मुख निवासिनि  
सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः ॥

सरस्वती साधना में किसी विशेष आरती इत्यादि का विधान नहीं है। साधना समाप्त होने पर अपने हाथ पुष्प लेकर भगवती सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करें और यहीं प्रार्थना करें कि भगवती सरस्वती ज्ञान रूप में, बुद्धि रूप में, चेतना रूप में सदैव हमारे साथ रहें। मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सरस्वती

यंत्र को लाल डोरे में पिरोकर अपनी दाईं भुजा में बांध दें। जब भी सरस्वती-साधना करें तो इस यंत्र को सरस्वती चित्र के साथ अपने दोनों हाथों में रख कर ऊपर लिखे तीन मंत्रों में से अपने कार्य के अनुसार मंत्र जप सम्पन्न करें। वास्तव में सरस्वती साधना जीवन की दिव्यतम साधना है जो अन्य सभी साधनाओं

# सरस्वती दिवस के दिन अपने बालकों के लिये क्या करें?



बालकों में सीखने समझने की क्षमता विशेष रूप से होती है। इसलिए बालकों को सरस्वती-साधना अवश्य करनी चाहिए। यह केवल उनका ही नहीं, उनके माता-पिता का भी कर्तव्य है कि बालक सरस्वती-वन्दना नियमित रूप से अवश्य करें। मैंने अपने जीवन में देखा है कि कई व्यक्ति अपने भीतर तो ज्ञान बहुत समेटे होते हैं लेकिन जब उन्हें बोलने को कहा जाता है, तो वाणी जैसे लड़खड़ाने लग जाती है, कहना कुछ चाहते हैं और बोलते कुछ और ही हैं। इसी प्रकार नौकरी के इन्टरव्यू में जो असफल रहते हैं, उसका कारण अपने आप को, अपने ज्ञान को सही रूप से प्रस्तुत करने की कमी होती है और यह दोष उनके जीवन को साधारण बना देता है, ऐसे व्यक्ति सफल नहीं हो पाते।

**प्रातः:** काल साधक जल्दी उठ जायं और स्नान आदि से निवृत हो कर वसन्ती वस्त्र धारण करें, या पीले वस्त्र पहनें, फिर घर के किसी स्वच्छ कमरे में या पूजा-स्थान में अपने परिवार के साथ बैठ जायं, यदि संभव हो तो सामने सरस्वती का चित्र स्थापित कर दें।

इसके बाद एक थाली में ‘सरस्वती यंत्र’ का अंकन △

निम्न प्रकार से करें यंत्र-अंकन चांदी की शलाका से करें। साधकों को चाहिए कि वह पहले से ही चांदी की एक शलाका या चांदी का एक तार बनवा कर अपने पास रख लें।

इसके बाद एक कटोरी में “अष्टगंध” धोल दें। अष्टगंध में आठ महत्वपूर्ण वस्तुओं का समावेश होता है जो कि अत्यन्त दिव्य होता है। कहते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण के शरीर से अष्टगंध प्रवाहित होती रहती थी। इसके बाद सामने थाली में इस अष्टगंध से ही निम्न प्रकार से सरस्वती यंत्र चांदी की शलाका से अंकित करें।

फिर इस अंकन पर ‘सरस्वती यंत्र’ रखें। सरस्वती यंत्र प्रत्येक साधक या बालक अथवा बालिका के लिए अलग-अलग होता है, ये यंत्र-मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य मंत्र से सिद्ध होने चाहिए।

इसके बाद अलग पात्र में इन यंत्रों को कच्चे दूध से धो कर फिर जल से धोएं और पौछ कर जिस थाली में सरस्वती यंत्र अंकित किया गया था, उस पर इन सभी यंत्रों को रख दें, और उन पर अष्टगंध का तिलक करें, पुष्प चढ़ावें, सामने अगरबत्ती और दीपक लगावें और दूध का बना प्रसाद समर्पित करें, सभी यंत्रों के लिए केवल एक ही दीपक जलाना पर्याप्त है।

इसके बाद सरस्वती मंत्र की एक माला मंत्र-जप पर का मुखिया करे या जितने भी बालक-बालिकाएं हैं, वे सभी मात्र एक-एक माला सरस्वती मंत्र जप करें।

सरस्वती मंत्र

॥ॐ ऐं सरस्वत्यै ऐं नमः ॥

इसके बाद सामने सरस्वती-चित्र रख दें, उसकी संक्षिप्त पूजा करें और उसके सामने पुष्प चढ़ावें, यदि सम्भव हो तो स्वयं और अपने बालकों को भी पीले पुष्पों की माला पहनावें।

इसके बाद घर का मुखिया चांदी की शलाका से अष्टगंध के द्वारा प्रत्येक साधक या बालिका या पत्नी की जीभ पर ‘ऐं’ (सरस्वती बीज मंत्र) लिख लें और फिर अपनी स्वयं की जीभ पर भी इस बीज मंत्र को अंकित करे, इसके बाद चांदी की शलाका को धो कर रख दें।

साधना सामग्री - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

# रूप-रस-उमंग

## आप्सित्सम सौन्दर्य

# रूपोज्जवला अप्सरा

यदि हम अपने शास्त्रों को टटोल कर देखें तो हमारे पूर्वजों ने, उन क्रष्णियों और देवताओं ने सौन्दर्य को अपने जीवन में एक विशिष्ट स्थान दिया और उन अप्सराओं की साधनाएँ सम्पन्न की, जिनके द्वारा वे सौन्दर्यमय, तेजस्विता पूर्ण, सम्पन्न बन सके, अपने जीवन की उन व्यूनताओं को समाप्त कर सके, जिनके बिना उनका व्यक्तिगत अधूरा सा प्रतीत होता था।

हकीकत में देखा जाए तो पूरी प्रकृति को समेट कर जो साकार रूप दिया जाता है उसे अप्सरा कहते हैं, और यदि उस प्रकृति पर रूप का झुरना बहने लग जाए तो उसे रूपोज्जवला अप्सरा कहते हैं।

अप्सरा शब्द सुनते ही हम कल्पनाओं के लोक में विचरण करने लगते हैं, हमारे मानस-पटल में विभिन्न प्रकार के विचार उमड़ने-धुमड़ने लगते हैं, जो हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं, कि कैसा होता होगा वह अप्रतिम सौन्दर्य?

शायद ऐसा, कि जिसे देखकर व्यक्ति ठगा-सा रह जाए... अद्भुत व आश्चर्यजनक सौन्दर्य!

या फिर ऐसा, जिसे देखकर दिल धड़कना बंद कर दे, और सीने में सांसें अटकी रह जाए... ऐसा अनूठा सौन्दर्य! तो फिर क्यों न हो किसी भी मन में ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य को देख लेने की इच्छा! फिर क्यों न हो उसे पा लेने तथा अपने मैं समेट लेने की इच्छा! हम कल्पना करने लगते हैं उस अद्वितीय सौन्दर्य की, उस सौन्दर्य की, जिसे देखने के लिए हमारी आंखें हर पल, हर क्षण लालायित रहती हैं, जिस विचित्र और अचरंज भरे सौन्दर्य का साक्षात्कार हमारे देवताओं ने भी किया है। क्रष्णियों ने उस नारी सौन्दर्य को अपनी कल्पना-

मानव केवल यह कल्पना कर सकता है..., ऐसा होता होगा वह सौन्दर्य, जिसे देख हमारे पूर्वज, क्रष्ण देवता और कवि भी मंत्रमुग्ध हो गए, खो-बैठे अपने-आप को।

किसने गढ़ा होगा यह सौन्दर्य, किन क्षणों में... और कैसे? कौन होगा वह शिल्पकार, और कैसे वह संयत रह गया होगा, इतनी मादकता को एक ही देह में भरते हुए, उसमें प्राण डालते हुए... ऐसा सौन्दर्य तो केवल कवियों की पंक्तियों में या फिर शिल्पकारों के हाथों में छिपे जातू से ही गढ़ा जा सकता है।

और ऐसे ही रूप के भार से लदा सौन्दर्य है, उस 'रूपोज्जवला अप्सरा' का जिसके एक-एक अंग-प्रत्यंग को इसी प्रकार गढ़ा गया है, जो ऐसे ही रूप, सौन्दर्य का खजाना है, जिसकी तुलना अन्य अप्सराओं से भी नहीं की जा सकती, जो अप्सराएं, पूर्णरूप से सौन्दर्य का आधार मानी गई हैं।

बिना सौन्दर्य के तो नारी-शरीर की कल्पना ही नहीं की जा सकती, या यूं कहें, कि नारी-शरीर के बिना सौन्दर्य कहीं खिल ही नहीं सकता, ...यों तो प्रकृति-सौन्दर्य, उद्गेग से आपूरित होकर अपने मन की अभिव्यक्ति को अलग-पुरुष-सौन्दर्य भी होते हैं, लेकिन सौन्दर्य जहां खिल उठता अलग ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर साधारण है, वह नारी ही होती है।

भारतीय शास्त्रों में सौन्दर्य को जीवन का उल्लास और उत्साह माना गया है, यदि जीवन में सौन्दर्य नहीं है, तो वह जीवन नीरस और बेजान हो जाता है। इसका कारण यह है कि हम सौन्दर्य की परिभाषा ही भूल चुके हैं, हम अपने जीवन में हँसना, मुस्कराना ही भूल चुके हैं। हम धन के पीछे भागते हुए एक प्रकार से अर्थ-लोभी बन गये, जिसकी वजह से जीवन की अन्य वृत्तियां लुम सी हो गई हैं। ठीक इसी के विपरीत जैसा कि मैंने कहा, कि यदि हम अपने शास्त्रों को टटोल कर देखें तो हमारे पूर्वजों ने, उन ऋषियों और देवताओं ने सौन्दर्य को अपने जीवन में एक विशिष्ट स्थान दिया और उन अप्सराओं की साधनाएं सम्पन्न कीं, जिनके द्वारा वे सौन्दर्यमय, तेजस्विता पूर्ण, सम्पन्न बन सके, अपने जीवन की उन न्यूनताओं को समाप्त कर सके, जिनके बिना उनका व्यक्तित्व अधूरा सा प्रतीत होता था।

उन अप्सराओं को सिद्ध करने के पीछे उन पूर्वजों का चिंतन यह नहीं था कि वे अपने सामने एक नारी-शरीर उपस्थित करके अपनी वासना को, कामोत्तेजना को शांत कर सकें, अपितु इनके माध्यम से उन्होंने जीवन में ऐश्वर्य, धन-धान्य पूर्ण सौन्दर्य आदि प्राप्त कर, विशिष्ट प्रतिमान को समाज के सामने रखा, जिस सौन्दर्य का अर्थ ही पूर्णता व श्रेष्ठता देना है।

अप्सरा और सौन्दर्य दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं, और किसी भी अप्सरा के बारे में जानने के लिए हमें सबसे पहले उसके अपूर्व सौन्दर्य को समझना आवश्यक है।

अप्सरा का आज जो भी अर्थ लगाया जाता हो, भले ही उसको लेकर छिछला और कामुक चिन्तन किया जाता हो, परन्तु यह अपने-आप में एक सत्य है कि नारी के साहचर्य के बिना कोई भी कला या कोई भी कलात्मक शैली अपूर्ण ही है चाहे वह नृत्य की बात हो या गायन की, या फिर मधुर वार्तालाप की।

और सभी देवताओं व ऋषियों जैसे - वशिष्ठ, विश्वामित्र, इन्द्र आदि ने इस सौन्दर्य को अपने जीवन में निवास दिया, एक महत्वपूर्ण स्थान दिया, जिससे साधारण मानव को भी उर्वशी, मेनका, रम्भा आदि के साधनात्मक चिंतन को स्पष्ट कर उन्हें पूर्णता का मार्ग दिखलाया, जो जीवन में रस भर दे, सौन्दर्य भर दे, और रस और सौन्दर्य अगर किसी के जीवन में प्राप्त हो जाए, तो वह जीवन सफल, श्रेष्ठ और अद्वितीय कहलाता है।

उन देवताओं ने उन विशिष्ट साधनाओं को सम्पन्न कर, उनका नख से शिख तक पूर्ण वर्णन कर, समाज को उस

रहस्यमय और अद्भुत सौन्दर्य से परिचित कराया, जो उससे अज्ञात था, अद्वृता था, अनभिज्ञ था। जीवन में रसमय होने की, सौन्दर्य और रूप के क्षणों को चुरा लेने की तो सैकड़ों अदाएं हैं, कहीं किसी एक अदा से बंधी है कोई अप्सरा, तो कहीं किसी दूसरी अदा से कोई दूसरी।

और इसी सौन्दर्य का एक और प्रतिबिम्ब हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है उस 'रूपोज्ज्वला अप्सरा' के माध्यम से जिसमें केवल लुभा लेने के लिए एक अदा ही नहीं है अपितु पूर्ण सौन्दर्य का लबालब भरा जाम है, जिसे मात्र देखकर ही कोई व्यक्ति स्तब्ध और निष्प्राण हो जाए, ... और व्यक्ति ही नहीं देवता भी जिसके सौन्दर्य को देखकर निष्प्राण से हो जाए।

हाँ! ऐसा ही वह अप्रतिम और अनूठा सौन्दर्य, प्रेम और आनन्द से लबालब भरा हुआ, जो किसी को भी अपने अंग-प्रत्यगों के गठन से बांध ले, स्तम्भित कर दे उसे।

इस सौन्दर्य को देखकर कौन नहीं अपने-आप को भुला बैठेगा? रूप, रंग, योवन और मादकता की तो कई झलकियां देखी होंगी आपने अपने जीवन में, लेकिन जो सौन्दर्य आंखों से लेकर दिल तक एक अक्स बनकर उत्तर जाए, उसी का नाम है रूपोज्ज्वला अप्सरा।

ऐसा अप्रतिम और अनूठा सौन्दर्य, जो खींच ले चुम्बक की तरह अपनी ओर, सौन्दर्य से भी अधिक मादकता और मन को लुभा लेने की कला अपने-आप में समाये देवांगना की एक अपूर्व गाथा, जिससे हम अभी तक अपरिचित थे, एक अप्रतिम सुन्दरी जिसे देखकर रंग-रंग में तूफान मचल उठे।

'रूपोज्ज्वला अप्सरा'... जैसा इसका नाम है वैसा इसका सौन्दर्य भी है, जो एक निर्झर झरने की तरह एक अबाध गति से बह रहा हो। व्यक्ति को या देवता को पहली ही बार में बेसुध कर देने वाला सौन्दर्य, जो केवल और केवल मात्र रूपोज्ज्वला अप्सरा में ही है।

हकीकत में देखा जाए तो पूरी प्रकृति को समेट कर जो साकार रूप दिया जाता है उसे अप्सरा कहते हैं, और यदि उस प्रकृति पर रूप का झरना बहने लग जाए तो उसे रूपोज्ज्वला अप्सरा कहते हैं।

रूपोज्ज्वला अप्सरा तो सम्पूर्ण यौवन को शरीर में उतार देने की स्वामिनी है। सुन्दर, पतला, छरहरा शरीर, मानो पुष्प की पंखुड़ियों को एकत्र करके बनाया गया हो, जिन गुलाब की कोमल व नरम पंखुड़ियों पर अभी तक ओस की

एक नारी शरीर तैयार कर दिया गया हो, और उसमें से सुगंध प्रवाहित होकर सारे शरीर से होती हुई असमय बूढ़े पड़ गए मन में जवानी के भीगे-भीगे दिनों की पुनः याद दिला जाए।

अण्डाकार चेहरा, उस पर झील सी गहरी आंखें, जो कभी-

## बसन्त पंचमी कामदेव रति साधना दिवस

काम, अनंग, रति, वसंत, मदन इन सब शब्दों का नाम आते ही मन में एक अजीब सा भाव जाग्रत होने लगता है, शरीर का रोम-रोम एक विशेष एहसास से जाग्रत हो जाता है, हृदय की धड़कनें बढ़ने लगती हैं। आखिर इस मन की गति भी तो विचित्र है, मनुष्य की परिभाषा भी तो यही है जिसमें मैं मन हो। मन के भाव वस्तत आने पर एक अलग ही दिशा में जाग्रत होने लगते हैं। ईश्वर ने भी सृष्टि रचना में स्त्री और पुरुष को इसलिये बनाया कि यह अपने मन के भावों को जाग्रत कर सकें और जैसे ही मनुष्य में मन को डाला उसके साथ ही काम को भी डाल दिया क्योंकि काम ही तो प्रेम, उत्पत्ति, वृद्धि, आकर्षण का आधार है जगत में बाह्य तोर पर कुछ भी कहे लेकिन जीवन का आधार तो काम ही है काम का अर्थ केवल प्रेम और प्रेम।

कामदेव रति साधना तो बालक से लेकर वृद्ध तक सभी के लिये आवश्यक है जो जीवन में आकर्षण, सम्मोहन, ऊर्जा, शक्ति, ज्ञान, सौन्दर्य, पराक्रम, बल, बुद्धि चाहते हैं और यही हमारी साधना का आधार है। इसीलिये अनंग को भगवान की उपाधि से विभूषित किया गया है। क्योंकि सृष्टि में 'काम' नहीं है तो यह सृष्टि बंजर है क्योंकि सृष्टि का आधार ही 'प्रकृति' और 'पुरुष' का मिलन है इस चराचर जगत में जो कुछ भी दृश्यमान अदृश्यमान है वह काम और रति का ही विस्तार है।

साधक बंसन्त पंचमी के दिन सौन्दर्य साधना, वशीकरण, सम्मोहन-साधना, अनंग साधना सम्पन्न करना ही चाहता है। इस हेतु एक विशेष 'बसन्त साधना पैकेट' तैयार किया गया है। इस सम्बन्ध में आलेख जनवरी 2009 के अंक में प्रकाशित किया जाएगा। साधक इस साधना पैकेट प्राप्ति हेतु जोधपुर कार्यालय में आर्डर लिखा दें।

साधना पैकेट - 430/-

कभी उठकर देखें तो यूं लगे कि ठहरी झील में किसी ने शरारत से कोई कंकड़ फेंक कर, थरथराहट पैदा कर दी हो, निर्दोष मुखाकृति, यौवन की गुलाबी आभा से भरी नाक, दो गुलाब की पंखुड़ियों को एक-दूसरे पर रखे हुए लालिमा युक्त अधर जिन्हें देखते ही चूम लेने की जो चाहे, चिबुक ऐसा, जिसमें छोटा-सा गड़ा पड़ा हो और कामदेव उसमें कूदने को आतुर हो रहे हों, दन्त पंक्ति छोटी, सुन्दर व स्वच्छ और काले घने बाल तो ऐसे, जैसे कोई झरना सा फूटा हो और नितम्बों पर से लहराकर नीचे उतर गया हो, स्वस्थ और पुष्ट गर्दन जिसमें पड़ा हो कोई पतला सा सूत्र, वक्षस्थल ऐसा समुन्त्र, जिसे देखते ही व्यक्ति बेसुध ठगा सा रह जाए, जो व्यक्ति की कल्पना से भी परे हो, जैसे उसके बोझ से सारा शरीर लचक रहा हो, गुलाब की डालियों की तरह मचलता हुआ पीपल के पते की तरह पेट, मुट्ठी में आ जाने लायक कमर, हस्ती-शुण्ड की तरह पुष्ट व सुन्दर जंघाएं, जो किसी भी हृदय को उत्तेजित कर दे, उभरे नितम्ब और पैर देखकर तो ऐसा लगे कि जैसे दो कमल, धरती पर मैले न हो जाएं।

इन सभी अंग-प्रत्यंगों की रेशम जैसी कोमल गढ़न में ढला हुआ हल्का मांसल बदन, जिससे बिना कहे ही निमंत्रण की ध्वनि आ रही है... ऐसे ही सम्पूर्ण यौवन को शरीर में उतार देने की स्वामिनी है 'रूपोज्ज्वला अप्सरा'।

सौन्दर्य के समुद्र से उत्पन्न वह श्रेष्ठ रत्न, जिसके समान दूसरा कोई रत्न उत्पन्न ही नहीं हो सका, और यह सच ही तो है, ऐसे रत्न क्या बार-बार गढ़े जाते हैं... नहीं, यह तो कभी-कभी प्रकृति के खजाने से अनायास प्राप्त हो जाने वाली वस्तु है, और प्रकृति के इस खजाने से, सौन्दर्य के इस खजाने से पूर्ण सौन्दर्य केवल रूपोज्ज्वला अप्सरा का ही है।

किसी भी पूर्णिमा को आप इस रूपोज्ज्वला अप्सरा-साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में ऐसे ही लबालब भरे सौन्दर्य को अपने शरीर में समाहित कर सकते हैं। 'अप्सरा साधना' को सिद्ध करने के पीछे कोई उसका अंग-प्रत्यंग या शारीरिक कामोत्तेजक चिंतन नहीं है वरन् ऐसा ही पूर्ण सौन्दर्य, रस, खुशबू उस साधक के जीवन में भी समाहित हो सके, जो उसके भीतर उसके वृद्ध विचारों को यौवनावस्था में बदल कर उमंग, जोश और उत्साह पूर्ण सौन्दर्य का समावेश कर दे। जिसके माध्यम से उसे जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, सुख-सम्पत्ति, वैभव, यश, श्रेष्ठता व पूर्णता प्राप्त हो सके।

इस पूर्णता को देने वाली है यह 'रूपोज्ज्वला अप्सरा सिद्धि-साधना' जो अत्यंत ही दुर्लभ और गोपनीय है। इस साधना

को सम्पन्न कर, व्यक्ति के अन्दर स्वतः ही कायाकल्प की प्रक्रिया आरम्भ होने लगती है।

इस रूपोज्ज्वला अप्सरा साधना को सिद्ध करना किसी भी दृष्टि से अमान्य और अनेतिक नहीं है। यह अपने-आप में अत्यंत गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना है, जिसकी जानकारी हमें एक साधु से की गई वार्ता के दौरान मिली। उस साधु के माध्यम से हम आपके सामने यह दुर्लभ साधना स्पष्ट कर पाए हैं, जो जीवन की श्रेष्ठतम और अद्वितीय साधना है।

इस दुर्लभ अप्सरा साधना का वर्णन उस साधु को काठमाण्डू में स्थित एक ग्रन्थालय से प्राप्त पुस्तक के माध्यम से हुआ। जिस दुर्लभ साधना से हम सब अभी तक वंचित थे, जो हमें पूर्णता ही नहीं, अपितु सम्पूर्णता देने वाली साधना है।

इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति निश्चिंत और प्रसन्नचित बना रहता है, उसे अपने जीवन में मानसिक तनाव व्याप नहीं होता, इस रूपोज्ज्वला साधना के माध्यम से उसे मनचाहा स्वर्ण, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण और अन्य भौतिक पदार्थ उपलब्ध होते रहते हैं, यही नहीं, अपितु इस अप्सरा-साधना को सिद्ध करने पर साधक इसे जो भी आज्ञा देता है वह उस आज्ञा का तुरन्त पालन करती है, और इस प्रकार साधक अपनी आवश्यकता और महत्वपूर्ण सभी मनोवांछित इच्छाओं की पूर्ति कर लेता है।

वैसे तो यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है, किन्तु पूर्णिमा के दिन इस साधना को सम्पन्न करना विशेष लाभप्रद होगा, क्योंकि हर साधना को सम्पन्न करने के लिए शास्त्रों में एक विशेष समय निर्धारित किया जाता है जिससे कि साधक को उस साधना में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो सके।

#### साधना-विधि

पूर्णिमा की रात्रि में किसी भी समय साधक इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। साधक को चाहिए कि वह अत्यंत ही सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र पहन कर साधना-स्थल पर बैठ जाए, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्रों को धारण किया जा सकता है, जो सुन्दर और आकर्षक लगें।

इस साधना में आसन, दिशा आदि का इतना महत्व नहीं है, जितना कि व्यक्ति के उत्साह, उमंग, सुमधुर और कामनाओं से भरे मन का है। फिर साधक अपने सामने गुलाब की दो मालाएं रखे, उसमें से एक माला वह स्वयं धारण कर लें, फिर एक विशेष प्रकार से मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त, चैतन्य रूपोज्ज्वला अप्सरा यंत्र को साधक पूजा-स्थान में स्थापित



कर दें, और दूसरी सुगन्धित पुष्प की माला इसके सामने रख दें, सामान्य अथवा प्रयुक्त किया हुआ यंत्र इस साधना में लाभप्रद नहीं होता, फिर इत्र का दीपक उसके सामने जला दें, जो सम्पूर्ण साधना में जलता ही रहे। पूजा में साधक वस्त्रों पर इत्र छिड़क कर बैठें, जिससे सारा वातावरण सुगन्धित हो सके, इसके पश्चात् वह मंत्र जप आरम्भ कर दें।

#### मंत्र

#### ॐ श्रीं रूपोज्ज्वला वश्व मानाय श्रीं फट्

इस मंत्र का 21 माला जप करना होता है। यह मंत्र-जप अप्सरा माला से सम्पन्न किया जाता है।

यह साधना विश्व की दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण साधना है। अगर व्यक्ति को अपने जीवन में वह सभी कुछ पाना है, जिसे श्रेष्ठता कहते हैं, दिव्यता कहते हैं, सम्पूर्णता कहते हैं तो वह मात्र रूपोज्ज्वला अप्सरा सिद्धि साधना के माध्यम से ही संभव है।

यह साधना अपने मादक, प्रवीण, वरदायक, शक्तियुक्त, अद्भुत, सम्मोहनकारी प्रभाव से सिद्धि साधक को पूर्णता देने में समक्ष है।

आप्सरा, उर्वशी, यक्षिणी-साधना प्रत्येक साधक सम्पद्न करना चाहता है क्योंकि भौतिक जीवन में पूर्ण आनन्द-प्राप्ति के लिये आप्सरा, यक्षिणी और उर्वशी आवश्यक हैं। हमारे ऋषियों ने इन साधनाओं को सम्पद्न किया तथा उर्वशी और आप्सरा को साक्षात् अपने समक्ष उपस्थित कर दिया। यह आज के युग में श्री सम्भव है, उस हेतु आवश्य पाठ करें -

# दार्शनिका रसायन

उन्मत्त भैरव द्वारा एचित यह योगिनी स्तोत्र नारी-स्वरूप की उपासना नहीं है अपितु नारी के उन गुणों का वर्णन है जो जीवन में आनन्द प्रदान करते हैं। प्रकृति नारी जीवन के सौन्दर्य का स्वरूप है और हमारे ऋषियों ने तांत्रिक साधनाएँ सम्पद्न कीं, वहीं देवी रूप में नारी के रूप को श्री पूर्णरूप से बखाना है। इस स्तोत्र का पाठ करने मात्र से आनन्द की अनुभूति होने लगती है, दार्शनिक जीवन में सरसता आती है, भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

६३८

हृदयाम्भोरुहे	६३८,	सुन्दरीं	नव-यौवनाम् ।
किञ्चिणी-जाल-मालाद्यां,		त्रिपुरां	पद्म-लोचनाम् ॥
वराभय-करां	धन्यां,	योगिनीं	काम-चारिणीम् ।
अ॒ं वन्दे योगिने! योग-सिद्धि-धनदे!	बन्धुक-पुष्पोज्ज्वले,		
नालालंकृति-विग्रहे!	सुर- मणि श्रीदेव - कन्ये प्रिये!		

दारिद्र्यं हन मे सुखं प्रिय-पदं वाञ्छादि - सिद्धि देहि,  
राज्यं मित्र - कलत्र - पुत्र - धनदे! मातः! समर्थेहि मे ॥१॥

तावांश्चि - कमल - द्वयं तरुणि देवते। दारुणं,  
महा-भय-समाकुलं हर भजामि भू-मण्डले ।

कृपां कुरु ममालये स-परिवार-देवैः सह,  
सदा भव हि भागिनी क्षम कुलाप-तापं मुद्रा ॥२॥

त्वमेकां योगिनी कन्या, पिङ्गला युवती रतिः ।  
जौरी विद्या - धरी श्यामा, प्रसन्ना भव सर्वदा ॥३॥

त्वं सन्ध्या खेचरी विद्या, यक्षिणी भूतिनी प्रिया ।  
त्वमेका पातु मां धात्री, स्वर्ण-पात्र-करुणामुजा ॥४॥

हिरण्याक्षी विशताक्षी, चपला नागिनी जया ।

प्रसन्ना भव शब्दाल्पया, कामिनी काम - दायिनी ॥५॥

सिद्धिदा कुल - मन्त्राणां, डाकिनी खेचरी भव।

नमामि वरदे देवि! योगिनी - जण - सेविते ॥६

तवांश्चि - युगलं कान्ते! चन्द्र-कान्ति-सुमालिनी।

अमले कमले देवि! दासिद्वय - दोष - भजिजनी ॥७

वन्दे त्वां मनसा वाचा, प्रसन्ना भव सुन्दरि।

कलि-काल-कृते देवि! खेचरी - शत - नारिके ॥८

थज-सिद्धि देहि शीघ्रं, समागच्छ जहे मम।

सिद्धिदा विधुराणां च, अकाल - मृत्यु - नाशिनी ॥९

दश - वर्ष - सहस्राणि, स्थिरा भव कुले मम।

वाक्य - सिद्धि - प्रदादेवी, पद्मराज - सुमालिनी ॥१०

सर्वालङ्कार - भूषणी, प्रसन्ना भव सर्वदा।

माया-बीजात्मिका देवी, वधू-बीज-समाकुले ॥११

सिद्धि-द्रव्यं सदा देहि, कान्ता भव ममालये।

विचित्राम्बर-शोभाङ्गी, नानालङ्कार - वेष्टिते ॥१२

विम्बार-मणि-सूर्याम्बे, चन्द्र-कान्ति-प्रभोजज्वले।

स्मेराननाघे कामेशि! ममाङ्गापय दुर्लभम् ॥१३

कामेशि! परमानन्द - राज - भोज - प्रदायिनी।

सिद्धिदा वरदा माता, भगिनी वा भव प्रिया ॥१४

तवाङ्गा-किङ्गरी देवि! पूजयाम्यहमादरात्।

ममाञ्जे संस्थिरा भूत्वा, सिद्धिदा भव सर्वदा ॥१५

कौलिनी जगन्स्था त्वं, मम पार्श्व - चरी भव।

शत-वर्ष-सहस्राणि, मामेकं रक्ष सेवकम् ॥१६

त्वामेकां जगतां देवि! सिद्धि-विद्यां नमाम्यहम्।

ममाङ्गे चैव पार्श्वं त्वं, कामिनी भव मे सदा ॥१७

दश-वर्ष-सहस्राणि, सिद्धि! कमल-लोचनाम्।

वनिता भव मे नित्यं, नित्यं देहं कुरु प्रिये ॥१८

॥फल-श्रुति॥

एतत् स्तोत्रं पठेद् विद्वान् ध्यानाम्यास-समन्वितम्।

पववाङ्मं नारिकेलं वा, खण्ड-मिश्रं निवेदयेत्।

सिद्धि यच्छन्ति भूतिन्यः, स्तोत्र-पूजा-प्रभावतः ॥

॥वृहद्-भूत-साधना डामरे महा-तंत्रे नारिका-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

## हिन्दी शास्त्रार्थ

मैं हृदय कमल में नव-युवती सुन्दरी का द्यान करता हूँ  
यह कमल-नयना त्रिपुरा योगिनी इच्छानुसार कार्य करती  
है। धार्थां में कर और अभय हैं। किंकिणी आदि आश्रूषणों  
और मालाओं से विभूषित उसका स्वरूप द्यान-कर्ता की  
धन्य कर देता है।

है योगिनि! योग-सिद्धि रूप धन की देनीवाली! बन्धुक-  
पुष्प डैसी उड्डवल आभावाली! विविध अलङ्कारों से  
विभूषित शरीरवाली! देवताओं की मणि-स्वरूपा है प्रिय  
देव-कन्या! मेरी दरिद्रता की नष्ट करौ। सुख, प्रियपद की  
सिद्धि प्रदान करौ। राज्य, भित्र, परिवार, पुत्र और धन-  
दायिनी है माता! मुझे कृतार्थ करौ॥१॥

है युवती देवी! मैं वठदगा करता हूँ। तुम्हारी कमल-डैसी  
सुन्दर दीनों जांघें पृथ्वी पर व्याप - व्याकुल करने वाले  
दारुण अय के दूर करें। परिवार-देवों के साथ मेरे घर पर  
कृपा करौ और सदा ही सभी दुःख कष्टों का निवारण करती  
रही॥२॥

तुम अकेली योगिनी कन्या, पिङ्गला, युवती, रति, गौरी,  
विद्या-धारी और श्यामा है। मुझ पर सदा प्रसङ्ग रही॥३॥

तुम सठ्ठ्या, खैचरी विद्या, यक्षिणी, प्रिया शूतिनी हैं।  
कर-कमलों में स्वर्ण-पात्र-धारिणी तुम अकेली धात्री हैं,  
मेरी रक्षा करौ॥४॥

तुम हिरण्याक्षी, विशालाक्षी, चपला, नागिनी, डया,  
कमिनी, काम-दायिनी, शब्दान्त्या हैं, मुझ पर प्रसङ्ग  
रही॥५॥

कुल-मंत्रों की सिद्धि देने वाली डाकिनी, खैचरी, तुम  
वर-दायिनी और योगिनियों द्वारा सैविता है। मैं तुम्हें  
नमस्कार करता हूँ॥६॥

है कान्तो! तुम्हारी दीनों जांघें चन्द्रमा की उथोति में  
सुशोभित हैं। है अभले, कमले, देवि! तुम दरिद्रता के दुःख  
का नाश कर देती हो॥७॥

है कलि-काल-कृतै देवि! खैचरी-शत-नायिकै! मैं मन  
और वचन से तुम्हारी वठदगा करता हूँ। है सुन्दरी! प्रसङ्ग  
ही॥८॥

है अकाल-मृत्यु का नाश करने वाली और विद्युतों की  
सिद्धि देने वाली! मेरे घर में आओ, और शीघ्र धन की  
सिद्धि प्रदान करौ॥९॥

पद्म-राज और सुन्दर मालाओं से सुशोभिता है वाक-  
सिद्धि-दायिनी देवी! मेरे कुल में दस हजार वर्षों तक स्थिर  
होकर रही॥१०॥

माया-बीज(ही) और वधु-बीज (स्त्री) से युक्त सभी  
आश्रूषणों से सुशोभित है देवि! मुझ पर सदा प्रसङ्ग  
रही॥११॥

विलक्षण वस्त्रों से सुशोभित शरीरवाली, विविध अलङ्कारों  
से सजिता है देवी! मेरे घर में कान्ता-रूप से रही और  
सदा सिद्धि-रूपी द्रव्य प्रदान करौ॥१२॥

सूर्य, चंद्र, अग्नि-मणि डैसी कान्तिवाली, मुस्कान-  
युक्त-मुख-कमले है कामीशि! मुझे दुर्लभ ज्ञान प्रदान  
करौ॥१३॥

परमानन्द और राज-सुख प्रदान करने वाली है कामीशि!  
मेरे लिए सिद्धिदा वर-दायिनी मां या बहन या प्रिया  
बहनी॥१४॥

है देवी! मैं तुम्हारा सैवक हूँ। आदर-पूर्वक तुम्हारी पूजा  
करता हूँ! मेरे घर में स्थिर होकर सदा सिद्धि-दात्री  
रही॥१५॥

तुम आकाश में रहनेवाली कौलिनी हो, मेरे बगल में रही  
और सैकड़ों-हजारों वर्षों तक मुझ सैवक की रक्षा करो॥१६॥

है जनत् की देवी! तुम अकेली सिद्धि - विद्या की मैं  
नमस्कार करता हूँ। तुम मेरे शरीर में और मेरे बगल में  
सदा कामिनी - रूप में रही॥१७॥

है कमल-नयनी सिद्धे, प्रिये! दस हजार वर्षों तक तुम  
मेरी विनिमया रही। सदा दैह-धारी रही॥१८॥

फल-श्रुति! द्यान के अव्यास सहित विद्वान् इस स्तौत्र  
का पाठ करें, पका हुआ अङ्ग या नारियल और भिश्री -  
खण्ड - नैविद्य - रूप में निवैदित करें। इस स्तौत्र-पूजा के  
प्रभाव से नायिका देवी सिद्धि प्रदान करती हैं।

अप्सरा, उर्वशी साधना तो सभी करते हैं लेकिन सफलता  
कुछ को ही प्राप्त होती है क्योंकि साधक सीधे फलप्राप्ति  
हेतु उत्सुक हो जाते हैं जबकि आवश्यक है कि पहले  
“मंत्र-सिद्धि प्राणप्रतिष्ठा युक्त अप्सरा नायिका कवच को  
शुक्रवार के दिन धारण कर लें। अप्सरा-साधना करने से  
पहले उस कवच को अपने सामने एक पात्र में सख दें।  
यहां यह ध्यान सखना आवश्यक है कि इस कवच को  
बांह पर धारण करना है, गले में नहीं पहनना है।

साधना सामग्री - 300/-

NAV VARSH SADHANA

# HAPPY NEW YEAR

Hearing these words of greetings one is filled with a feeling of newness and life seems standing at another milestone, ready to fly off to a new start. The word "new" denotes change, something novel, something different and with it life braces itself for a transformation.

On the first day of the New Year everyone wishes for a good start, a good beginning so that whole year passes in constant progress and success.

This day is one of deep contemplation. Looking back one sees the previous year filled with its sad and happy, sweet and sour memories and turning one's eyes to the year lying ahead one beholds a fresh clean land in the horizon ready to be sown with the seeds of success.

Every person waits for twelve long months for this golden day to dawn, and the morning on which one hears the air ringing with the sweet greeting of Happy New Year, one knows that the day is here at last. Then one is filled with joy and enthusiasm to make a new start in life, to make new resolutions and embark on new start in life new projects.

Life is undoubtedly a path full of challenges, and one who faces these challenges fearlessly comes out on the top as the winner. No one is born with a winner's streak in him. This spirit has to be developed through hard work and dedication. A mother is responsible for a child's growth, for it is she who introduces him to good or bad habits. Similarly we ourselves are responsible for the states we are in.

If we develop bad habits we are sure to suffer and life then seems miserable. But if a person is hard working, sincere and true to himself he is sure to progress in life.

The New Year presents a unique opportunity to instil a novelty, a change into one's life. The first day of New Year is in fact very auspicious and it matters a lot how you spend it. You may go to a bar or club and spend the New Year eve dancing, drinking and merry-making. But such escapades are not at all a source of true joy, for true joy is generated from within, for true joy is attained by tasting success in life.

In fact spending these auspicious moments thus is wasting a golden opportunity to transform your life.

The early hours of the New Year day present such sacred, auspicious moments when you can develop the power to concentrate your will, which shall then help you throughout

the year to face all adversities fearlessly. And the best way to develop such power is to accomplish some Sadhana.

"*Nav Varsh Unnati Prayog*" is one such Sadhana practice through which you can instil totality into your life. By devoting only an hour or so in the early morning of the New Year day, you can instil all the 365 days of the Year with joy, enthusiasm and uniqueness, thus assuring success in all spheres of life. If you can't do it on the New Year day, you can try it on any day of Jan 2009.

Thus one can not only rise in material life but also attain spiritual accomplishments.

*The special feature of this Sadhana practice is that it can be accomplished on the New Year day of any calendar ie. Christian, Vikram, Shaka or any other era. In fact for every person his birthday is also the start of a new year of his life. Hence this Sadhana can be accomplished even on one's birthday.*

The ancient sages used to spend the early hours of the New Year day, according to their date systems, engrossed in special Sadhanas to generate divine powers and concentrate them. These powers then they used throughout the year to accomplish other Sadhanas with zeal & enthusiasm. The time when the first rays of the sun appear on the horizon is said to be the best for this Sadhana.

## SADHANA PROCEDURE

It's better to perform this Sadhana with the whole family for the good of all the members in the year ahead. Get up before the sun rise and take a bath. Wear fresh yellow clothes. The following articles should be kept ready beforehand - A copper tumbler filled with water, unbroken rice grains, vermillion, coconut, incense, a lamp, ghee, fruit, flowers, sweets & Itra (natural perfume).

Be seated with a peaceful mind on a worship-mat and before yourself place the picture of the Guru and a Treilokya Varsheshwar Yantra. Light incense stick and the lamp filled with pure ghee. Put a mark of vermillion on both and offer flowers, fruit and sweets. Place the coconut on a tumbler filled with water. Meditate upon the form of the Guru and then chant 5 rounds of the following Mantra with a Rock Crystal rosary (Sfatik).

**OM HREEM AYEIM SHREEM PURNNA NAV VARSHA DHANDHAANYA SAMRIDDHI PURNNATVA DEHI DEHI NAMAH.**

After the completion of the chanting offer the Yantra & rosary in the feet of some God in a temple or disperse them in a river.

Through this Sadhana the whole year shall be spent filled with joy and success. You shall acquire all attainments of a happy life like good health, wealth, prosperity and good fortune.

May this year prove to be a turning phase of your life and achieve joy, good luck and constant progress. Once again wishing you a very HAPPY NEW YEAR!

# BEAUTY THROUGH MANTRA

To have true joy in life is not a mean accomplishment. It is something for which Yogis have done tough Sadhanas for thousands of years. And it is a fact that if a person is truly determined then there is nothing impossible for him in life. Through Saddhanas one can gain confidence and a divine radiance on one's face.

A face lit by true happiness – can there be a better definition of beauty? Beauty does not epitomise only good looks. Beauty means to be free of tensions and full of joy and love for life.

Today men and women spend so much on external devices just to look beautiful. Only if they knew that the true source of beatuy lies within. Through surgery one sure can obliterate wrinkles but can surgery bring glow and confidence on one's features?

We have had great Rishis like Dhanvantari, Ashwini and Chyavan who spent their entire lifetime trying to find out means of transforming old age into youth and freeing the body of all ailments and infirmities. And this process they called Kayakalp or physical transformation. Kayakalp means an alchemy that could make a 60 year old feel energetic and enthusiastic like a 16 year old person. It is not just the aging body but also one's thoughts that make us feel old.

And to be joyful is being young. Beauty is the basis of life. It is a God given gift and everyone has a right to look and feel beautiful. I have seen thousands of years old sadhaks and Sadhikaas in Siddhashram who look so divinely beautiful in spite of their age.

The secret of their youth and beauty is Soundarya Sadhana. It is a ritual which even the Apsaras or heavenly nymphs try in order to look ever enchanting. This Sadhana can be tried irrespective of whether you are a man or a woman.

The Sadhana must be tried on a **Friday** between 9 pm and midnight. Have a bath and wear fresh clothes. Sit facing north on a white seat. Cover a wooden seat with a white cloth, keep a tumbler filled with water in it. Cover the mouth of the tumbler with a plate filled with dyed yellow rice grains.

Take a **Soundarya Yantra** and bathe it with water. Apply fragrance to the Yantra. Light ghee lamp and incense. Place the Yantra on the rice. Then make five marks with saffron on the Yantra. On the Yantra place a **Neelkarnna Mudrika**. Make a mark on the Mudrika too. Offer rice grains on the Yantra and Mudrika. Then offer flowers. Join both palms and chant this verse.

**SOUNDARYA BHAVATEERAHOKE,  
MAADHURYA OJAM TEJASTAHEDAM.  
ROOPO-JWALAA ROOPDIVHYAA  
PRAPANNAA, YAACHE YA NITYAM  
TVAMDEHI MAATAH.**

Then chant 54 rounds of the following mantra with a **Roopaa rosary**.

**OM SHREEM SOUNDARYAABHI-  
VAAPTAYE SHREEM NAMAH**

After the chanting, chant one round of Guru Mantra. Do this for two days. Each day after Sadhana sprinkle the water of the tumbler over your body and drink a part of it. The third day wear the Mudrika (Ring) on any finger and drop the other Sadhana articles in a river or pond.

Within a few days one starts feeling a subtle change within which makes one feel enthusiastic and energetic than ever before provided Sadhana is done with faith.

Sadhana Articles 240/-

# DRIVE AWAY POVERTY

For leading a balanced life there should be a balance in Dharma (righteousness), Arth (Wealth), Kaam (pleasures) and Moksh (freedom from attachments) in one's life. This is the view of our ancient texts and Rishis. No where have our ancestors emphasized a life of paucity and poverty. Wealth, they say is most important whether one is leading a material life or a spiritual one.

Sometimes fate forces one to lead a life of poverty and misery and sometimes it is one's own view about money that deprives one of a good comfortable life. There are people who might try any worship but they fail to please the divine powers that rule over wealth.

Permanent prosperity is possible even if one's planets suggest otherwise. But for that one needs to have determination and faith to try Sadhanas. Wealth does not mean only money but also house, food, fame and all comforts. If the Goddess Lakshmi is appeased through powerful rituals She is compelled to grace the house of the Sadhak and bless him with all comforts in life.

Even the great Rishi Vishwamitra once had to face utter poverty but through a powerful Lakshmi Sadhana he went on to become the most prosperous Rishi so much so that kings used to come to him in time of need to seek monetary help.

Bhagwatpaad Shankaracharya has praised the following Lakshmi Sadhana sky high and he made all his householder disciples accomplish the ritual in order to make them well off.

This is the Dhanvarshini Lakshmi Sadhana a ritual of Dhanvarshini, one of the most benevolent forms of Goddess Lakshmi, who literally makes wealth rain in one's home.

On any Wednesday get up early in the morning at 4 am and have a bath. Wear fresh clothes. Sit facing East on a yellow mat. First of all chant four rounds of Guru Mantra.

Cover a wooden seat with white cloth and on it place a steel plate. On it inscribe Jha with vermillion. Then take a **Lakshmi Yantra** and bathe it with water. Place it in the plate and offer rice grains, vermillion and flowers. Light a ghee lamp and incense.

Then take water in the right palm and speaking your name and surname pray to Goddess Lakshmi for success in the Sadhana.

Then chant the following Mantra.

**BRAAHMEEM CHA VEISHNNAVEEM  
BHADRAAM SHADBUJAAM CHA  
CHATURMUKHEEM. TRINETRAAM  
KHADAG TRISHOOL PADAM CHAKRA  
GADAA DHARAAM. PEETAAMBAR  
DHARAAM NAANAALANKAAR  
BHOOSHITAAM. TEHAH PUNJ DHAREEM  
SHRESHTTHAAM DHYAAYED BAAL  
KUMAAREEKAAM.**

Next with a **Dhanaakshi rosary** chant 11 rounds of the following Mantra.

**OM SHREEM HREEM KLEEM  
DHANVARSHINEE LAKSHMEER-  
AAGACHH-AAGACHH MAM GRIHE  
TISHTH TISHTH SWAAHAA.**

After Mantra chanting offer rice grains on the Yantra. Also offer flowers. Also chant one round of Guru Mantra once again. Let the Sadhana articles remain in place of worship for one month and then drop them in a river or pond. If tried with devotion this Sadhana simply cannot fail and is a real boon for everyone today.

Sadhana Articles - 390/-

# गुरुद्वारा जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्धि चैतन्य दिव्य भूमि  
पर ये विव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों  
के लिए यह योजना प्रारंभ हुई  
है। इसके अन्तर्गत विशेष  
दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम'  
में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में  
ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान  
के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,  
जो कि उस दिन शाम 6 से 8  
बजे के बीच सम्पन्न होती हैं।  
यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो  
उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि  
का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 09-01-09

**भगवान शिव का नाम वैद्यनाथ भी है। भगवान शिव के द्वादश ज्योतिलिंग हैं, जिसमें से वैद्यनाथ धाम एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। एक बार रावण की घोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसको एक शिवलिंग प्रदान किया था। दैव-कारणवश वह उस शिवलिंग को बिहार के एक क्षेत्र से आगे लंका तक ले न जा सका, और इस तरह वहाँ भूमि में धस गया और वह स्थान वैद्यनाथ धाम के नाम से विख्यात है। आज भी वैद्यनाथ धाम में अनेक रोगी नित्य दूर-दूर से जल लाकर उस पर चढ़ाकर रोगमुक्त होने की कामना करते हैं।**

यह भगवान शिव के वैद्यनाथ स्वरूप की ही साधना है, जिसे साधक स्वयं अपने अथवा किसी स्वजन के लिए सम्पन्न कर सकता है। भगवान वैद्यनाथ की कृपा से व्यक्ति के रोगों का शमन होता है, और काया स्वास्थ्य-लाभ को प्राप्त होती है। शरीर की पीड़ा, रोग एवं दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए यह कायाकल्प प्रयोग है, जिससे शरीर हष्ट-पुष्ट व सुदृढ़ बन जाता है।

शनिवार, 10-01-09

शत्रुनाशक  
छिन्नमस्ता प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में शत्रुओं से परेशान रहता ही है, चाहे वे बाह्य शत्रु हों या काम, क्रोधादि आन्तरिक, वे हमेशा ही उसे पीड़ित करते ही रहते हैं और उसकी उन्नति में बाधाएं उत्पन्न करते ही रहते हैं। अधिकतर ऐसा होता है, कि व्यक्ति चाह कर भी उनके चुंगल से नहीं निकल पाता। यदि आपके शत्रु भी आप पर हावी हो रहे हों, तो आप महाविद्याछिन्नमस्ता प्रयोग करें। यह शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करती है। उनका नामोनिशान नहीं रहता है। आप इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें। इसकी प्रचण्डता को अपने जीवन में उतार कर उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

रविवार, 11-01-09

कार्य-साधना सिद्धि-प्रयोग

मंत्र-तंत्र और यंत्र के इस विशाल समुद्र में अवगाहन करने का प्रयोग सिद्धि ही होता है। यह सिद्धि किसी को शीघ्र तथा किसी को बहुत अधिक प्रयास के बाद मिल पाती है, और जिनको बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलती, वे साधनाओं को भ्रम जाल ही मान लेते हैं, परन्तु यह सत्य नहीं है। यदि किसी को मंजिल नहीं मिली तो इसका यह अर्थ नहीं है, कि मंजिल है ही नहीं। हां यह अवश्य सत्य है, कि मंजिल तक का रास्ता लम्बा था और वहां तक पहुंचते-पहुंचते व्यक्ति निराश हो गया, अथवा यह भी हो सकता है, कि उसे सही रास्ते का जान नहीं हो या फिर जो रास्ता मंजिल तक जाता हो, वह किसी कारण बंद पड़ा हो। मनुष्य के मस्तिष्क-तन्तुओं में स्वयं ही विकारों के फलतः कई ऐसी ग्रंथियां पड़ जाती हैं, जो साधनाओं में सिद्धि-मार्ग को अवरुद्ध कर देती हैं। इस प्रयोग द्वारा ऐसी ग्रंथियां के खुलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है और इस प्रयोग को कर, साधक को शीघ्र ही साधनाओं में सफलता अनुभूत होने लगती है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरंदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

### गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें, और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उपन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

**योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 09-10-11 जनवरी 2009**

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क  $300 \times 5 = \text{Rs. } 1500/-$  जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

\* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सकलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधन में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।

\* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य द्वेतु जो दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेना है, क्योंकि वह सकलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है ...

\* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अधिष्ठक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में संयुक्त बंजे प्रदान की जाएगी।

**शक्तिपात्र युक्त दीक्षा**

### महाकाली महाविद्या

#### दीक्षा

यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें, विघटनकारी तत्व आपके जीवन की शांति, सौहार्द भंग करते ही रहते हैं। एक दुष्ट प्रवृत्ति वाले व्यक्ति की अपेक्षा एक सरल और शांत प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के लिए

अपमान, तिरस्कार के द्वार खुले ही रहते हैं। आज ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है जिसका कोई शत्रु न हो ... और शत्रु का तात्पर्य किसी मानव जीवन की शत्रुता से ही नहीं, वरन् रोग, शोक, व्याधि, पीड़ा भी मनुष्य के शत्रु ही कहे जाते हैं जिनसे व्यक्ति हर क्षण त्रस्त रहता है... और उनसे छुटकारा पाने के लिए टोने टोटके आदि के चक्कर में फँसकर अपने समय और धन दोनों का ही व्यय करता है परन्तु फिर भी शत्रुओं से छुटकारा नहीं मिल पाता।

महाकाली दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति शत्रुओं को निस्तेज एवं परास्त करने में सक्षम हो जाता है, चाहे वे शत्रु आभ्यान्तरिक हों या बाहरी, इस दीक्षा के द्वारा उन पर विजय प्राप्त कर लेना है, क्योंकि मात्र महाकाली ही वे शक्ति स्वरूपा हैं, जो शत्रुओं का संहार कर, अपने भक्तों को रक्षा कवच प्रदान करती हैं।

# सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका

यदि जीवन में सौन्दर्य न हो, हास्य न हो, उमंग, आह्लाद, प्रसन्नता न हो, तो जीवन बोझिल, नीरस और शुष्क हो जाएगा। ऐसे जीवन को दिन-प्रतिदिन करके काटा जा सकता है, जिया नहीं जा सकता। यदि आपके जीवन में सौन्दर्य का समावेश हो जाए जो सौभाग्यदायक हो, लक्ष्मी-प्रदायक हो और जीवन में पूर्णता, दीवान, स्वास्थ्य एवं उच्छ्रिति प्रदान करने ने सहायक हो, तो क्या आप उसे स्वीकार नहीं करेंगे? और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं इस दिव्य मुद्रिका के रूप में, जिसे आपको पूजा-स्थान में स्वना है 'सवा महीने' और फिर इसकी तेजस्विता को प्राप्त करने के पश्चात् दान में दे देना है।

**साधना-विधान :-** किसी श्री शुक्ल पक्ष के शुक्रवार अथवा चतुर्वेदी के दिन साधक गुलाबी वस्त्र धारण कर, लाल रंग के वस्त्र पर कुंकुम से क्रीं लिख कर उस पर सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका स्थापित करें। मुद्रिका का पूजन केशार, अक्षत उंवं पुष्प से करें। इसके पश्चात् साधक किसी श्री माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र-जप करें।

## मंत्र

॥ॐ क्रीं कृष्णाय सौन्दर्याय क्रीं ऊँ नमः ॥

मंत्र-जप समाप्त होने पर यंत्र को पूरे शरीर से रप्ता करा लें। पांच दिन तक नित्य मंत्र-जप कर, इस मुद्रिका की तेजस्विता प्राप्त करें। सवा माह पश्चात् इसे दान कर दें।

## जीवन का स्वर्तश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

### क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका' 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें', आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

**सम्पर्क :-** अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031, (राजस्थान)**

**फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010**

४५ 'दिसम्बर' 2008 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '84' ५५

नववर्ष 3-4 जनवरी 2009

## शत्रिपात युक्त अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा

एवं साधना शिविर, दिल्ली

शिविर स्थल : आरोग्याधाम, गुजरात अपार्टमेंट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34,  
फोन: 011-27352248, 27029044-45  
♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦

10-11 जनवरी 2009

## सूर्य संक्रान्ति विष्णु-बृंसिंह साधना

शिविर, तिरोड़ा

शिविर स्थल : शहीद मिश्रा जूनियर कॉलेज व उत्तर बुनियादी प्राथमिक स्कूल, तिरोड़ा, जि. गांदीवा (महा.)  
आयोजक: तिरोड़ा: भूपेन्द्रसिंह बैस - 094234-24285 ○ शुक्राचार्य ठाकरे - 094236-06893 ○ श्रीकृष्ण मारबते - 094232-04031 ○ अशोक रीनाईल - 094230-90507 ○ झेड. डी. पटले - 093268-04317 ○ दालसिंग भगत - 094231-13497 ○ भुवनेश्वर भुते - 093700-21590 ○ विजय असारी - 099214-19192 ○ अशोक मिश्रा ○ रमेश आगारो - 093724-91734 ○ चंदुलाल चौधरी ○ खेमेन्द्र चौधरी ○ हिमेन्द्र रहांगडाले ○ संजय कुसुम्बे ○ ठमेन्द्रसिंह चौहान ○ मंगल सिंह चौहान ○ रमनसिंह बैस ○ राघवेन्द्र सिंह बैस (बाबा) ○ सुकदेव घरजारे ○ साकुरे साहेब ○ नामदेव मदनकर ○ निलकंठ तुमसरे ○ विजय दुधपचारे ○ झलेन्द्र सिंह चौहान ○ ईश्वरी पारथी - 099237-40577 ○ बकीराम लिल्हारे - 093726-11831 ○ तेजपाल सिंह सेंगर ○ मनोहर सूर्यवंशी ○ बालु रहांगडाले ○ गांदिया: चंदनलाल ठाकुर - 097691-46130 ○ रविन्द्र भोंगडे - 098229-49458 ○ के.एन.मोहाडीकर - 094228-34716 ○ हेमराज चिखलोडे ○ कमलाकर चौरागडे - 094061-17272 ○ आर. टी. पटले ○ संदीप मानकर ○ डॉ. धुवारे ○ प्रशांत डोये - 092704-59319 ○ संतोष गौर ○ शरद ठाकुर ○ गोरेगाव: संतोष बघेले ○ नागपुर: राजेन्द्र सिंह सेंगर - 098230-19750 ○ छत्रपाल सिंह गौर - 093731-18985 ○ किशोर सिंह बैस - 094233-59000 ○ राहुल वाघमारे - 094221-42539 ○ मधुकर कुकडे - 094228-08433 ○ श्रीमती प्रतिभा मसराम - 093731-26883 ○ तुषार म्हरसकोल्हे ○ देवचंद पटेल ○ दिंगबर निनावे ○ कन्हान: भाऊराव ठाकरे - 093728-40421 ○ रामराव करारी - 093714-88900 ○ सुरेश गुरव ○ तुमसर: श्रीनिवास मेरफुलवार - 094228-30697 ○ विनय तिवारी ○ डॉ. बाबुलाल पारथी - 094233-71260 ○ मधुकर रहांगडाले ○ मुन्ना फुंडे - 093262-

97981 ○ भंडारा: प्रशांत परसोडकर - 093727-62957 ○ कमलाकर साठवणे - 094236-05631 ○ मनोज बोलोकर - 099601-44833 ○ देवेन्द्र काटेखाये ○ अनंत पाहांदुरकर ○ श्रीमती सरोज - 099704-46506 ○ गोब्रवाही: बंकुभाई खोब्रणडे - 099222-78882 ○ बैराणी ठाकरे ○ देवेन्द्र अवथरे ○ आमगांव: बैस गुरुजी ○ जयंत पटेल ○ सालेकसा: सुरेश जनबंधु - 06180-244030 ○ गोपीनंद शेंडे - 099234-86530 ○ विनोद रोकडे ○ मोरगाव अर्जुनी: पलीराम भुवनेश्वर ○ देवरी: सोमवंशी जी ○ श्रीमती वैद्यबाई ○ यवतमाल: शिवचरण राउत - 094229-21521 ○ श्रीकांत चौधरी - 098227-28916 ○ दीपक येंडे - 098500-15587 ○ चंद्रपूर: वतन कोकास - 094221-14621 ○ राजेन्द्र वैद्य ○ सुभाष सिंह गौर ○ राजु नागरकर ○ मोहन पोहनकर ○ घुघ्युस: वासुदेव ठाकरे - 094209-62749 ○ कंचन राठौर ○ लाखांदुर (मोहरना): नारायण राउत - 093254-16532 ○ सेलू: जितेश देवतारे - 093700-76528 ○ वर्धा: गजानन ठाकरे - 098602-69231 ○ प्रदीप पाठक ○ अकोला: राजेश सोनुने - 098230-33719 ○ भास्कर कापडे ○ ज्ञानेश्वर टापरे ○ अमरावती: सतीश भिवगडे - 093701-56631 ○ अतुल भातुलकर ○ सुबोध जायस्वाल ○ गडचिरोली: अशोक तडके - 094221-50848 ○ प्रदीप चौधरी ○ दीपक रामने ○ हर्षवर्धन ○ ब्रह्मपुरी: सुरेश मिसाल - 099236-24709 ○ रामकृष्ण विठोले ○ बंडु बांगरे ○ आरमोरी: दानेश्वर गुरुजी ○ कोटकर गुरुजी ○ बल्लारशा: दुर्गा प्रसाद शुक्ला ○ माधोराव सोनवने ○ वरोरा: डॉ. वर्धे ○ बालाघाट: प्रकाश बनोटे ○ दिलीप कनोजिया ○ नरेन्द्र बोंद्रे ○ लक्ष्मण राव लिल्हारे ○ भानेगाव: सुरेश रावते ○ ठाकरे जी ○ चिमूर: विजय सोनुने - 099210-65220 ○  
♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦

18 जनवरी 2009

## ऋषि-सिंहि साधना शिविर, मुम्बई

शिविर स्थल: रेल्वे टेलफेयर हॉल, मध्य रेल्वे वर्कशॉप, अम्बेडकर रोड, VIP शोखम के सामने, परेल (वेस्ट) मुम्बई (महा.)  
आयोजक: दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○ तुलसी महनो - 099671-63865 ○ जयश्री बेन ○ पियुष बेन एवं मानवेन्द्र - 093217-88314 ○ सक्सेना परिवार - 098600-84969 ○ गोपाल पुष्पा पाण्डे - 093226-74231 ○ देवेन्द्र एवं अल्का पंचाल ○ योगेश मिश्रा - 098696-38717 ○ राकेश तिवारी - 098203-44819 ○ बुद्धीराम पाण्डे - 098190-00414 ○ अमरजीत - 099676-73807 ○ लोबो - 098207-28386 ○ राहुल पाण्डे - 098925-56363 ○ नागसेन - 099306-82545 ○ संतलाल पाल - 092210-70322 ○ आसकरन परिवार - 099600-58894 ○ श्रीराम - 093226-

01979 ○ अनिल कुमारे - 098199-27898 ○ अशोक सोनी - 092187-59921 ○ अजय शर्मा - 098164-32343 ○ भगवती -  
 093226-09995 ○ द्विवेदी जी - 098211-81782 ○ मनीर - 092246-094182-32602 ○ युमारवाँ: एडवोकेट ज्ञान चन्द रतन - 094180-  
 28895 ○ सूर्यकांत गुप्ता - 098693-00041 ○ अजय - 099204-90783 ○ सोहन लाल - 094186-36951 ○ जगरनाथ नड्डा - 094182-  
 05717 ○ राहुल पाण्डेय - 099875-29516 ○ राजकुमार शर्मा - 098166-11050 ○ के.डी.शर्मा - 094180-65655 ○ बंसीराम ठाकुर  
 098194-65823 ○ भारद्वाज भाई ○ श्रेयस आर्ट - 099201-01907-242544 ○ कांगड़ा: ओम प्रकाश शर्मा - 094182-  
 16856 ○ कवटे परिवार - 092241-47433 ○ जगदीश पारेख - 098228-52451 ○ मूलचंद भाई - 094222-79452 ○ नटभाई - 50674 ○ संजीव कुमार - 098161-17888 ○ पालमपुर:  
 093200-90040 ○ अनिल भंगेरा - 098202-77411 ○ वकिल राय - आर.एस.मिन्हास - 094181-61585 ○ बिलासपुर: शेखर  
 093222-96055 ○ गंगा बेन एवं धनराज - 097631-अग्रवाल - 094180-00234 ○ नूरपुर: पीताम्बर - 098164-  
 94469 ○ दयालकर बेन - 098694-78653 ○ सुशीला बेन - 098198-01186 ○ नरेश शर्मा - 094181-52967 ○  
 53393 ○ नीलम बेन - 099306-64579 ○ दीपक तिवारी - 098699-  
 94455 ○ धनाजी - 092235-15135 ○ विश्वकर्मा - 098201-  
 69998 ○ सुजीत - 092261-13660 ○ वृद्धावन - 098190-  
 53360 ○ चंद्रकांत पार्टे - 092243-22866 ○ गुरमीत - 098196-  
 97877 ○ पांडा भाई - 093220-47593 ○ हर्ष - 098203-  
 69427 ○ वसंत पुरबिया - 098697-03251 ○ जितेन्द्र - 098600-  
 63498 ○ बिलास ○ आनन्द - 098216-73503 ○ यशवंत - 098698-  
 02170 ○ पाठक परिवार - 094233-69984 ○ आर.एस.उपाध्याय  
 - 099696-75905 ○ शैलेश ○ राजकुमार मिश्रा - 093205-  
 84850 ○ अशोक - 098692-34397 ○ दिनेश - 93231-  
 39860 ○ करिसा बेन.○ कलपेश तिवारी - 093224-37701 ○  
 ◊◊ ◊◊ ◊ ◊◊ ◊◊◊ ◊◊ ◊ ◊◊ ◊◊◊

24-25 जनवरी 2009

तारा शक्ति देवी साधना शिविर, शिमला

**शिविर स्थल :** श्री राम मन्दिर हॉल, राम बाजार,  
गंजदीक बस स्टैण्ड, शिमला (हि.प्र.)

**आयोजक: शिमला:** टी. आर. कौडल - 0177-2623318 ○ चमन  
लाल कौडल - 094180-40507 ○ गोपी राम शर्मा - 094180-  
30917 ○ एच.आर.जसपाल - 094181-41941 ○ दुनीचन्द -  
094184-00059 ○ सुबेग सिंह - 0177-2831025 ○ सुन्दर सिंह -  
094180-94118 ○ कुलदीप कुमार - 098177-99843 ○ कुलदीप  
गुलेरिया - 0177-2835735/94188-86181 ○ अशोक शर्मा - 094181-  
20691 ○ कुलदीप भारद्वाज - 0177-2622574 ○ टी. एस. चौहान  
- 094180-96013 ○ दयाराम - 098172-99226 ○ हेमराज - 098171-  
68794 ○ नितिन धांटा - 094184-70201 ○ उमा देवी - 0177-  
2627277 ○ सुधीर कुमार फुल - 0177-2621980 ○ मुनीलाल  
भारद्वाज - 098171-47976 ○ वन्दना नाग - 094180-  
53861 ○ संजीत कुमार नाग - 098174-98779 ○ ठियोग: सुन्दर  
शर्मा - 094180-21914 ○ श्रीमती वेदप्रभा मेहता - 01783-  
237021 ○ घणाहटी: सुरेन्द्र कंवर - 094180-25976 ○ रत्न ठाकुर

लक्ष्मी दोष निवारण साधना शिविर, पुणे  
शिविर स्थल : बालकृष्ण मंगल कार्यालय, डांगे चौक,  
थेरगांव, चिंचवड पुणे (महाराष्ट्र)

आयोजक: हरिशचंद्र कदम - 099226-40064 ○ सुरचंद्र कुदले  
- 098201-57161 ○ विलास पवार (मेढा) - 090495-75246  
○ अशोक भागवत - 093724-65621 ○ रविन्द्र कुमार - 093710-  
20581 ○ दत्तात्रय कविस्कर - 099214-07825 ○ मालेश गावडे  
- 098224-78747 ○ बाळासाहेब बालवडकर - 093724-75449  
○ दुष्यंत नैसर्गी - 093731-40116 ○ धनंजय मोहन धोलप -  
093724-49215 ○ वैभव कराळे - 098230-41226 ○ संतोष सुपेकर  
- 098909-82411 ○ रानवडे - 098816-41639 ○ आशुतोष मालवीय  
- 098810-90230 ○ उमेश घुमे - 099226-79584 ○ सुरेश चब्बाण  
○ विनोद कांबळे - 098506-03711 ○ मनोज सस्ते - 098220-  
56129 ○ लक्ष्मण डोंगरे - 098904-36907 ○ एकनाथ कदम  
पाचगणी - 02168-211617 ○ सुभाष पंचबुद्धे - 099603-54484  
○ शिवाजी शिंगटे - 092709-56658 ○ मारुती देवकर - 098229-  
78382 ○ सनेसर ○ बाळासाहेब पाटील - 098810-68206  
○ रवि पाटील - 098228-21092 ○ शिवाजी देवकर - 098229-  
78282 ○ विलास पवार - 098220-55865 ○ जयंत पाटील -  
093250-12830 ○ सचिन कदम - 098220-02578 ○ विजय सुवर्णा  
- 092261-65939 ○ बाबा जरे - 098507-21877 ○ शेलाराम  
चौधरी - 098901-33375 ○ प्रवीण भाडेकर - 098609-09543 ○ श्री  
गेणु बावळेकर - 094206-29481 ○ सुनिल राऊत - 099234-  
50493 ○ बसवराज कोळी - 099709-08634 ○ आबासाहेब  
शिनगारे ○ राधेश्याम सिन्हा - 098505-34375 ○ ढोरे - 098230-  
17850 ○ अनिल रोकडे - 092262-96152 ○ दिपक उंबरकर -  
098814-90385 ○ विनोद पवार - 098814-70271 ○ पांचारीया  
○ राजु साठे - 098814-47100 ○ शामराय - 098227-96385 ○

ਕੁ ਕਹੁੰ ਪੌਥਿਨ ਬਾਬੀ, ਮੈਂ ਕਹੁੰ ਆਤਮਿਕਨ ਕੌਖੀ  
ਜਾਨ ਰੂਪੀ ਗੁਣ, ਕਿਧੁ ਰੂਪੀ ਯਮੁਨਾ, ਬਾਣੀ ਰੂਪੀ ਸਰਸ਼ਵੀ ਕਾ ਮੇਲ ਹੈ -

ਦਾਦਗੁਰਦੇਵ ਕੇ ਅਮ੃ਤ ਵਚਨੋਂ ਨੇ, ਜੋ ਸਿੰਚਨ ਕਰ ਦੇਤੇ ਹੈ ਸਾਧਕਾਂ ਕੇ ਹੁਦਾਇ ਔਰ ਜਨ ਕੋ।

ਜਿਲ ਵਾਣੀ ਮੈਂ ਹੈ -

ਬ੍ਰਹਮਾ ਕਾ ਜਾਨ, ਸ਼ਿਵ ਕਾ ਓੱਜ ਔਰ  
ਵਿ਷ੁ ਕਾ ਤੇਜ ਸਮਾਹਿਤ ਹੈ -

ਏਸੇ ਅਮ੃ਤ ਪ੍ਰਵਚਨ ਸੁਨਿਧਿ ਬਾਰ-ਬਾਰ -

### ਆਂਡਿਯੋ ਕੈਨੈਟ / ਚੀ.ਡੀ

- ◆ ਗੁਰੂ ਸੁਖੀ ਸਤੋਤ੍ਰ
- ◆ ਭਜਨ ਕੁਛ ਕਰ ਲੇ
- ◆ ਨਾਰਾਯਣ ਨਾਰਾਯਣ
- ◆ ਸਦਗੁਰਦੇਵ
- ◆ ਭਜਨ ਸਾਗਰ
- ◆ ਤੂ ਵਧਾਪਕ ਢਾਲੀ ਢਾਲੀ ਹੈ
- ◆ ਧਿਆਨ ਯੋਗ
- ◆ ਗੁਰੂ ਹਮਾਰੀ ਜਾਤਿ
- ◆ ਅਥ ਤੋ ਜਾਗ
- ◆ ਕੁਵੇਰ ਪਤਿ ਸ਼ਿਵ ਸ਼ਕਤਿ ਸਾਧਨਾ
- ◆ ਪਾਰਦੇਵਰ ਸ਼ਿਵਲਿੰਗ ਪ੍ਰੂਜਨ
- ◆ ਸ਼ਿਵਸੂਤ੍ਰ
- ◆ ਮਹਾਸ਼ਿਵਰਾਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰੂਜਨ
- ◆ ਘੋਡ਼ਸ਼ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰੂਜਨ
- ◆ ਵਿਸ਼ੇ਷ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰੂਜਨ
- ◆ ਗੁਰੂ ਵਾਣੀ ਭਾਗ ੧-੨-੩
- ◆ ਸਿਦ्धਾਤਮ ਮਹਾਤਮਾ
- ◆ ਮੰਜੁਲ ਮਹੋਤਸਵ-੯੮ ਭਾਗ ੧-੫
- ◆ ਮਹਾਤਮ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਿਰ-੯੫ ਭਾਗ ੧-੬
- ◆ ਮਹਾਸਰਸ਼ਵੀ ਸ਼ਵਰੂਪ ਸਾਧਨਾ
- ◆ ਏਂ ਬੀਜ ਸਾਧਨਾ
- ◆ ਬਸਨਤ ਪੰਚਮੀ ਸਾਧਨਾ

### ਕੀਡਿਯੋ ਚੀ.ਡੀ

- ◆ ਏਕਾਦਸ਼ ਰੁਦ੍ਰ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਿਰ  
ਵਾਰਾਣਸੀ-੯੮ ਭਾਗ ੧-੬
- ◆ ਮਹਾਸ਼ਿਵਰਾਤ੍ਰਿ ਸ਼ਿਵਿਰ-੯੭ ਭਾਗ ੧-੩
- ◆ ਨਿਖਿਲੇਸ਼ਵਰਮ ਮਹੋਤਸਵ  
ਇਲਾਹਾਬਾਦ-੯੩ ਭਾਗ ੧-੩
- ◆ ਗੁਰੂ ਪੂਰਿਮਾ  
ਹੈਦਰਾਬਾਦ-੯੭ ਭਾਗ ੧-੩
- ◆ ਨਿਖਿਲੇਸ਼ਵਰਮ ਮਹੋਤਸਵ  
ਗੋਧੁਰ-੯੨, ਭਾਗ ੧-੩
- ◆ ਰਾਜਧਾਨੀ ਵੀਕਿਅਨ  
ਵਿਲੀ-੯੭, ਭਾਗ ੧-੬
- ◆ ਨਿਖਿਲੇਸ਼ਵਰਮ ਮਹੋਤਸਵ  
ਜੋਧਪੁਰ-੯੨, ਭਾਗ ੧-੩
- ◆ ਸਿਦ्धਾਤਮ
- ◆ ਸਿਦ्धਾਤਮ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤੰਤਰ
- ◆ ਗੁਰੂ ਪਾਦੁਕਾ ਪ੍ਰੂਜਨ



ਨ੍ਯੌਛਾਵਰ ਪ੍ਰਤਿ ਆਂਡਿਯੋ ਕੈਨੈਟ - 30/-

ਨ੍ਯੌਛਾਵਰ ਪ੍ਰਤਿ ਆਂਡਿਯੋ ਚੀ.ਡੀ. - 40/-

ਨ੍ਯੌਛਾਵਰ ਪ੍ਰਤਿ ਵੀਡਿਯੋ ਚੀ.ਡੀ. - 100/-



ਮੰਤ्र-ਤੰਤ੍ਰ-ਯੋਗ ਵਿਜਾਨ, ਡਾਂ. ਸ਼੍ਰੀਮਾਲੀ ਮਾਰਗ, ਹਾਈਕੋਰਟ, ਕਾਲੋਨੀ, ਜੋਧਪੁਰ (ਰਾਜ.)

ਫੋਨ : 0291-2432209, ਫੈਕਸ : 0291-2432010



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

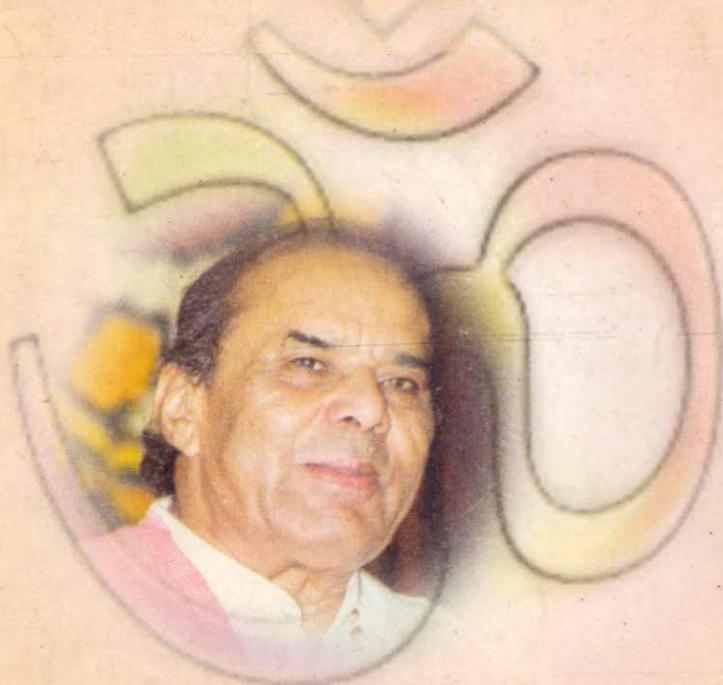
Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]



## माह : जनवरी 2009 में दीक्षा के लिए निर्धारित विषेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।  
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के  
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)  
दिनांक  
09-10-11 जनवरी

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)  
दिनांक  
29-30-31 जनवरी

वर्ष - 28

अंक - 12

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342031 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010  
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700